"विशिष्ट सिद्ध दुर्लभ प्रयोग"

अनुक्रमणिका

ॐ

दिव्य चेतना संदेश

घटाटोप अन्धकार के बीच समाज में कुछ तेजस्वी शिष्य सूर्य बनकर चमक सकें, आध्यात्म की रश्मियो से अज्ञान का तिमिर भेद सकें, यज्ञ और साधना के माध्यम से जीवन को सार्थकता और पूर्णता दे सके ऐसी मधुर कामना करता हूँ, इन शुभ क्षणों मे यही मेरा आशीष हैं।

मेरा शिष्य समाज का पाथेय बनकर युगान्तरकारी हो, स्वस्थ समाज की दृढ आधार शिला हो, प्रेम, समर्पण, श्रद्धा की त्रिवेणी में नित्य अवगाहन करता हुआ गुरु के प्राणों से जुड कर जो हर पल गुरु ज्ञान समाहित करता है वही ऐसा स्वप्न साकार कर सकता है, वही स्वयं का और समाज का कल्याण कर सकता है

सिद्धाश्रम साधक परिवार बम्बई विराट यज्ञ, साधना शिबिर जैसे पुनीत कार्य में पूर्ण सफल हो ऐसी शुभकामना करता हूँ ।

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परम पूज्य गुरुदेव)

भूमिका

परमपूज्य गुरुदेव के साथ रहकर विभिन्न साधना शिविरों मे भाग लेते हुए हम शिष्योंने बहुत कुछ प्राप्त किया। सिद्धाश्रम साधक परिवार बम्बई की ओर से इस पुनीत ज्ञान गंगा के प्रवाह में कई योगदान हुए। पूरे विश्व में बढ़ते साधकों की अत्यधिक जिज्ञासा, प्रेरणा एवं प्रेमपूर्ण आग्रह को ध्यान में रख कर इस पुस्तक "विशिष्ट सिद्ध दुर्लभ प्रयोग" का संकलन किया गया जिसमें गुरुपूजन एवं गुरु साधना के अत्यन्त दुर्लभ और गोपनीय विभिन्न प्रयोगों को भी स्पष्ट किया गया।

भगवान गणपति: शिव, भैरव, हनुमान, माँ जगदम्बा, दुर्गा एवं दश महाविद्या - काली, तारा, षोडसी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुरभैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी एवं कमला के सम्पूर्ण शास्त्रोक्त साधना क्रमों को भी इस पुस्तक में स्पष्ट किया गया है।

श्री सूक्त एवं, वेदमाता गायत्री साधना को भी सर्व सामान्य के लाभ के लिए प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में साधना पथ के सभी आयामों को संक्षेप में स्पष्ट किया गया है। यह पुस्तक सम्पूर्ण रूपेण शास्त्रोक्त पद्धति, गुरुपरम्परा एवं साधना के व्यक्तिगत और सामूहिक अनुभवों पर आश्रित है।

साधकों को एक ही स्थान पर पूजा अर्चना पद्धति, साधनाक्रम, महत्वपूर्ण गुप्त साधना तथा मंत्र जप विधान, साधनाकाल में दोषादि का शमन सम्पूर्ण गुरुसाधना, गणपति, शिव, भैरव,हनुमान, दशमहाविद्या एवं अन्य साधनाओं को एकत्रित करकें प्रदान करने का मेरा प्रयास है।

सभी साधकों को मेरे इस प्रयास से लाभ हो ऐसी मैं परमपूज्य गुरुदेव एवं भगवती जगदम्बा से प्रार्थना और आशीर्वाद याचना करता हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे जिन गुरुभाईयो एवं व्यक्तियों का सहयोग है मैं उन सब के प्रति पूर्ण हृदय से आभारी हूँ ।

गुरु पूर्णिमा दिवस
१४ जुलाई, १९९२
बम्बई

सप्रेम
रणजीत चौबे
सिद्धाश्रम साधक परिवार, ८५ रामकुंज,
आनंदनगर, भांडुप, बम्बई ४०० ०७८

प्रवेश

"विशिष्ट सिद्ध दुर्लभ प्रयोग" पुस्तक का संकलन साक्षात परब्रह्म स्वरूप गुरु एवं जगज्जननी कृपावल्लभा कल्याणमयी दशमहाविद्या मां दुर्गा की कृपा का प्रसाद है। जीवन में मनुष्यत्व से देवत्व को प्राप्त करते हुए पूर्णत्व प्राप्ति का लक्ष्य बिना गुरु के सहज नहीं है। परम कृपालु गुरु की दृष्टि हर क्षण अबोध बालकवत शिष्य पर उसके कल्याण और उत्कर्ष हेतु रहती है। धीरे-धीरे गुरू शिष्य को साधना पथ पर अग्रसर करते हुए, उसे अपनी शक्तिपुंज युक्त आशीर्वाद रुपी उंगली पकड़ाते हुए, विभिन्न प्रकार के अनुभवों का आस्वादन कराते हुए, कभी भ्रम और कभी सत्य का बोध कराते हुए पूर्णत्व की लक्ष्य प्राप्ति की ओर ले जाते हैं। अन्त में शिष्य स्वयं के सफल प्रयास और गुरु के पूर्ण प्रेम और आशिर्वाद से युक्त हो कर ब्रह्मत्व प्राप्त कर जीवन के चरम लक्ष्य पूर्णत्व को प्राप्त कर लेता है।

सभी प्रकार के आध्यात्मिक मार्गों में गुरु को प्रधानता दी गयी है। तन्त्र मार्ग में उन्हें साक्षात शिव ही माना गया है और स्पष्ट किया है --

"गुरुमूलं जगत सर्वं गुरुमूलं परं तपः।
गुरोः प्रसाद मात्रेण मोक्षमाप्नोति सद्वशी॥
गुरुरेकः शिवः साक्षात गुरु सर्वार्थ साधकः।
गुरुरेव परं तत्वं सर्वं गुरुमयं जगत॥

अर्थात जगत के मूल परमतत्व शिव ही साक्षात गुरु है। गुरु की साधना के द्वारा, उनकी प्रसन्नता से जीवन में सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रथम गुरु साधना के अत्यंत गोपनीय, पूर्ण शक्तिमान एवं चैतन्य प्रयोगों को सम्मिलित किया गया है, जिसके द्वारा जीवन के पूर्व जन्य के दोष शमन करते हुए, साधना काल के सभी विघ्नों को दूर करते हुए, जीवन में हर प्रकार से सम्पन्न होते हुए, शरीरस्थ सभी चक्रों को जागृत करते हुए साधक साधना पथ पर निःशंक अग्रसर हो सकता है।

उसके बाद विशिष्ट देवताओं भगवान गणपति, भगवान शिव, श्रीभैरव, श्रीहनुमान के साधना क्रमों को स्पष्ट किया गया है.

सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करने में समर्थ, पूर्णता की प्रतीक तंत्र की अधिष्ठात्रि शक्तियां दश महाविद्या (भगवती काली, तारा, षोडसी त्रिपुर सुन्दरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, घूमावती, बगलामुखी, मातंगी एवं कमला) के क्रम को भी रखा गया है। विशेष प्रभाव के लिए एवं समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने के लिए, सभी प्रकार के तांत्रिक एवं भूत प्रेतादि की बाधाओं को दूर करने के लिए अत्यंत उग्र, प्रभावशाली, दुर्लभ घूमावती माला मंत्र एवं श्री पिताम्बरा बगलामुखी खड्ग माला मंत्र का भी इस पुस्तक मे समावेश हैं। साधना तथा ध्यान में सुविधा के लिए सभी महाविद्याओं के यंत्र, चित्र भी दिए गए हैं।

जहां एक और संपूर्ण साधना, पूजन तथा जप क्रम स्पष्ट किए गए हैं वहीं दूसरी और नवग्रह स्तोत्र, श्री सूक्त, श्री गायत्री साधना एवं हवन तथा आरती आदि को भी संकलित किया गया है।

"विशिष्ट सिद्ध दुर्लभ प्रयोग" वस्तुतः पुस्तक न होकर एक बृहद् साधना शास्त्र है जो "सिद्धाश्रम" के योगियों की कृपा का वरदान है। परमपूज्य गुरुदेव डा. नारायण दत्त श्रीमाली जी की तपस्या से उद्भूत एवं प्राणो से झंकृत होकर पूर्ण वेगवान, चैतन्य तथा क्षमतावान होकर सभी प्रयोग उन की वैखरी वाणी द्वारा प्रस्फुटित हुए और इस पुस्तक के आकार में आकर लोक कल्याण के लिए निहित हो गए।

प्रस्तुत पुस्तक में कहीं कोई त्रुटि हो तो पाठक उसे मेरी कमजोरी समझकर क्षमा करें एवं सूचित करे जिससे अगले होने वाले परिवर्धित संस्करण में सुधार किया जा सके।

मै पुनः मां भगवती तथा श्री गुरु से प्रार्थना करता हूँ और आशीर्वाद याचना करता हूं कि इस पुस्तक में वर्णित प्रयोगों से समाज मे साधना की चेतना फैले और इन प्रयोंगो के माध्यम से मनुष्य जीवन के क्लेश दूर हों तथा लोक कल्याण हो सके।

रणजीत चौबे

परम पूज्य गुरुदेव

पूर्ण ब्रह्म स्वरुप, मंत्र, तंत्र, यंत्र, आयुर्वेद, सम्मोहन, ज्योतिष, सम्पूर्ण परा विद्या तथा चारों वेदों के साक्षात मूर्तिमंत विग्रह परम पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली (परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द) का पृथ्वी पर अवतरण इस युग की महान घटना है। सिद्धाश्रम संस्थापक, संचालक परम पूजनीय भगवद्पाद स्वामी सच्चिदानंदजी के तीन प्रिय शिष्यों में से एक हमारे गुरुदेव पूरे सिद्धाश्रम के प्राणश्चेतना के रुप में आज के दिशाहीन जीवन के संतापों से त्रस्त मानवपीढ़ी को कल्पतरु के रुप में शीतलता प्रदान कर, आनंदित करते हुए उर्ध्वमुखी जीवन देकर ब्रह्म साक्षात्कार कराने के लिए सामान्य गृहस्थ जैसा जीवन जीते हुए एक ज्योति स्तंभ हैं। उनके चेहरे की दिव्यता, आँखों का वात्सल्य, सम्पूर्ण व्यक्तित्व का सम्मोहन, वाणी की ओजस्विता एवं गंभीरता, किसी भी मनुष्य और पशु को भी सहज रुप से अपने में आकर्षित कर लेती है। उनके अभय प्रदायक चरण कमलों में बैठकर उनका स्पर्श पाकर सभी लोग तृप्त, पूर्णत: शांत तथा प्रसन्न हो जाते हैं। भारतीय सभी आध्यात्म विद्याओं में पारंगत, पूर्ण चेतनावान, सामर्थ्यवान शिष्यों के प्रिय प्राण स्वरुप गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी गृहस्थ रुप में रहते हुए भी पूर्ण योगिराज हैं। भारतीय ऋषियों की अथाहज्ञान संपदा की धरोहर के रुप में उनका जीवन सभी जिज्ञासुओं, साधकों और शिष्यों के लिए हर क्षण समर्पित है। उनका कथन है, "मेरे रक्त की एक-एक बूँद शिष्यों के उत्थान के लिए है। मेरे शिष्यों के चेहरे का ओज ही मेरी प्रसन्नता और मेरे जीवन का लक्ष्य है।" समाज में फैले आडंबर, महंतो साधुओं के द्वारा फैलायी गयी भ्रांतिया तथा अधकचरे ज्ञान वालों के द्वारा किया गया हिन्दुत्व का ह्रास यह सब उन्हें अप्रिय है। सामाजिक जिम्मेदारियों से घबड़ाकर जीवन युद्ध में हारे हुए पलायनवादी सन्यासियों के द्वारा कोई भी समाज-कल्याण नहीं हो सकता, यही उनका चिंतन है।

अपने जीवन में गृहस्थ में रहते हुए भी सन्यस्त रहना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। पूर्ण वैभवयुक्त (भौतिक दृष्टि से) जीवन जब ज्ञान की पूर्णता (आध्यात्मयुक्त) से युक्त होता है, तभी अपना, समाज का, देश का तथा विश्व का कल्याण हो सकता है। इसके लिए गृहस्थ में रह कर ही आध्यात्म की ऊँचाईयों को समझना, स्पर्श करना यही गुरुदेव की शिक्षा है।

करीब १३५ पुस्तकों (ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि) के रचयिता समाज शिरोमणि उपाधि से विभूषित, सैकड़ो अंतराष्ट्रीय ज्योतिष एवं सम्मोहन सम्मेलनों के अध्यक्ष पदों से विभूषित पूज्य गुरुदेव का हर क्षण शिष्यों के चयन तथा प्रशिक्षण और उनके तथा समाज के कल्याण में रत है।

गुरुदेव का दिल्ली स्थित निवास -- ३०६, कोहाट एनक्लेव, प्रीतम पुरा है। (फोन : ७१८ २२ ४८)

गुरुदेव के बारे में करोड़ो ग्रंथ भी व्याख्या नही कर सकते तो मैं भला क्या हूँ। मेरी तो सिर्फ यही कामना है कि हे भारतवासी उठो, अपने स्वरुप को पहचानो। अपने बीच सिद्धाश्रम से आए इस महान विभूति के पाद तले बैठो, उनकी ज्ञान गंगा में अवगाहन कर अपने आपको उच्च बनाओ। अपने कुल का, देश का, विश्व का गौरव बढ़ाओ।

मैं परम पूज्य गुरुदेव एवं भगवती जगदम्बा से प्रेमपूर्ण हृदय से आशीर्वाद मांगता हूँ कि वे सभी जीवों पर दया दृष्टि रखें और सबका कल्याण करें।

—रणजीत चौबे

सिद्धाश्रम साधक परिवार

सिद्धाश्रम - सिद्धाश्रम पृथ्वी पर हिमालय स्थित विश्व का सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान केन्द्र हैं, जहाँ आज भी सशरीर हजारों साल की आयु प्राप्त योगी भगवान श्रीकृष्ण, परमहंस स्वामी सच्चिदानंद, शंकराचार्य, भीष्म, विशुद्धानंद, महावतार बाबाजी आदि मानव कल्याण हेतु साधना रत हैं। मानव जीवन के घोरतम अंधकार में, पशुता, राक्षसी वृत्ति के अतिक्रमण काल में एवं नित्य सदा ही यह 'सिद्धाश्रम' सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का चिंतन करता है और समय समय पर पृथ्वीपर वहाँ से गृहस्थ और सन्यासी योगी भेजे जाते हैं, जो मानवमात्र को उचित मार्ग, जीवन की उच्चता, दिव्यता, पूर्णता का बोध कराते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए दिव्य ज्ञान पुंज छोड़ जाते हैं, जिसके सहारे जीवन शांत, आनंदमय, एवं पूर्ण बनता है।

पूज्य गुरुदेव डा. नारायणदत्त श्रीमाली (परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद)–

अनंत श्री विभूषित भारत के उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा द्वारा "समाज शिरोमणि" की उपाधि प्राप्त गुरुदेव भारत भूमि पर सिद्धाश्रम के संस्थापक और संचालक परम हंस स्वामी सच्चिदानंद के शिष्य के रुप में प्रेषित हैं। गुरुदेव के जीवन का लक्ष्य है — भारतीय पूर्वजों की सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञाननिधि को आज के संशयी, दिग्भ्रमित तनावयुक्त पश्चिमी सभ्यता से पूर्णत: प्रभावित युग के समक्ष वैज्ञानिक रुप में प्रस्तुत करके उसका प्रचार प्रसार करना।

पूर्ण सिद्ध, मंत्र-तंत्र-यंत्र के मूर्तमंत स्वरुप गुरुदेव विश्व के सर्वोच्च ज्योतिषी के रुप में प्रसिद्ध हैं। २० साल तक तपस्या रत होने के बाद आज गृहस्थ रुप में गृहस्थों की समस्याओं का समाधान एवं शिष्यों का चयन, प्रशिक्षण करते हुए ज्ञान गंगा को अहर्निश आगे बढ़ा रहे हैं।

"सिद्धाश्रम साधक परिवार"- गुरुदेव से संरक्षण एवं आशीर्वाद प्राप्त "सिद्धाश्रम साधक परिवार" संस्था देश, विदेश में विभिन्न साधना शिविरों, यज्ञों, सम्मेलनो तथा पुस्तकों के माध्यम से भारतीय परा विद्याओं के प्रचार प्रसार में अहर्निश रत है। देश के प्राय: सभी भागों में इसकी शाखाएं है जहाँ करोड़ो शिष्य और साधक हमेशा साधनारत रहते हुए लोक कल्याण हेतु कार्यरत है।

गुरुदेव के द्वारा लिखित करीब १३५ पुस्तकें हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, बंगाली एवं मराठी भाषाओं में उपलब्ध हैं। उनके प्रवचन के आडियो, वीडिओ कैसेट प्राय: हर जगह उपलब्ध है उनके यहाँ से प्रकाशित मासिक 'मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान' पिछले ११ सालों से समाज में चेतना फैला रही है। देश के विभिन्न केन्द्रो में सम्मोहन, मंत्र, तंत्र, यंत्र आदि के सामूहिक तथा व्यक्तिगत प्रशिक्षण केन्द्र भी कार्यरत हैं।

जो लोग भारतीय गूढ़ विद्याओं में रुचि रखते है उन सभी को हमारा आमंत्रण है कि वे इस क्षेत्र में पदार्पण कर अपना, परिवार का, समाज का तथा देश का कल्याण करें और अपने मार्ग को प्रशस्त करें।

साधना सफलता

साधना मे पूर्णता न मिलने के विभिन्न कारणों में पूर्व जन्म, इह जन्म कृत दोष, पाप एवं साधना काल की त्रुटियाँ और अन्य विषयों का अज्ञान प्रमुख है। संक्षेप में साधकों के लाभार्थ साधना सफलता के विषय पर प्रकाश डाला जा रहा है।

१) गुरु-इष्ट-मंत्र में अभेद ज्ञान-

वस्तुत: गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश और साक्षात परब्रह्म कहने वाले शास्त्रों का कथन अमोघ हैं। ब्रह्मा सृजन, विष्णु पालन, तथा महादेव संहार और कल्याण के प्रतीक हैं, यह त्रिगुणात्मकता समर्थ गुरु के माध्यम से शिष्य मे रुपान्तरित होती है। गुरु संस्कार, दीक्षा, शक्ति संचार एवं साधना प्रदान द्वारा शिष्य के दिव्य ब्रह्ममय जीवन का सृजन, पालन, संरक्षण करते हैं और अन्त में जीवन के चरम लक्ष्य शिव - शक्ति समन्वय की स्थिति को प्राप्त करा देते हैं। परब्रह्म स्वरुप होनें के कारण गुरु से भिन्न कोई वस्तु नही होती, तो फिर साधको को साधना विषय में गुरु, इष्ट, मंत्र में अभेद ज्ञान होना अनिवार्य है। यह सफलता का प्रथम सोपान है।

२) मंत्र, मंत्र प्रदाता, यंत्र एवं यंत्रस्थ देवता के प्रति पूर्ण आस्था, श्रद्धा, तन्मयता, समर्पण एवं साधना में अत्यन्त तीव्रता;

३) साधक के मन में पूर्ण उत्साह, धैर्य, और बल वीर्य का होना;

४) गुरु प्रदत्त साधना विषय की पूर्ण जानकारी;

५) साधना काल में इष्ट और गुरु का शरीर में समाहितीकरण, अंतस्थ केन्द्रों का जागरण कुण्डलिनी एवं सहस्त्रार जागरण.

६) काया शोधन-

देह ही साधना का माध्यम है। अत: इसे नेति, धौति, त्राटक न्यौलि, आसन, प्रणायाम आदि क्रियाओं द्वारा पूर्णरूपेण स्वस्थ और प्राण प्रवाह युक्त रखना जिससे मनोमय कोष से हटकर मन प्राणमय कोष में रह सके। साधना सफलता में पंचभूतो पर विजय आवश्यक है।

७) पिण्डब्रह्माण्डवेत्ता योगी-

देहेऽस्मिन् वर्तते मेरु सप्तद्वीपसमन्वित सरित:। सागरा: शैला क्षेत्राणि क्षेत्रपालक:॥
ऋषियो मुनय: सर्वे नक्षत्राणि ग्रहास्तथा। पुण्यतीर्थानि पीठानि वर्तन्ते पीठदेवता॥
सृष्टिसंहारकर्तारौ भ्रमन्तौ शशिभास्करौ। नमोवायुश्च वह्निश्च जल पृथ्वी तथैव च॥
त्रैलोक्ये यानि भूतान तानि सर्वाणि देहत:। मेरु संवेष्ट्य सर्वत्र व्यवहार: प्रवर्तते।

जानाति य: सर्वमिदं स योगी नात्र संशय:॥

इस, शरीर में सात द्वीपों के सहित सुमेरु पर्वत, सरिता, सागर, पर्वत क्षेत्र, क्षेत्रपाल, ऋषि-मुनि और सभी नक्षत्र, ग्रह पुण्यैतीर्थक्षेत्र एवं पीठ और पीठदेवता सभी की विद्यमानता है। सृष्टि और संहार के करने वाले चन्द्र-सूर्य इस देह में सदा विद्यमान है। तीनों लोक में जितने प्राणी हैं वे सभी शरीरस्थ सुमेरु के आश्रय में रहते हुए अपनें अपने व्यवहार मे प्रवृत्त रहते है। यह सब जानने वाला निसन्देह योगी ही है।

इस कथ्य के अनुसार शरीर में ही सभी तीर्थे देवताओं का निवास है उनका जागरण होना चाहिए जो गुरुशक्ति एवं कृपा द्वारा सम्भव होता है।

८) शुद्ध पवित्र निर्विघ्न साधनात्मक स्थल;

९) प्राणमय दिव्य चैतन्य मंत्र, माला एवंम साधना का गुरु के द्वारा प्रदान होना;

१०) साधना काल में होने वाले अन्य विघ्नों में क्रोध, काम, विकार, रोग, समस्या आदि का भी विकाश होता है, इन पर नियन्त्रण रखना;

११) नित्यप्रति आत्म निरीक्षण एवं शास्त्रोचित खान पान एवंम दिन चर्या;

१२) अष्टांग योग नियम पालन जो निम्न है

यम् - इन्द्रियादि का नियंत्रीकरण; नियम - मन व्यापार नियन्त्रण; आसन - परमतत्व स्वरुप में चेतना की संस्थिती, प्रणायाम - प्राण विजय, शरीरस्थ प्राण प्रवाह का नियन्त्रण, प्रत्याहार - मन प्राण तथा विन्दु वशीकरण द्वारा इन्द्रियों को चित्त के स्वरुप से तदाकार होना, धारणा - शरीर के अन्तर्बाह्य एक ही निजस्वरूप आत्म तत्व की व्याप्ति की अन्त: करण में भावना, ध्यान - प्रतीत वस्तुओ में आत्म स्वरूप की भावना रखते हुए समस्थ अलख निरंजन का ध्यान, समाधि - साधना में समस्त तत्वोंकी सहज समावस्थागत स्थिति.

१३) बन्ध, मुद्रा, आसन, न्यास (अंग और करन्यास तथा व्यापक न्यास) दिशा, माला, आसन रंगादि का सम्यक अभ्यास और ज्ञान;

१४) सर्वोच्च तत्व है, गुरु एव भगवान के प्रति वास्तविक प्रेम श्रद्धा और पूर्ण समर्पण जिससे की स्वत: सफलता के द्वार खुल जाते है।

१५) यहाँ स्थानाभाव के कारण अधिक विस्तृत व्याख्या सम्भव नही हैं। साधना का संक्षिप्त क्रम नीचे दिया जा रहा है, जिससे सफलता सहज होती हैं। शरीर और आसन पवित्रीकरण दिशा बन्धन, जल अग्नि घेरा, भूतापसारण, भूतशुद्धि क्रिया आदि के बाद

(१) सर्व प्रथम गुरु, गणपति, इष्ट एवं कुल देवीया देवता पूजन पंचोपचार, दशोपचार, या षोडषोपचार (यथा सम्भव या तांत्रिक गुरु पूजन) तथा माला यन्त्रादि पूजन करें। (२) फिर मन्त्र जप (एक माला या अधिक) (३) जप के बाद समर्पण करे. (४) निश्चित जप संस्या के बाद दशांश हवन, मार्जन, तर्पण. ब्राह्मण दक्षिणा एवं भोज आदि करे (५) अन्त में गुरु के चरणो में जाकर सशरीर उपस्थित हों और यथा योग्य पूजन, दक्षिणा आदि के उपरान्त गुरुसे सप्रेम पूर्ण समर्पण एवं श्रद्धासहित सफलता के लिये आशीर्वाद माँगे।

१६) आवश्यक - १) जप काल में विभिन्न स्थलो पर विभिन्न बंधो और मुद्राओ का प्रयोग होता है। यह गुरुसे भली भांति समझ लेना चाहिए. २) उपरोक्त पूजन क्रम और मंत्रादि का ज्ञान गुरु या उनके द्वारा निर्देशित व्यक्ति से लिया जाना चाहिए. ३) साधना में सफलता मंत्र उपदेष्टा और साधक के अध्यव्यवसाय पर आश्रित है। अत: एक बार मे अगर सफलता न मिले (जिसमें कि जन्म जन्मांतर कृत दोषो का शमन होता है) तो निराश नही होना चाहिए और पुन: पूरे जोश से साधना प्रारम्भ करनी चाहिए ४) शरीरस्थ विभिन्न चेतना केंद्रो का ज्ञान और उनका जागरण अत्यन्त आवश्यक है। ५) सारी साधनाए मन के आश्रित है। अत: मन पर नियंत्रण, मनकी रचना एवं उसके आश्रयादि का ज्ञान आवश्यक है।

गुरु शिष्य सम्बन्ध

- रणजीत चौबे बी. एस. सी., केमिकल इन्जिनियरिंग

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः
ब्रह्मानंदं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
द्वन्दातीतं गगन सदृशं तत्वम अस्यादि लक्ष्यम्
एक नित्यं विमलम मचलं सर्वधी साक्षिभूतम्
भांवातीतं त्रिगुणरहिंतं सद्गुरूं तम् नभामि॥

भारतीय शास्त्रो ने गुरू को साक्षात परब्रह्म का स्थान दिया है। गुरू जन्मनात जायते शूद्रः रुपी जीव को संस्कार प्रदान द्वारा दूसरा जन्म देते है (संस्कारात भवेत द्विजः) अतः ब्रह्मा हैं। संस्कारित जोव शिष्य होता है जिसके ज्ञान और साधना को गुरु अपनी तपस्या, आशीर्वाद और संरक्षण प्रदान करते है, अतः विष्णु रुप है। साधनाकी परिपूर्णता रूप पूर्णत्व प्रदान करके जगत के उपकार की भावना युक्त शिष्य को बनाने के कारण गुरु देवाधिदेव महादेव स्वरूप है। अंत में पूर्ण ब्रह्मास्मि स्वरूप होने के बाद शिष्य गुरू के साथ ऐक्य अनुभव करता है और गुरू को साक्षात परब्रह्म स्वरूप देखता है।

गुरु शिष्य का सम्बन्ध देहगत न होने के कारण किसी स्वार्थ पर आधारित न होकर पूर्णतः प्राणगत और आत्मगत सम्बन्ध होत है। जहाँ किसी प्रकार की अश्रद्धा न होने से कोई द्वन्द नही उसी सम्बन्ध में गुरू शिष्य को परम सुख स्वरूप और त्रिगुणातीत होते है, जो दोनो के जीवन की सर्वोच्च पूर्णता और लक्ष्य है। जगद् गुरू सदाशिव भगवान ही गुरू रूप में आकर जीव के उत्तरोत्तर विकाश क्रम में सहायता प्रदान करने के लिए अपनी गुरु-शक्ति का प्रयोग करके दयाभाव प्रकट करते है। शिष्य के अन्दर वास्तव में गुरुशक्ति ही विभिन्न रुपो में रुपान्तरित होकर अपने अनुस्वाद के लिये साधना करती है।

शिष्य को शास्त्रोमें उपनिषद (पास आना) कहते है और वेद (पूर्ण) बनना ही उसका लक्ष्य हैं, गुरु को वेद अर्थात पूर्ण कहते है और उनके पास पहुच कर ही शिष्य पूर्णत्व प्राप्ति कर सकता है)। शिष्य वास्तव में गुरू की ही उद्भूत प्राणश्चेतना एवं ज्ञान का प्रकाश स्वरूप होता है। गुरू-शिष्य सम्बन्ध की पहचान सामान्य ज्ञानेन्द्रियों से न होकर केवल अन्तर्ज्ञान (ज्ञान चक्षु) से ही सम्भव है। माया के आवरण युक्त होने के कारण गुरु की पहचान में प्रायः भ्रम होता रहता है।

साधन पथ पर अग्रसर हुए शिष्य का लक्षण है गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण, अडिग विश्वास, अटूट श्रद्धा, साधना के प्रति निष्कपट पूर्ण प्रेम, गुरु के साथ नमन एवंम अभिन्नता का भाव एवंम साधना के प्रति तीव्र उत्साह। गुरु अपनी शक्ति का उपयोग करके दीक्षा और साधन प्रदान द्वारा अपनी गुरु शक्ति का प्रयोग करते है। साधना सफलता के लिये शिष्य को गुरु शक्ति से पूर्ण प्रभावित और भक्तिमान होते हुए अपने अन्तर में गुरु को नेत्रों के माध्यम से समाहित करते हुए, आज्ञा चक्र में स्थापित करते हुए (यही क्रिया योग सिद्धि है) पूर्ण गुरुमय होना चाहिए। इस सर्वोच्च स्थिति में शिष्य के अस्तित्व का पूर्ण विसर्जन हो जाता है और वह पूर्णत: गुरु की पूर्ण शक्ति का केन्द्र हो जाता है जहाँ उसे गुरु की सभी साधनाएं स्वत: प्राप्त हो जाती है.

पूर्ण श्रद्धा एवम प्रेम युक्त नमन जब अश्रु की तीव्रता से युक्त होकर प्राणों को झंकृत करते है तो शिंष्य गुरू के प्राणों में उतर जाता है और गुरू के हृदय और ज्ञान का स्पर्श स्वत: होने लगता है, और लक्ष्य प्राप्ति हो जाती है। ऐसे शिष्य के चेहरे पर करोड़ो सुर्य का तेज दृष्यमान हो जाता है।

मानव जीवन की सार्थकता पूर्णता में है जो पूर्ण शिष्यत्व से ही प्राप्त होती है (पूर्ण मेंवावशिष्यते)। हमारे शास्त्र ने जहाँ लक्ष्य निर्धारित किया है तमसो मां ज्योतिर्गमय, ज्योतिर्मय पथ पर गुरु (गु-अंधेरा, रू-हरण करना) ही ले जा सकते है। जहां मृत्योर्मा-अमृतगमय, उस अमृत की क्रिया जो नाभि चक्र जागरण और एक कला से सोलह कला तक जीव की उन्नति क्रिया है वह गुरु द्वारा ही सम्भव है, क्योंकि गुरु पूर्ण अर्थात सोलहकला युक्त माने जाते है। मानव मात्र का उच्च कर्तव्य है, कि वह इस मनुष्य देह के सर्वोच्च लक्ष्य आत्म ज्ञान प्राप्ति के लिए सबसे आवश्यक तत्व गुरु शिष्य सम्बन्ध कों समझे और उस परम आनन्दकारी सम्बन्ध को स्थायित्व देवे हुए, गुरु द्वारा निर्देशित मार्ग पर पूर्ण श्रद्धा एवं अत्यन्त तीव्रता से चलकर इसी जीवन में पूर्णत्व प्राप्ति कर ले।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

साधना पूजन क्रम

१. श्री गुरुध्यान-स्मरण :- गुं गुरुभ्यो नमः

२. श्री गणपती ध्यान-स्मरण :- गं गणपतये नमः

३. पवित्रीकरण - ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थांगतोऽपिवा। यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षंसवाह्याभ्यंतरः शुचि॥

४. शिखाबंधन - ॐ मणिधारिणि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हुं फट स्वाहा।

५. भस्म धारण - त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात॥

६. आचमन - ऐं आत्मतत्व शोधयामि ह्रीं विद्यातत्व शोधयामि, क्लीं शिवतत्व शोधयामि॥

७. पृथ्वी पूजन- ॐ ह्रीं आधारशक्त्यैनमः

८. आसन पूजन - ॐ आः सुरेखे वज्रे रेखे हुं फट स्वाहा।

इसके बाद अपने आसन को हटाकर उसके नीचे कुंकुम से त्रिकोण बनावें और उसपर पुन: आसन बिछा दे फिर आसन पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें:-

ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ पृथ्वी त्यासन-मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मोदेवता। आसने विनियोगः।

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वंच धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

इसके पश्चात जो आसन विद्या हुआ है, उसपर निम्न मंत्र का जाप करते हुए केसर की पाँच बिन्दिया लगावें इससे आसन सिध्द हो जायेगा।

ॐ पृथ्वीव्यै नमः ॐ अनंताय नमः ॐ कूर्माय नमः ॐ विमलाय नमः ॐ योगपीठाय नमः

गुरु पंक्ति नमस्कार - बाँयी ओर चावल की पाँच ढेरियाँ बनाकर (या गुरुयंत्र पर) उसपर एक एक गोल सुपारी रखें उसपर केशर की बिंदी लगावे तथा निम्न मंत्र का जाप करें।

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः ॐ पं परम गुरुभ्यो नमः ॐ पं परात्पर गुरुभ्यो नमः ॐ पं परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः ॐ पं परापर गुरुभ्यो नमः ॐ सिद्धाश्रमाय नमः ॐ सिद्धाश्रमस्य समस्त ऋषिभ्यो नमः

दाहिनी ओर चावल की एक ढेरी बनाकर गणपति की स्थापना करें तथा निम्न मंत्र का जप करें

ॐ गणेशाय नमः।

१०. कलश स्थापन पूजन- इस प्रकार जल अथवा कुंकुम से यंत्र बनाकर ॐ आधार शक्तिभ्यो नमः द्वारा पूजन करे उसपर कलश की स्थापना करें। ॐ हः सामान्या अर्घ्य स्थापयामि॥

पुष्प, अक्षत, गंध, कुंकुम, द्रव्य आदि निम्न मंत्र के द्वारा कलश में डाले इसके पश्चात अंकुश मुद्रासे अंतरिक्ष, पृथ्वी एवं समस्त तीर्थादि नदियों का आवाहन मंत्र जप करते हुए कलश को जल से पूर्ण करें।

११. मंत्रः- ॐ ब्रम्हाण्डोपरि तीर्थानिकरैः स्पृष्ठानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥

ॐ गंगेच यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिंधु कावेरी, जलेऽस्मिन सन्निधिंकुरु॥तद नंतर कलश के चारो ओर चारो दिशाओं में केसर की बिंदी लगाते हुए निम्न मंत्र का जाप करें:-

ॐ पूर्वे ऋगवेदाय नमः ॐ उत्तरे यजुर्वेदाय नमः ॐ पश्चिमें अथर्व वेदाय नमः ॐ दक्षिणे सामवेदाय नमः पुनः उस कलश मे से जल लेकर सभी पूजा वस्तुओं पर छिड़के इससे सभी पूजा वस्तुओंकी शुद्धि हो जाती है।

१२. पुष्पशोधन-

ॐ पुष्पकेतु राजार्हत, पुष्पे पुण्य सम्भवे।
पुष्पचयावकीर्णे हुं फट् स्वाहा॥

१३. शंख स्थापन-

कलश के पास में शंख स्थापित करें और उसका पूजन करें।

१४. घण्टा- शंख के पास ही घण्टा स्थापित करें और उसका भी पूजन करते

हुए निम्न मंत्र का पाठ करें-

आगमर्थं तु देवानां गमनार्थंतु राक्षसाम्। घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद घण्टां प्रपूजयेत॥

१५. दिक्पाल पूजन - ॐ इन्द्रादि दिक्पालेभ्यो नमः। दशो दिशाओं मे इस मंत्र से पूजन करें।

१६. द्वारपाल पूजन - ॐ गणेशादि द्वारपालेभ्यो नमः॥
इस मंत्र से चारो दिशा में द्वारपालों की पूजा करें।

१७. पाप शमन मंत्र जप - ॐ देवी त्वत्प्रकृतश्चित्तम्पापाक्रांतम भून्मम तन्निस्सरन्तु चित्तान्मे पापं हुं फट् च ते नमः

१८. शरीर मन वाणी नेत्र शोधन -- आः हुं फट स्वाहा॥

१९. दीप स्थापन पूजन - दं दीपनाथाय नमः

२०. पंचभूत साक्षी मंत्र -

सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पंच च।
एते शुभा शुम स्येह कर्मणों मव साक्षिणः॥

२१. विघ्न नाश मंत्र - निम्न मंत्र पढ़कर दशोदिशाओं में चावल छिड़ के

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः
ये चात्र विघ्न कर्ता रस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया
(अथवा)
ॐ सर्व विघ्न अनुत्सारय हूं फट् स्वाहा॥

२२. फट् पाद प्रोक्षण-

तीन बार बाएँ एँड़ी से धरती पर आघात करें और फट् का उच्चरण करें।

२३. अग्नि चिंतन - रं अग्नि बीज का जप करते हुए अपने चारो ओर जल से घेरा बनावे और यह चिंतन करें कि कोई अशुद्ध विचार इस घेरे के अन्दर न आ सके।

२४. आत्मरक्षण - ॐ दुर्गे रक्षिणि हूँ हूँ फट स्वाहा॥

२५. दिव्यगत अंतरिक्षगत और भूमिगत विघ्न नाश - ॐ सर्व विघ्न हरस्तस्मै श्री गणाधिपतये नमः

२६. नवग्रह संक्षिप्त पूजन-

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारि: भानु: शशि: भूमिसुतोबुधश्च
गुरुश्च शुक्र: शनि राहु केतव: सर्वेग्रहा शांतिकराभवन्तु॥

२७. वास्तु पुरुष पूजन- ॐ वास्तु पुरुषाय नम:

२८. संकल्प- ॐ तत् सद्य परमात्मन आज्ञया प्रवर्तमानस्य अमुक संवत्सरस्य श्री श्वेतवाराह कल्पे जम्बू द्वीपे भरत खण्डे अमुक प्रदेशे, अमुक स्थाने, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक वासरे, अमुक गोत्रोत्पन्न:, अमुक शर्माऽहं श्री अमुक देवता (देवी) प्रासाद सिद्धि द्वारा मम सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थं यथा शक्ति यथा ज्ञानेन यथा सम्भावितोपचार द्रव्यै: साङ्गावरणै: सपर्या करिष्ये।

२९. श्री भैरव आवाहन पूजन - कार्य सम्पन्नता निर्विघ्नता और सिद्धि प्राप्ति के लिए भैरव का आवाहन पूजन और आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए

मंत्र-

तीक्ष्ण दन्त महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि॥

३०. चैतन्य माला-

प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य माला गुरु या अन्य उचित स्थान से प्राप्त कर लेना चाहिए।

उपरोक्त क्रम के बाद अपने इष्ट मंत्र या अनुष्ठान मंत्र के देवता का आवाहन पूजनादि क्रम सम्पन्न कर के माला पूजन करके संकल्प के अनुसार जप करे।

शास्त्रोक्त विधि से हवन, मार्जन, तर्पण, गुरु एवं ब्राह्मण दक्षिणा आदि क्रम करें।

इति पूजन प्रकार.

नित्य साधना क्रम

गुरू, गणेश और इष्ट के ध्यान के बाद निम्न क्रम से जप करे।

१)	गुरू मंत्र	ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नम:
२)	गणपती मंत्र	ॐ गं गणपतये नम:
३)	भैरव मंत्र	ॐ ह्रीं भं भैरवाय नम:
४)	गायत्री मंत्र	ॐ भू र्भुव: स्व: तत्स वितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योन: प्रचोदयात्।
५)	चेतना मंत्र	ॐ ह्री मम प्राण, देह, रोम, प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नम:
६)	अमृत मंत्र	ॐ आत्मप्राण चैतन्यपूर्णत्व सिद्धि ऐं ह्रीं श्रीं नम:
७)	शांति मंत्र	सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वित:। मनुष्योमत्प्रसादेन् भविष्याति न संशय:॥
८)	तेजस मंत्र	ॐ ह्रीं हुं हुं तेजसे हुं हुं ह्रीं ॐ फट्
९)	कायाकल्प मंत्र	ॐ मम समस्त देह रोम अंतर्बाह्य जाग्रय कायाकल्पाय फट्॥
१०)	प्रायश्चित मंत्र	ॐ भूताय त्वां देह प्रायाश्चितं परिमार्जन देह भूताय फट्॥
११)	इष्ट मंत्र या अनुष्ठान मंत्र	जो संकल्प लिया हो

ज्ञातव्य - १) इष्ट मंत्र जप के बाद उपरोक्त क्रम का विलोम रीति से (क्रम १० से १ तक) जप करे। इस प्रकार जप पूर्ण होता है। २) सबसे अंत में गुरु मानस पूजा सम्पन्न करें।

तांत्रोक्त प्रात: मानसिक गुरु पूजन

भूत सिद्धि-

ॐ हौ" का १०८ बार जप

प्रात: उठ कर अपनी शैया पर बैठे-बैठे ही कर लेना चाहिए।

चौर महामन्त्र न्यास

शरीर का स्थान	बीज मन्त्र	जप संख्या
१ हृदय	क्रीं	१० बार
२ दोनों नेत्र	ह्रीं ह्रीं १०-१० बार	२० वार
३ दोंनो कान	ह्रीं ह्रीं १०-१० बार	२० बार
४ दोंनो नाक	हुँ हुं १०-१० बार	२० बार
५ मुख	स्त्री स्त्रीं	१० बार
६ नाभि	क्लीं	१० बार
७ लिंग-मूल	हसौः	१० बार
८ गुह्य	ब्लूं	१० बार
९ भ्रू-मध्य	हूँ	१० वार
१० सिर	हि स्त्रीं क्लीं	१० बार

गुरू ध्यान

ॐ वराभय करं शान्तं शुक्ल-वर्ण सशक्तिकम्।
ज्ञानानन्द मयं साक्षात् सर्व -ब्रह्म-स्वरूपकम् ॥
ध्यायेच्छिरसि शुक्लाब्जे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरूं ।
श्वेताम्बर-परिधानं श्वेत माल्यानुलेपनं ॥
वराभय-करं शान्तं करुणामय-विग्रहं
वामेनोत्पल-धारिण्यां शक्त्यालिंगितं विग्रहं
स्मेराननं सुप्रसन्नं साधकामीष्ट-दायकं ॥

मानसिक गुरू पूजा

ऐं कनिष्ठाभ्यां लं पृथिव्यात्मकं गन्धं सशक्तिकं श्री गुरवै समर्पयामि नम:

ऐं अंगुष्ठाभ्यां हं आकाशात्मकं पुष्पं सशक्तिकं श्री गुरुवै समर्पयामि नम:

ऐं तर्जनीभ्यां यं वाग्वात्मकं धूपं सशक्तिकं श्री गुरुवै समर्पयामि नम:

ऐं मध्यमाभ्यां रं हृदयात्मकं दीपं सशक्तिकं श्री गुरुवै समर्पयामि नम:

ऐं अनामिकाभ्यां वं अमृतात्मकं नेवैद्यं सशक्तिकं श्री गुरुवै समर्पयामि नम:

ऐं करतल-करपृष्ठाभ्यां सं सर्वात्मकं ताम्बूलं सशक्तिकं श्री गुरुवै समर्पयामि नम:

अंग न्यास-करन्यास

श्री	अंगुष्ठाभ्यां नम:	हृदयाय नम:	गां
गु	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा	गीं
र	मध्यामाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्	गूं
वै	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हूं	गैं
न	कनिष्ठाकाभ्यां वौषट	नेत्रत्रयायवौषट	गौं
म:	अस्त्राय फट्	करतल-कर पृष्ठाभ्यां फट्	ग:

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नम: का १०८ जप

इसके बाद "ऐं" गुरू बीज का १०८ बार जप कर गो-योनि-मुद्रा से जप-समर्पण करें।

जप समर्पण गुरु के दांये हाथ में निम्न मन्त्र के द्वारा करना चाहिए।

ॐ गुह्याति-गुह्य गोप्ता त्वं गृहणास्मत् कृतं जपम्
सिद्धिर्भवतु मे देव, त्वत् प्रासादान्महेश्वर॥

फिर "ऐं"मन्त्र से प्राणायाम कर गुरुदेव को नमस्कार करें और नमस्कार करते हुए उच्चारण करें--

अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवै नम:।

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं मत:।
तत्व-ज्ञानं परं नास्ति तस्मै श्री गुरवै नम:॥

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया।
चक्षु रून्मीलीतं येन तस्मै श्री गुरूवै नम:

नमोऽस्तु गुरूवै तस्मै इष्ट-देव-स्वरूपिणे।
यस्य वागामृतं हन्ति विषं संसार-सज्ञकम् ॥

भव-पाश-विनाशाय ज्ञान-दृष्टि-प्रदर्शिने।
नम: सद्गुरवे तुभ्यं भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिने॥

नराकृति-परब्रह्म-रूपायाज्ञान-हारिणे।
कुल-धर्म-प्रकाशाय तस्मै श्री गुरवै नम:॥

इस प्रकार गुरूदेव को श्रद्धायुक्त नमस्कार कर वाग्भव बीज "ऐं" द्वारा तीन बार प्राणायाम करे और फिर गुरू स्तोत्र का पाठ करे

भारतीय मास १. ज्येष्ठ २. आषाढ				अंग्रेजी मास १४ मई से १३ जून १४ जून से १३ जुलाई			
काल	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				दिन B-१			
महेन्द्र	३.३६ से ४.२४	-	-	६.४८ से ८.२४	-	-	६.०० से ६.४८
अमृत	६.०० से ८.२४ ११.३६ से २.४८	६.०० से ७.३६ (६.३० से ९.००) राहू ९.१२ से ११.३६	१०.०० से ११.३६ ४.२४ से ६.०० (३.०० से ४.३०) राहू	८.२४ से १०.०० २.४८ से ५.१२	६.०० से ७.३६ १०.०० से ११.३६ ४.२४ से ६.००	६.०० से ६.४८ ७.३६ से १०.०० १२.२४ से ३.३६	९.१२ से १२.२४ (९.०० से १०.३०) राहू
वक्र	८.२४ से ११.३६	७.३६ से ९.१२ (७.३० से ९.००) राहू ११.३६ से ६.००	७.३६ से १०.०० १.१२ से ३.३६ (३.०० से ४.३०) राहू	१०.०० से १२.२४ (१२.०० से १.३०) राहू १.१२ से २.४८	७.३६ से १०.०० १.१२ से ३.३६ (१.३० से ३.००) राहू	६.४८ से ७.३६ १०.०० से १२.२४ (१०.३० से १२.००) राहू ४.२४ से ६.००	१२.२४ से ४.२४
शून्य	२.४८ से ३.३६ ४.२४ से ६.०० (४.३० से ६.००) राहू	-	६.०० से ७.३६ ११.३६ से १.१२ ३.३६ से ४.२४ (३.०० से ४.३०) राहू	६.०० से ६.४८ १२.२४ से १.१२ (१२.०० से १.३०) राहू ५.१२ से ६.००	११.३६ से १.१२ ३.३६ से ४.२४	३.३६ से ४.२४	६.४८ से ९.१२ (९.०० से १०.३०) राहू ४.२४ से ६.००
				रात्रि B-२			
महेन्द्र	४.२४ से ६.००	२.४८ से ३.३६	५.१२ से ६.००	-	-	१०.४८ से ११.३६	८.२४ से ९.१२ ९.१२ से १०.४६
अमृत	६.४८ से १०.००	८.२४ से ११.३६	६.४८ से १०.०० १२.२४ से २.४८	७.३६ से ९.१२ १२.२४ से २.४८	९.१२ से ११.३६ २.०० से ४.२४	७.३६ से ९.१२ १.१२ से २.४८	२.४८ से ३.३६ ५.१२ से ६.००
वक्र	१०.०० से १२.२४ २.४८ से ४.२४	६.०० से ८.२४ ११.३६ से २.४८ ३.३६ से ६.००	१०.०० से १२.२४ २.४८ से ५.१२	६.०० से ७.३६ ९.१२ से १२.२४	६.०० से ९.१२ ११.३६ से २.०० ४.२४ से ६.००	६.०० से ७.३६ ११.३६ से १.१२	६.४८ से ८.२४ ३.३६ से ४.२४
शून्य	६.०० से ६.४८	-	६.०० से ६.४८	२.४८ से ६.००	-	९.१२ से १०.४८ २.४८ से ६.००	६.०० से ६.४८ १०.४८ से २.४८ ४.२४ से ५.१२

भारतीय मास १. आश्विन २. कार्तिक ३. मार्गशीष ४. पौष				अंग्रेजी मास १४ सितम्बर से १३ अक्टूबर १४ अक्टूबर से १३ नवम्बर		१४नवम्बर से १३ दिसम्बर १४ दिसम्बर से १३ जनवरी	
काल	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				दिन C-१			
महेन्द्र	-	९.१२ से १०.४८ ३.३६ से ६.००	१२.२४ से २.४८	६.४८ से ८.२४	५.१२ से ६.००	४.२४ से ६.००	५.१२ से ६.००
अमृत	७.३६ से १०.०० १२.२४ से २.४८ ४.२४ से ५.१२ (४.३० से ६.००) राहू	६.०० से ९.१२ १.१२ से ३.३६ (6.30 से 8.) रा	६.०० से ७.३६ १०.०० से १०.४८	८.२४ से ११.३६	६.०० से ६.४८ १०.४८ से १२.२४ २.४८ से ५.१२ (१.३० से ३.००) राहू	९.१२ से १०.४८ ११.३६ से १२.२४ (१०.३० से १२.००) राहू २.०० से ४.२४	१०.४८ से २.००
वक्र	६.०० से ७.३६ १०.०० से १२.२४ २.४८ से ४.२४	-	७.३६ से १०.०० ५.१२ से ६.००	११.३६ से २.०० (१२.०० से १.३०) राहू ५.१२ से ६.००	८.२४ से १०.४८ १.१२ से २.४८ (१.३० से ३.००) राहू	६.०० से ९.१२ १२.२४ से २.००	७.३६ से ९.१२ २.४८ से ४.२४
शून्य	५.१२ से ६.०० (४.३० से ६.००) राहू	१०.४८ से १.१२	१०.४८ से १२.२४ २.४८ से ५.१२ (३.०० से ४.३०) राहू	६.०० से ६.४८ २.०० से ५.१२	६.४८ से ८.२४ १२.२४ से १.१२	१०.४८ से ११.३६ (१०.३० से १२.००) राहू	६.०० से ७.३६ ९.१२ से १०.४८ (९.०० से १०.३०) राहू २.०० से २.४८ ४.२४ से ५.१२
				रात्रि C-२			
महेन्द्र	-	-	-	-	-	१.१२ से २.००	-
अमृत	७.३६ से ९.१२ ११.३६ से २.००	८.२४ से ११.३६ २.०० से ३.३६	८.२४ से ११.३६ २.०० से ३.३६	६.४८ से १०.४८ २.०० से ४.२४	१०.०० से १२.२४	८.२४ से १०.४८	८.२४ से १०.४८ १२.२४ से २.४८ ४.४२ से ६.००
वक्र	९.१२ से ११.३६ ३.३६ से ६.००	६.०० से ८.२४ ११.३६ से २.०० ४.२४ से ६.००	६.०० से ८.२४ ४.२४ से ६.००	१०.४८ से २.०० ५.१२ से ६.००	७.३६ से ९.१२ १२.२४ से २.४८ ३.३६ से ६.००	६.०० से ७.३६ २.४८ से ६.००	६.४८ से ८.२४ १०.४८ से १२.२४ ४.४८ से ४.४२
शून्य	६.०० से ७.३६ २.०० से ३.३६	३.३६ से ४.२४	११.३६ से २.०० ३.३६ से ४.२४	६.०० से ६.४८ ४.२४ से ५.१२	६.०० से ७.३६ ९.१२ से १०.०० २.४८ से ३.३६	७.३६ से ८.२४ १०.४८ से १.१२ २.०० से २.४८	६.०० से ६.४८

काल ज्ञान

इस काल ज्ञान के अनुसार तिथि, नक्षत्र, योग, करण, वार ग्रह व्यतिपात, दिशाशूल, चन्द्रमा आदि को जानने या पंचाग देखने की आवश्यकता नहीं है । इस काल गणना के अनुसार कार्य प्रारंभ करने से निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है ।

मिहिराचार्य के अनुसार १२ महीनों का काल तीन भागों में बांटा गया है -

A - मास - १ चैत्र, २ वैशाख, ३ श्रावण, ४ भाद्रपद, ५ माघ, ६ फाल्गुन. (१४ जनवरी से १३ मई तथा १४ जुलाई से १३ सितंबर)

- मास - १ ज्येष्ठ, २ आषाढ.(१४ मई से १३ जुलाई)

ए - मास - १ आश्विन, २ कार्तिक, ३ मार्गशीष, ४ पौष(१४ सितंबर से १३ जनवरी)

मिहिराचार्य ने काल को चार भागों में विभक्त किया है-

१ महेन्द्र - यह सर्वश्रेष्ठ काल है । इसमें जो भी कार्य किया जाय निश्चित सफलता प्राप्त होती है ।

२ अमृत - यह भी श्रेष्ठ काल है किन्तु इसका महत्त्व महेन्द्र के बाद है ।

३ वक्र - यह सामान्य काल है इसमें बहुत बाधाओं के बाद ही कार्य में सफलता प्राप्त होती है ।

४ शून्य - यह व्यर्थ और निकृष्ट काल है इसमें प्रारंभ किये गये कार्यों में सफलता नहीं मिलती है ।

प्रत्येक काल के चार भाग हैं - १. बाल, २. युवा, ३. प्रौढ, ४. वृद्ध । प्रत्येक काल के समय को चार बराबर भागों में विभाजित करके जो समय प्राप्त होता है वहि क्रमशः इनकी अवधि होती है । यथा संभव बाल और वृद्ध काल में कार्य प्रारंभ नही करना चाहिए । सर्वोत्तम समय युवा और प्रौढ काल होता है ।

राहू काल - यह जहां भी आता है सर्वोत्तम समय को भी नष्ट कर देता है अतः इस काल में कोई भी कार्य प्रारंभ न करे ।

इस काल ज्ञान में दिन की अवधि प्रातः ६ बजे से सायं ६ बजे तक है तथा रात्रि की अवधि सायं ६ बजे से प्रातः ६ बजे तक है ।

इस काल ज्ञान का आधार भारतीय मास ही हैं ।

नोट - इस काल ज्ञान के आधार पर साधक अपने समय का सही उपयोग कर सकते हैं तथा जन साधारण को उचित मार्गदर्शन देकर उनका कल्याण कर सकते हैं ।

अशुभ काल दोष परिहार

हर काल के चारो चरण के चार अलग देवता होते हैं, उन्हे ध्यान पूजन करके कार्य प्रारंभ करने से अशुभ काल दोष परिहार हो जाता है ।

वक्र काल

१. बाल - के देव गणपति हैं उन्हें ध्यान करके गुड़का भोग लगाएँ तब कार्य प्रारंभ करें ।

२. युवा - के देव वरुण हैं, घर के आगे जल छिड़ककर दधि भक्षण कर कार्य प्रारंभ करें ।

३. प्रौढ़ - के देव सूर्य हैं, सफेद चावल भक्षण करके कार्य प्रारंभ करें

४. वृद्ध - के देव बृहस्पति हैं, बेसन की बनी वस्तु का सेवन कर कार्य करें ।

शून्यकालः

१. बाल - के देवता "अग्नि" हैं, काले तिल का भक्षण कर कार्य प्रारंभ करें

२. युवा - के देवता "हनुमान" हैं, शुद्ध घी में गुड़ मिलाकर उसका भक्षण कर कार्य प्रारंभ करें ।

३. प्रौढ - के देवता "महाकाल" हैं, को प्रणाम कर शहद भक्षण कर कार्य अथवा कार्य प्रारंभ करें ।

४. वृद्ध - के देवता "मकरध्वज" हैं, पीली सरसो का चर्वण कर कार्य प्रारंभ करें ।

भारतीय मास - १ चैत्र २ वैशाख	३ श्रावण ४ भाद्रपद	५ माघ ६ फाल्गुन		अंग्रेजी मास १४ मार्च से १३ अप्रैल १४ अप्रैल से १३ मई	१४ जुलाई से १३ अगस्त १४ जनवरी से १३ फरवरी	१४ अगस्त से १३ सितम्बर १४ फरवरी से १३ मार्च	
काल	**रविवार**	**सोमवार**	**मंगलवार**	**बुधवार**	**गुरुवार**	**शुक्रवार**	**शनिवार**
				दिन A-१			
महेन्द्र	६.०० से ६.४८	-	-	३.३६ से ४.२४	-	-	-
अमृत	६.४८ से १०.०० ५.२२ से ६.०० (४.३० से ६.००) राहू	६.०० से ७.३६ (७.३० से ९.००) राहू १०.४८ से १.१२ ३.३६ से ५.१२	६.०० से ८.२४ १०.०० से १२.२४ ३.३६ से ५.१२ (३.०० से ४.३०) राहू	७.३६ से ९.१२ ११.३६ से १.१२ (१२.०० से १.३०) राहू ४.२४ से ६.००	६.०० से ८.२४ १०.४८ से १.१२ ४.२४ से ५.१२	६.४८ से १.१२ ४.२४ से ५.१२	९.१२ से १०.३० (९.०० से १०.३०) ३.३६ से ५.१२
वक्र	१०.०० से २.००	७.३६ से १०.४८ (७.३० से ९.००) राहू १.१२ से ३.३६	९.१२ से १०.००	६.०० से ७.३६ ९.१२ से ११.३६ २.०० से ३.३६	९.१२ से १०.४८ १.१२ से ४.२४ (१.३० से ३.००) राहू	१.१२ से ४.२४	१.१२ से २.००
शून्य	२.०० से ५.१२ (४.३० से ६.००)	५.१२ से ६.००	८.२४ से ९.१२ १२.२४ से ३.३६ (३.०० से ४.३०) राहू ५.१२ से ६.००	१.१२ से २.०० (१२.०० से १.३०) राहू	८.२४ से ९.१२ ५.१२ से ६.००	६.०० से ६.४८ ५.१२ से ६.००	६.०० से ७.३६ ८.२४ से ९.१२ (९.०० से १०.३०) राहू १२.२४ से १.१२ २.०० से ३.३६ ५.१२ से ६.००
				रात्रि A-२			
महेन्द्र	६.४८ से ७.३६ ३.३६ से ४.२४	७.३६ से ९.१२	७.३६ से ९.१२ ३.३६ से ४.२४	९.१२ से १०.४८	७.३६ से ९.१२	१.१२ से ३.३६	-
अमृत	८.२४ से १०.०० ४.२४ से ६.००	९.१२ से १०.०० १.१२ से २.४८	५.१२ से १०.०० १२.२४ से २.०० ४.२४ से ६.००	६.४८ से ९.१२ २.०० से ६.००	५.१२ से १०.०० १.१२ से २.४८	८.२४ से १०.४८ ४.२४ से ६.००	८.२४ से १०.४८ २.०० से ३.३६ ४.२४ से ६.००
वक्र	१०.४८ से १.१२	६.०० से ७.३६ ४.२४ से ५.१२	६.०० से ७.३६ १०.०० से १२.२४	१०.४८ से १२.२४	६.०० से ७.३६ १०.०० से १.१२	६.०० से ७.३६ १०.४८ से १.१२	६.०० से ८.२४ १०.४८ से १२.२४
शून्य	६.०० से ६.४८ ७.३६ से ८.२४ १०.०० से १०.४८ १.१२ से ३.३६	२.४८ से ४.२४ ५.१२ से ६.००	२.०० से ३.३६	६.०० से ६.४८ १२.२४ से २.००	२.४८ से ४.२४	७.३६ से ८.२४ ३.३६ से ४.२४	१२.२४ से २.०० ३.३६ से ४.२४

निखिलेश्वरानंद पंच रत्न स्तवन

ॐ नमस्ते सते सर्व-लोकाश्रयाय, नमस्ते चिते विश्व-रुपात्मकाय ।
नमो द्वैत-तत्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्रह्मणै व्यापिने निर्गुणाय ॥१॥

त्वमेक शरण्यं त्वमेक वरेण्यम, त्वमेक जगत-कारण विश्व-रुपम ।
त्वमेक जगत-कृर्तृ-पातृ-प्रहर्त, त्वमेंक परं निश्चल निर्विकल्पम ॥२॥

भयानां भय भीषण मीषणानाम, गतिः प्राणिनां पावन पावनानाम ।
महौच्चैः पदानां नियन्तुः त्वमेकम, परेषां पर रक्षकं रक्षका नाम ॥३॥

परेश प्रभो सर्व-रुपाविनाशिन, अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य ।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त-तत्व, जगद-भासकाधीश पायादपायात ॥४॥

तदेक स्मरामरतदेक जपामः तदेकं जगत-साक्षि-रुपं नमामः ।
तदेकं निधान निरालम्बमो शम, भवाोधि पोत शरण्यं ब्रजामः ॥५॥

पंच रत्नमिदं स्तोत्रं ब्रह्मण परमात्मनः य पठेत प्रयतो भूत्वा ब्रह्मा सायुज्यं माप्नुयात ॥६॥

अर्थात हे गुरुदेव ! आप मेरे जीवन के आराध्य हो, आप नित्य हो, समस्त लोगों के आश्रय हो, आपको नमस्कार करता हुं । हे योगी राज आप ज्ञान स्वरुप हो, विश्व की आत्मा स्वरुप हो, आप अद्वैत तत्व प्रदायक आपको नमस्कर है, आप सर्व व्यापी निर्गुण हो, सगुण-रुप मे आप समस्त शिष्यों के सामने उपस्थित हो, आपको नमस्कार है ।

प्रतिदिन इस स्तवनका पाठ करना चाहिए अथवा सोमवार और गुरुवार को तो निश्चय ही इसका पाठ कर बाद में ही अन्न जल ग्रहण करना चाहिए।

निखिलेश्वरं

निखिलेश्वरं, भुवनेश्वरं, भवनेश्वरं, यजनेश्वरं । परमेश्वरं, मदनेश्वरं, सर्वेश्वरं, कामेश्वरं ।
वरणेश्वरं, करणेश्वरं, भाग्येश्वरं, दक्षेश्वरं. । कार्येश्वरं, कर्मेश्वरं, पूर्णेश्वरं, निखिलेश्वरं ॥१॥

यक्षेश्वरं, दक्षेश्वरं, अमलेश्वरं, कर्मेश्वरं, । नाथेश्वरं. योगेश्वरं, गैरेश्वरं, नामेश्वरं ।
लेखेश्वरं, लक्ष्येश्वरं, मायेश्वरं, सकलेश्वरं । नरमेश्वरं, शिष्येश्वरं, विमलेश्वरं, निखिलेश्वरं ॥२॥

पदमेश्वरं, कनकेश्वरं, देहेश्वरं, देवेश्वरं । ज्ञानेश्वरं, तापेश्वरं, कार्येश्वरं, बांगीश्वरं ।
माणिकेश्वरं, पलमेश्वरं, इच्छेश्वरं, पूर्णेश्वरं, । मंत्रेश्वरं, तंत्रेश्वरं, यंत्रेश्वरं, निखिलेश्वरं ॥३॥

एकेश्वरं, दित्यैश्वरं, भव्येश्वरं, शब्देश्वरं, । विद्येश्वरं, परमेश्वरं, जयमेश्वरं, रक्षेश्वरं ।
तारेश्वरं, शक्तिश्वरं, भक्तेश्वरं, शक्त्येश्वरं । धरणीश्वरं, व्यापेश्वरं, सिद्धेश्वरं, निखिलेश्वरं ॥४॥

श्रींशेखरं, ह्रींशेश्वरं, क्लींशेश्वरं, भार्येश्वरं । चिन्त्येश्वरं, एकेश्वरं, वागेश्वरं, कालेश्वरं ।
तपसेश्वरं, तापेश्वरं, सृष्टयेश्वरं, तरणेश्वरं । निखिलेश्वरं, निखिलेश्वरं निखिलेश्वरं ॥५॥

- : निखिल पंच रत्न :-

साकार गुणात्मक ब्रह्म मयं शिष्यत्वं पूर्ण प्रदाय मयं ।
त्वं ब्रह्म मयं सन्यास मयं निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो ॥१॥

करुणा वर अब्ज दयां देह लयं बीज प्रमाण त्वं सृष्टि करं ।
त्व मत्र मयं त्वं तन्त्र मयं निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो ॥२॥

कर्मैश विधेशं सुरेश मयं सिद्धाश्रम योगिन साख्य स्वयं ।
त्वं ज्ञान मयं त्वं तत्व मयं निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो ॥४॥

त्वं ज्योर्तिमयं त्वं ज्ञानमय त्व शिष्यमयं त्वं प्राणमयं ।
भयं आर्तव शिष्य त्राणं प्रभो निखिलेश्वर गुरुवर पाहि प्रभो ॥५॥

गुरू मंत्र साधना

गुरु बीज के प्रत्येक अक्षर का कुण्डलिनी के चक्रों पर जप करने से निश्चय ही कुण्डलिनी जाग्रत होती है, सहस्त्रार दल विकसित हो जाता है, और ऐसा साधक निश्चय ही सहस्त्रार-भेदन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है ।

इसमें प्रत्येक अक्षर के ९-९ लाख (कुल ८१ लाख) जप करना चाहिए और फिर पूरे गुरु मन्त्र का छः लाख जप करके पुरुश्चरण सम्पन्न कर लेना चाहिए ।

गुरू मन्त्र की सिद्धि से जीवन में समस्त ऐश्वर्य स्वतः प्राप्त हो जाते है।

मूल मन्त्र - ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।

बीजाक्षर जप

इसमें प्रत्येक बीज मन्त्र के नौ नौ लाख जप करने है, और यह जप सम्बन्धित चक्र पर ध्यान केन्द्रित करके करना है ।

बीजाक्षर	**स्वरुप**	**चक्र स्थान**
प	चन्द्रमा के समान प्रकाश	विशुद्ध चक्र
र	सूर्य के समान तेजस्विता	आज्ञा चक्र
म	अग्नि के समान रूप	अनाहत चक्र
त	श्याम कान्ति	अनाहत चक्र
त्वा	रक्त के समान अरुण आभा	स्वाधिष्ठान चक्र
य	नील कान्ति	मणिपूर चक्र
नारायणाय	गोर कान्ति	स्वाधिष्ठान चक्र
गुरुभ्यो	कृष्ण समान कान्ति	मूलाधर चक्र
नमः	घूम्र समान कान्ति	अनाहत चक्र

इस प्रकार षटचक्र के दलों पर गुरु मन्त्र के बीजाक्षरों का ध्यान करते हुए गुरु द्वारा प्रदत्त माला पर प्रत्येक बीजाक्षर का ९ लाख करना चाहिए, साथ ही नित्य निम्न विनियोग करें।

विनियोग -- ॐ अस्य गुरू मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः गायत्री

उष्णिक्-अनुष्टुप छन्दांसि, महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताः, ब्रह्म शाकम्भरी भीमा शक्तयः ब्रह्माण्ड बीजानि, ॐ कीलकं अग्नि वायु सूर्याः तत्वानि अमुक कार्य सिद्धयर्थे मन्त्र जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास - इस न्यास को करने से सारा शरीर दिव्य और चैतन्य हो जाता है।

ॐ ब्रह्म विष्णु महेश्वर ऋषिभ्यो नमः - शिरसि । ॐ गायत्री-उष्णिक्-अनुष्टुप छन्देभ्यो नमः - मुखे । ॐ महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताभ्यो नमः - हृदि । ॐ ब्रह्म शाकम्भरी-भीमा-शक्तिभ्यो नमः दक्ष-स्तने । ॐ ब्रह्माण्ड बीजानि नमः-वाम स्तने । ॐ ह्रीं कीलकाय नमः - नाभौ ॐ अग्नि-वायु सूर्य - तत्वेभ्यो नमः - नेत्रयोः ॐ अमुक कार्य सिद्धयर्थे मन्त्र जपे विनियोगः नमः - सर्वांगे।

वर्ण मातृका न्यास - इससे गुरू, ब्रह्म स्वरूप बन कर साधक के शरीर में समाहित हो जाते है।

ॐ ॐ अं आं कं खं गं घं ङं इं ईं - हृदयाय नमः ॐ परम उं ऊं चं छं जं झं ञं ऋं - सिरसे स्वाहा ॐ तत्वाय ऌं टं ठं डं ढं णं ॡं ॡं - शिखायै वौषट् ॐ नारायणाय एं तं थं दं घं नं ऐं - कवचाय हुम् ॐ गुरुभ्यो ओं पं फं बं भं मं औं - नेत्र त्रयाय वौषट् ॐ नमः अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अंः - अस्त्राय फट्।

सारस्वत न्यास - इसके करने से शरीर के जड़ता, आलस्य और पाप नष्ट हो जाते है।

इसमें गुरू मन्त्र का जप निम्न स्थानों पर दाहिने हाथ की उंगलियां रखते हुए करें।

कनिष्ठिका - ६ बार, अनामिका - ६ बार, मध्यमा - ३ बार, तर्जनी - ४ बार, अंगुष्ठ - ६ बार, करतलकरपृष्ठ - ६ बार, पृष्ठभाग - ११ बार, मणिबन्ध - ८ बार, हस्त - ९ बार, हृदय - १० बार, सिर - ११ बार, शिखा - १२ बार, दोनों कवच - ६ बार, दोनों नेत्र - ६ बार, सर्वांग - १५ बार

मातृका न्यास - यह न्यास करने से साधक त्रिकालज्ञ, एवं त्रैलोक्य विजयी हो जाता है।

ॐ गुरुभ्यो ब्राह्मी पूर्वतो मां पातु। ॐ गुरुभ्यो माहेश्वरी आग्नेय मां पातु। ॐ गुरुभ्यो कौमारी दक्षिणे मां पातु। ॐ गुरुभ्यो वैष्णवी नैऋते मां पातु। ॐ गुरुभ्यो वाराही पश्चिमे मां पातु। ॐ गुरुभ्यो इन्द्राणी वायव्ये मां पातु। ॐ

गुरुभ्यो चामुण्डे उत्तरे मां पातु। ॐ गुरुभ्यो महालक्ष्मी ऐशान्ये मां पातु। ॐ गुरुभ्यो व्योमेश्वरी ऊर्ध्वे मां पातु। ॐ गुरुभ्यो सप्त-द्वीपेश्वरी भूमौ मां पातु। ॐ गुरुभ्यो कामेश्वरी पाताले मां पातु।

ब्रह्म न्यास -- इस न्यास से साधक चिरयौवन मय बना रह कर सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता है।

ॐ ब्रह्म शून्य आसनायै नमः -पूर्वांगे मां पातु। ॐ विमुक्तायै ज्ञान खड्गे हस्तायै नमः -दक्षिणे मां पातु। ॐ चैतन्य पल्लवायै नमः -पृष्ठे मां पातु। ॐ गुरुवै सर्व सिद्धि हस्तायै नमः -वामांगे मां पातु। ॐ सर्व सिद्धि प्रदायै नमः -मस्तकादि चरणान्तं मां पातु। ॐ शिष्य प्रियायै नमः - पादादि मस्तकान्तं मां पातु।

शून्य न्यास -- इस न्यास को करने से साधक की मन की सभी कामनाओं की पूर्ति होती है।

ॐ ब्रह्मणे नमः -पादादि नाभि पर्यन्तं सदा मां पातु। ॐ नारायणाय नमः नाभौ विशुद्धि पर्यन्त मां पातु। ॐ रुद्राय नमः ब्रह्म रन्ध्रान्ते नेत्रयोः मां पातु। ॐ त्रिलोचनाय नमः पादयोः मां पातु। ॐ दिव्याय नमः करयोः मां पातु। ॐ ज्ञानाय नमः नेत्रयोः मां पातु। ॐ दिव्य चेतनायै नमः सर्वांगे मां पातु। ॐ आनन्द-मय परमात्मने नमः परात्पर-देहभागे मां पातु।

देवी न्यास -- इस न्यास को करने से साधक को सिद्धाश्रम प्राप्ति होती है।

ॐ गुरुवै अष्टादश भुजायै नमः मध्ये मां पातु। ॐ चैतन्य षोडश भुजायै नमः ऊर्ध्व मां पातु। ॐ कालक्षयायै दश भुजायै नमः अधः मां पातु। ॐ शत्रुमर्दनायै नमः हस्तयोः मां पातु। ॐ ज्ञानाय नमः नेत्रयोः मां पातु। ॐ दिव्यायै नमः पादयो मां पातु। ॐ महेशाय नमः सर्वांगे मां पातु।

वर्ण न्यास -- इस न्यास से जीवन के सभी रोग समाप्त हो जाते है।

ॐ परम नमः - ब्रह्म रन्ध्रे ॐ तत्वाय नमः - दक्ष नेत्रे ॐ नारायणाय नमः - वाम नेत्रे ॐ गुरुभ्यो नमः - दक्ष-वाम कर्णे ॐ नमः मुखे ॐ ॐ नमः - सर्वांगे।

विन्ध्य न्यास -- इस न्यास से जीवन के सभी दुख दूर हो जाते है।

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।

पैरों से लगाकर सिर तक और सिर से लगाकर पैरों तक ९-९ बार यह मन्त्र

उच्चारण करते हुए स्पर्श करें।

व्यापक न्यास - इस न्यास से समस्त देवताओं का सानिध्य प्राप्त होता है।

१— गुरू मन्त्र को मस्तक से पैरों तक उच्चारण करते हुए आठ बार जपे।

२— ॐ परम- पैरों से मस्तक तक आठ बार जपे।

३— ॐ तत्वाय- सामने के भाग पर स्पर्श करते हुए आठ बार मन्त्र जपे।

४— ॐ नारायणाय- उच्चारण करते हुए सिर पर स्पर्श करते हुए आठ बार मन्त्र जपे।

५— ॐ गुरुभ्यो- उच्चारण करते हुए पीछे के भाग पर आठ बार मन्त्र जपे।

६— ॐ नमः- मन्त्र उच्चारण करते हुए पूरे शरीर पर आठ बार मन्त्र उच्चारण करें।

षडंग न्यास - इस न्यास को करने से त्रैलोक्य साधक के वश में हो जाता है।

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः हृदयायै नमः

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः सिर से स्वाहा

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः शिखायै वषट्

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः कवचाय हुम्

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्

इसके बाद "नारायण" बीज को गौरवर्ण का ध्यान करते हुए गुरु स्तोत्र (पेज) का पाठ करें।

इसके बाद "गुरुभ्यो" बीज का शुक्ल वर्ण का ध्यान करते हुए निम्न श्लोक का उच्चारण करें।

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्समुद्रं धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्। श्रुति-शिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्तिं शमिततिमिरशोक श्रीगुरू भावयामि॥ हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्। ध्यायेद्गुरू चन्द्रशिलाप्रकाशं चित्पुस्तकाभीष्टवरंदधानम्॥

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्समुद्रं घृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्। श्रुतिशिरसि-विभान्तं बोधमार्तण्डमूर्ति शमिततिमिरशोक श्रीगुरू भावयामि॥ हृदंबुजे-कर्णिकम-ध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्। ध्यायेद्गुरू चन्द्रशिलाप्रकाशं चित्पुस्तकामीष्टवरंदधानम्॥

इसके बाद "नमः" बीज मन्त्र का उच्चारण करते हुए निम्न पाठ करें।

ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्वमस्यादिल-क्ष्यम्। एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरु तं नमामि॥

इसके बाद मूल षडंग न्यास करें।

बीज	कर-न्यास	अंग न्यास
ॐ परम	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ तत्वाय	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ नारायणाय	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ गुरुभ्यो	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र त्रयाय वौषट्
ॐ परम तत्वाय	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः -	अस्त्राय फट्।

नारायणाय गुरुभ्यो नमः

व्यापक न्यास

ॐ ॐ नमः शिरसि ॐ प नमः नेत्रयोः ॐ र नमः ललाटे ॐ म नमः ग्रीवा ॐ त नमः भ्रुवौ ॐ त्वा नमः कर्णयोः ॐ य नमः गण्डयोः ॐ ना नमः मुखे। ॐ रा नमः दन्त-पंक्तयोः ॐ य नमः जिह्वायां ॐ णा नमः स्कन्धयोः ॐ य नमः कण्ठे ॐ गु नमः भुजयोः ॐ रू नमः हृदि ॐ भ्यो नमः पार्श्वयोः ॐ न नमः पृष्ठे ॐ मः नमः नाभौ

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः सर्वांगे

दिक् न्यास

ॐ ॐ प्राच्यै नमः ॐ परम आग्नेय्यै नमः ॐ तत्वाय दक्षिणायै नमः ॐ नारायणाय नैर्ऋत्यै नमः ॐ गुरुभ्यो प्रतीच्यै नमः ॐ नमः वायव्यै नमः ॐ परमतत्वाय नारायणाय ऊर्ध्वायै नमः ॐ गुरुभ्यो नम भूम्यै नमः

इसके बाद मानस पूजन करें।

जप समर्पण मंत्र द्वारा जप समर्पण करें।

श्री गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द प्रयोग

"स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी साधना प्रयोग" को सम्पन्न कर हम सभी सन्यासी शिष्यों ने इस पूर्णता को प्राप्त की विशेष रूप से स्वामी निखिलेश्वरान-न्दजी के लिए ही यह प्रयोग विधि बनाई गई थी, जो प्रयोग विधि महा तेजस्वी योगीराज महारूपा जी से प्राप्त हुई थी, और जिसके माध्यम से साधनाओं में सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्त करने में हम लोगों ने सफलता पाई थी,

विनियोग

ॐ अस्य श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानन्द मंत्रस्य भगवान श्री महारूपा ऋषि गायत्री छन्द निखिलेश्वरानन्द योगीश्वर्यै, क्लीं बीजम्, श्रीं शक्ति ऐं कीलकं, प्रणवो ॐ व्यापक मम समस्त क्लेश परिहारार्थ चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धयर्थे मंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

श्री महारूपा ऋषये नमः - शिरसि । गायत्री छन्द से नमः - मुखे । निखिलेश्वरानन्द ऋषिभ्यो नमः - हृदि । श्रीं शक्तये नमः - नाभौ । क्लीं बीजाय नमः - गुह्ये। ऐं - कीलकाय नमः - पादयोः । ॐ व्यापकाय नमः - सर्वांगें । मम समस्त क्लेश परिहारार्थं चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धयर्थे मंत्र जपे विनियोगाय नमः — पुष्पांजली ।

षडंग न्यास	कर-न्यास	अंग न्यास
ॐ ऐं श्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
प्राणात्मन	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
"निं"	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्व सिद्धि प्रदाय	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हूं
निखिलेश्वरानंदाय	कनिष्ठाकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमः	कर-तल-कर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इसके बाद मानस पूजन करें.

मंत्र

ॐ ऐं श्रीं क्लीं प्राणात्मन "निं" सर्व सिद्धि प्रदाय निखिलेश्वरानंदाय नमः
(सवा लाख मंत्र जप से सिद्धि)

प्रति दिन इस स्तवन का पाठ करना चाहिए, अथवा सोमवार और गुरूवार को तो निश्चय ही इसका पाठ कर बाद में ही अन्न जल ग्रहण करना चाहिए।

निखिलेश्वरानंद पंच रत्न स्तवन -- (पेज ५ का पाठ करें)

देह सूक्ष्म प्रयोग

उपरोक्त स्तवन पाठ के बाद निम्न प्रकार से देह सूक्ष्म प्रयोग करें।

साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि मैं अमुक गौत्र, अमुक नाम का शिष्य अपने देह की रक्षा करता हुआ, अपने स्थूल देह को सूक्ष्म देह में परिवर्तित कर समस्त ब्रह्माण्ड में विचरण करने की सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए परम पूज्य गुरूदेव को और उनकी समस्त शक्तियों उनके समस्त ज्ञान, और उनकी समस्त सिद्धियों के साथ मैं उन्हें अपने शरीर में समाहित करता हूँ।

गुरूदेव शिरः पातु हृदयं निखिलेश्वरं: ।
कंठं पातु महायोगी वदनं सर्व-दृग्-विभुः ।
करो मे पातु पूर्णात्मा पादो रक्षतु स्वामिनः ।
सर्वांगं सर्वदा पातु परं ब्रह्म सनातनम् ।
यः पठेद् गुरू कवचं ऋषि-न्यास पुरः सरम् ।
स ब्रह्म ज्ञानमासाद्य साक्षात् ब्रह्म मयो भवेत् ।
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि ।
कण्ठे दक्षिणे बाहौ सर्व सिद्धिश्वरो भवेत् ।
इत्येतत् परमः गुरू कवचं यः प्रकाशितम् ।
दद्यात् प्रियाय शिष्याय-भक्ताय प्रिय धीमते ।

इस प्रकार साधक इस स्तोत्र कवच का पाठ कर दोनों हाथ जोड़ कर गुरूदेव के चित्र या उनकी पादुका के सामने भक्तिभाव के साथ प्रणाम करे-

करूणामय ! दीनेश ! तवाहं शरणं गतः ।
त्वत्-पदाम्भोरुहच्छायां देहि मूर्ध्नि यशोधन ॥

इस प्रकार साधना और प्रयोग सम्पन्न करने के बाद जब गुरू प्रसन्न होते है, तो उनके चित्र से या उसकी पादुका से (यदि वे साक्षात उपस्थित हो तो उनके मुंह से) शब्द उच्चरित होते हैं—

उत्तिष्ठ वत्स। मुक्तोऽसि ब्रह्म-ज्ञान-परो भव।
जितेन्द्रियः सत्य-वादी बलारोग्यं सदास्तु ते॥

यदि पूज्य गुरूदेव सशरीर सामने उपस्थित न हो तो साधक ऐसा अनुभव करे, कि पूज्य गुरूदेव उसे ऐसा ही आशीर्वाद दे रहे है।

अर्थात् हे पुत्र, हे शिष्य, हे आत्मीय, उठो, तुम मुक्त हो मेरे शिष्य रहते हुए ब्रह्म ज्ञान का अध्ययन करो तुम इन्द्रियों पर अपने विकारो और बुद्धि पर नियंत्रण करते हुए सत्यवादी बने रहो, और चुनौतियों का दृढ़ता के साथ सामना करो। बल और आरोग्य हमेशा तुम्हारे साथ रहे और तुम पूर्णता प्राप्त करो।

इसके बाद साधक खडे हो कर पूर्ण भक्ति भाव से गुरूदेव की आरती सम्पन्न करे और गुरूदेव को समर्पित किया हुआ प्रसाद स्वयं तथा अपने परिवार को दे, तथा गुरूदेव का आज्ञाकारी हो कर देवता के समान भूमण्डल पर विचरण करता हुआ, उनके आदर्शों का पालन करे।

श्री. गुरु साधना तत्व

समस्त दोष समाप्ति तथा कुण्डलिनी चैतन्य प्रयोग

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार अश्विन त्रयोदसी गुरू सिद्धि दिवस है। यह अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण दिवस हैं, क्योंकि पूरे वर्ष में यही एक ऐसा दिन है, जब गुरू तत्व की प्राप्ति हो सकती है, यही एक ऐसा दिवस है, जब सारे शरीर में चैतन्यता प्राप्त हो सकती है और कुण्डलिनी जागरण की उर्द्धगामी प्रक्रिया का प्रारम्भ होता हैं। इस दिन प्रत्येक साधक के लिए साधना करना अनिवार्य बताया है क्योंकि सिद्धाश्रम के योगियों के अनुसार इस दिन स्वगुरू, आत्मगुरू परमगुरू और पारमेष्ठी गुरू — अपने सुक्ष्म शरीर से सर्वत्र विचरण करते रहते हैं और जो भी साधक इसी दिन गुरू तत्व साधना सम्पन्न करता है, उसे पूर्ण चैतन्यता प्रदान करते हैं।

चैतन्य सिद्धि

तापनीयोपनिषद में बताया गया है, कि जब तक साधक को चैतन्य सिद्धि नहीं हो जाती, तब तक उसे सफलता प्राप्त हो ही नहीं सकती। स्वामी विवेकानन्द कई वर्षो से रामकृष्ण परमहंस के सत्संग में रह कर काली साधना सम्पन्न कर रहे थे, उन्होने काली की मूर्ति को प्राप्त किया, पीतल की उस मूर्ति में विधि विधान के साथ पूजन किया, प्राण प्रतिष्ठा की और महाकाल संहिता से अनुसार उसका पूजन अर्चन चिन्तन, मनन और साधना संपन्न करने लगे।

इस प्रकार पूरे पांच नवरात्र व्यतीत हो गये, पर न तो काली के दर्शन हुए और न किसी प्रकार की अनुभूति ही हुई। उन्होंने पुन: अपने आप को टटोला कहीं मैं स्वयं तो गलती नहीं कर रहा हूं, उन्होंने रामकृष्ण परमहंस की बताई हुई विधि का पुन: अध्ययन किया, मंत्र को पुन: टटोला और पूरी पूजा अर्चना को ध्यान से अध्ययन किया तो उन्हें कहीं पर भी कोई त्रुटी दिखाई नहीं दी।

वे अत्यन्त क्षुब्ध हो उठे, गुरू रामकृष्ण परमहंस के पास गए, रामकृष्ण परमहंस ने कहा तुझे दर्शन हो ही नहीं सकते, क्यों कि उस मूर्ति में तो तूने प्राण प्रतिष्ठा कर दी परंतु तेरा शरीर तो अबी तक पूरा जड़ ही बना हुआ है, उसमें किसी प्रकार की चैतन्यता नहीं हैं, और एक जड़ को एक निष्प्राण व्यक्ति को मां के दर्शन हो ही कैसे सकते हैं?

विवेकानन्द हतप्रभ रह गये, "बोले क्या अभी तक मैं जड़ ही हूं, मै तो चलता

फिरता उठता बैठता खाता पिता सब कुछ क्रियाएं सम्पन्न करता हूं, फिर मैं जड़ किस प्रकार हूं?"

रामकृष्ण ने उत्तर दिया, खाना पीना या चलना फिरना तो शरीर की गति है। जीव की गति चैतन्यता है, और यह चैतन्यता एक प्रकार की पूर्ण दीक्षा है यह तभी प्राप्त हो सकती हैं, जब तुम स्वयं गुरू से निवेदन करो गुरू चल कर के इस प्रकार या इसके लिए प्रेरित नहीं करेगा, यह तो तुम्हारी आन्तरिक भावना होनी चाहिए, ऐसी आन्तरिक भावना का उदय होने पर ही तुम अपने शरीर को चैतन्यता प्रदान करने के लिए गुरू से प्रार्थना करो और तभी गुरू तुम्हें तथा तुम्हारे जीवन को चैतन्यता प्रदान करेंगे, पर इससे पूर्व गुरू सिद्धि दिवस की प्रतीक्षा करों, उस दिन चैतन्य सिद्धि के लिए जो विधान महाकाल संहिता में है, उसके अनुसार क्रिया सम्पन्न करो और उसके बाद गुरू के सामने जा कर चैतन्य होने की इच्छा प्रगट करो, ये दोनों ही चरण मिल कर पूर्ण चैतन्यता प्रदान कर सकते हैं।

विवेकानन्द उस दिन की प्रतीक्षा करते रहे, जिसे सिद्धाश्रम की भाषा में 'गुरू सिद्धि दिवस' कहा गया है। अश्विन शुक्ल १३ को हर वर्ष गुरू सिद्धि दिवस मनाया जाता हैं, इस दिन विवेकानन्द ने महाकाल संहिता में दी हुई विधि के अनुसार चैतन्य सिद्धि साधना सम्पन्न की, और एक सप्ताह बाद ही अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस के सामने खड़े हो कर निवेदन किया कि मैं आप से अपने जीव की चैतन्य सिद्धि प्राप्त करने का इच्छुक हूं, कृपया मुझे चैतन्य सिद्धि प्रदान करें।

रामकृष्ण परमहंस ने अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक उसे "चैतन्य सिद्धि दिक्षा" प्रदान की, सामने विवेकानन्द के द्वारा प्राण प्रतिष्ठा की हुई काली की मूर्ति रखी हुई थी, अकस्मात ह्रदय में प्राणों में और चेतना में एक झन्कार सी उत्पन्न हुई, सारा शरीर आनन्द के प्रवाह में उन्मत्त हो गया, और देखा कि सामने महाकाली साक्षात् रूप में बैठी हुई मन्द मन्द मुस्करा रही हैं।

रामकृष्ण परमहंस ने कहा, शास्त्रों में इसका निषेधहै, उनमें कहा गया है कि सामान्य दीक्षा लेने के बाद भी साधक का मन चंचल बना रहता है, वह बराबर विश्वास अविश्वास के झूले में झूलता रहता हैं। गुरू के प्रति श्रद्धा में संदेह असं देह की परछाई में डूबता उतराता रहता हैं, पर यदि वह विविध साधनाएं या किसी एक देवता की साधना सम्पन्न करता रहता है, तो स्वयं ही उसके ह्रदय में चेतना का भाव उदय होता है, और जब वह अपने गुरू से चैतन्य दीक्षा की कामना करता है, या शास्त्रों के अनुसार जब वह चैतन्य दीक्षा सी इच्छा प्रगट करे, तब गुरू अश्विन

त्रयोदशी गुरू सिद्धि दिवस के अवसर पर चैतन्य सिद्धि साधना प्रदान करे, और इसके बाद जब वह पुनः गुरू के सामने उपस्थित हो, तब विशेष विधि से "चैतन्य दीक्षा" प्रदान करे।

और ऐसी दीक्षा प्रादान करते ही उसका सारा शरीर जाग्रत और चैतन्य हो उठता हैं, और उसे इष्ट के साक्षात् दर्शन हो जाते है। उसे साधनाओं में सिद्धि मिलने लग जाती है, और वह सही अर्थो में "सिद्धि पुरूष" बन कर समाज का और देश का कल्याण करनें में समर्थ, सफल हो पाता है।

गुरू सिद्धि दिवस

इसीलिए लगभग सभी शास्त्रों में गुरू सिद्धि दिवस का विशेष महत्व है, और प्रत्येक साधक महाकाल संहिता में वर्णित गुरू साधना सिद्धि को सम्पन्न करता है, जिससे उसके प्राण जाग्रत होने लगते है, और इसके बाद वर्ष में कभी भी जब उसे मिले तो वह सशरीर गुरू के सामने उपस्थित हो कर चैतन्य सिद्धि दीक्षा प्राप्त करने की इच्छा प्रगट करे, और तब गुरू उसे यह दुर्लभ दीक्षा प्रदान करते है।

इस प्रकार की दीक्षा सामूहिक रूप से नहीं दी जा सकती चाहे शिष्य कितने ही वर्ष गुरू के साथ रहा हो, या कितना ही गुरू का प्रिय हो, परन्तु उसके अनुरोध पर ही गुरू यह चैतन्य दीक्षा प्रदान करते हैं।

चैतन्य साधना सिद्धि (महाकाल संहिता)

जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि साधना जीवन की महत्वपूर्ण दिव्य साधना है, इसके लिए गुरू सिद्धि दिवस को साधक सुबह स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाय और सामने एक लकड़ी के बाजोट पर गणपति की स्थापना कर दे, और संक्षिप्त गणपति पूजन करे।

इसके बाद सामने एक दूसरा लकड़ी का बाजौट बिछा कर उस पर ताम्र पत्र पर अंकित "गुरू चैतन्य यंत्र" स्थापन करे यह यंत्र महाकाल संहिता के अनुसार तीन प्रकार के गुणों से विभूषीत हो।

महाकाल संहिता के अनुसार संसार का सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय "गुरू चैतन्य यंत्र" होता है जो कि ताम्र पत्र पर ही अंकित हो। ताम्र पत्र अंकित होने का विधान इसलिए बताया है, कि उसमें प्राण तत्व का आवाहन किया जाता है औव जब साधक उस ताम्र पत्र में गुरू प्रगटीकरण की भावना दे, तो उसे स्नान करा सके, पौछ सके,

और अन्य अपनी भावनाएं स्पष्ट कर सके, इस वजह से कागज का यंत्र या भोज पत्र पर अंकित यंत्र उपयोगी नही माना गया है।

फिर यह यंत्र योगिनी तंत्र के अनुसार मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, क्योंकि इसकी प्राण प्रतिष्ठा सर्वथा दूसरे प्रकार से की जाती है, अन्य यन्त्रों की प्राण प्रतिष्ठा का विधान वैदिक या मांत्रिक है तो इस यंत्र का विधान पूर्णत: योगिनी तंत्र सिद्धान्तों के आधार पर हो।

तीसरा इस तंत्र की विसेषता यह है, कि यह साधक के नाम से अभिषित औव सिद्ध हो, जिससे कि उस यंत्र का साधक के प्राणों से सीधा संबंध स्थापित हो सके, इसीलिए इस यंत्र का माहात्म्य शास्त्रों में विशेष रूप से बताया गया है और श्रेष्ठ स्तर के साधकों के पूजा स्थान में इस प्रकार के यत्र को सर्वाधिक प्रमुखता दी जाती है।

साधना में इस यंत्र को लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर भव्यता के साथ स्थापित करे और फिर, "ॐ परमत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नम:" मंत्र का उच्चारण करता हुआ, उस यंत्र को जल, दूध, दही, घी, शहद, शक्कर और पुन: जल से स्नान करा कर पौंछ कर उसी बाजोट पर स्थापित करे, और फिर उपरोक्त मंत्र से ही उस पर केसर का तिलक और पुष्प समर्पित करते हुए पुष्पहार पहिनाए. तथा शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती प्रज्वलित करे।

तत्पश्चात योगिनी तंत्र में दिये हुए निम्न गुरू महात्म्य का पांच बार पाठ करें।

श्री गुरू महात्म्य

आदि नाथो महादेवि ! महा-काली हि य: स्मृत:।
गुरू: स एव देवेशि! स्रव मन्त्रे घुना पर:॥
शैवे शाक्ते वैष्णवे च, गाणपत्यै तथैन्दवै।
महा-शैवे चं सौरे च, स गुरू नात्र सशय:॥
मन्त्र देवता स एव स्याननापर: परमेश्वरि।
मन्त्र प्रदान काले हि, मानुषो नग-नन्दिनि:॥
अधिष्ठानं भवेत् तस्य, महा-कालस्य शांकरि।
देवि! ह्यमानुषी चेय, गुरूता नात्र संशय:॥
मन्त्र दाता शिर: पद्मे: यद् ध्यानं कुरूते गुरू:।
तद् ध्यान कुरूते देवि! शिष्योपि शीष पंकजे॥

अतएव महेशा नि! एक एव गुरू: स्मृत:।
अधिष्ठान भवेत् तस्यामानुषस्य महेश्वरि।
महात्म्यं कीर्तित येव सर्व शास्त्रेषु शांकरि॥

इसके बाद साधक गुरू "दिव्य माला" से वही बैठे बैठे गुरू चैतन्य साधना मन्त्र जप करें, इस दिन इस मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करने का विधान है, यह मन्त्र अत्यंत गोपनीय और दुर्लभ कहा गया है, अत: साधक को चाहिए कि मंत्र में पूर्ण भावना रखते हुए यह मंत्र जप करे और मन्त्र जप करते समय अपनी दृष्टि ताम्र पत्र पर अंकित कर गुरू चित्र पर ही स्थापित करें।

गोपनीय चैतन्य सिद्धि त्रैलोक्य विजय मन्त्र

ॐ चित्मंगल हन हन, दह दह, पच पच सर्वज्ञा ज्ञापय स्वाहा।

इसका २१ माला मंत्र जप करने के बाद साधक पुन: गुरू मन्त्र की एक माला जप करें और फिर अपने प्राणों में चैतन्यता प्राप्त करने के लिए निम्न मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करें —

आं ह्रीं क्रौं श्रीं स्वाहा मम गुरू देवताया: प्राणा इह प्राण:, आं ह्रीं क्रौं श्रीं स्वाहा मम गुरू देवताया: जीव इह स्थित:, आं ह्रीं क्रौं श्रीं स्वाहा मम गुरू देवताया: सर्वेन्द्रियाणि, आं ह्रीं क्रौं श्रीं स्वाहा मम गुरू देवताया: वाङ् मनो नयन घ्राण-श्रोत्र' त्वक्-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके बाद साधक वह माला अपने गले में धारण कर ले और गुरू आरती करे, अद्वितीय चैतन्य यंत्र को पूजा स्थान में ही रहने दे, नित्य दीपक और अगरबत्ती उसके सामने प्रज्जवलित करे।

महाकाल संहिता के अनुसार इसके बाद किसी भी दिन व्यक्तिगत रूप से गुरू के सामने पहुँच कर उनसे प्रार्थना कर व्यक्तिगत रूप से चैतन्य सिद्धि दीक्षा प्राप्त कर ले और ऐसा करते ही, उसका सहस्त्रार जाग्रत होने लगता है और वह अपने इष्ट के और समस्त देवी देवताओं के साक्षात दर्शन करने में समर्थ सफल हो पाता है।

पूर्व जन्म कृत दोष निवारणार्थ

शमन–प्रयोग

साधको को कई बार प्रयत्न करने पर भी साधनाओं में सफलता नहीं मिल पाती, इसके लिए पांच चिन्तन स्पष्ट हैं-१) दीक्षा यदि नहीं हुई २) दीक्षा के उपरान्त भी यदि गुरू के प्रति आलोचना, भ्रम और संशय है, ३- जो साधना काल में अपने इष्ट और गुरू में अन्तर समझता है, या पूर्ण हृदय से गुरू-चिन्तन, गुरू पूजा अथवा गुरु मंत्र जाप नहीं कर पाता है, तब भी साधना में सफलता नहीं मिल पाती। ४- गुरू के बताये हुए कार्यों में शिथिलता बरतना या आज्ञा पालन में न्यूनता रखना ५- और पिछले जीवन के अथवा इस जीवन के पाप, दोष अधिक हो,

उपरोक्त कारणों में से प्रथम चार बाधाओं का गुरू की सेवा करने से उनके सानिध्य में रहने से अथवा उनकी आज्ञा का पालन करने से और निरन्तर गुरू मंत्र जप करने से शमन हो जाता है पांचवे प्रकार के दोष को दूर करने के लिए यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त सशक्त, महत्वपूर्ण और दुर्लभ है,

यह प्रयोग गुरूवार को किया जाता है, और आठ गुरूवार तक यह प्रयोग सम्पन्न होता है। गुरुवार के दिन साधक-स्नान कर पीली धोती धारण कर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने पूज्य गुरूदेव का अत्यन्त आकर्षक और सुन्दर चित्र स्थापित करे, तथा उनकी भक्तिभाव से पूजा करे। उन्हें नैवैद्य समर्पित कर, सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करे, घी का दीपक लगावें, और स्वयं "गुरू रुद्राक्ष" माला धारण कर पूर्ण शुद्ध सात्विक भाव से निम्न प्रयोग सम्पन्न करे-

प्रयोग विधि

साधक तीन बार दाहिने हाथ में जल लेकर पी ले और उसके बाद हाथ धो कर प्राणायाम करे और फिर दाहिने हाथ में जल कुंकुम, पुष्प लेकर संकल्प करे।

ॐ विष्णु र्विष्णु देशकालौ संकीर्त्य अमुक गौत्रस्य अमुक शर्माऽहम् ममोपरि इह जन्म गत जन्म स्वकृत परकृत-कारित क्रियमाण कारयिष्यमाण-भूत-प्रेत पिशाचादि मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र त्रोटकादिजन्यसकलदोष बाधा निवृत्ति पूर्वक पूर्ण सिद्धि दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादि-प्राप्तर्थ शमन साघना प्रयोगं करिष्ये।

ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें और गले में पहनी हुई रूद्राक्ष माला से गुरू मंत्र जप करे-

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः

एक माला मंत्र जप करने के बाद उस रूद्राक्ष माला को गले में धारण कर ले और पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने गुरू चित्र लकड़ी के बाजोट पर स्थापित करे, उस पर शुद्ध घृत का दीपक लगावे, और हाथ में जल लेकर संकल्प करे।

ॐ यो में पूर्ववत इह गतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंद मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मे प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु।

इसके बाद पूर्व की ओर मुंह किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

पूर्वदिशाकृत गुरु मंत्र

॥ ॐ श्रीं निखिलेश्वरनंदाय श्रीं ॐ ॥

२- इसके बाद साधक अग्निकोण की ओर मुंह कर बैठ जाय सामने गुरू का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे, इसके बाद हाथ में हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अग्निसाक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शांतिः स्वस्त्ययनचास्तु।

इसके बाद अग्निकोण की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जं करे-

अग्नि दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ऐं ऐं निखिलेश्वरानंदाय ऐं ऐं नमः ॥

३- इसके बाद साधक दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने लकड़ी के बाजोट परश्वेत वस्त्र बिछा कर गुरू चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा दक्षिण नाशयतु साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतुभारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्यनंचास्तु।

इसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रूद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

दक्षिण दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ह्रीं परमतत्वाय निखिलेश्वराय ह्रीं नमः ॥

४- इसके बाद नैऋत्य दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा नैऋत्य रक्षराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शान्तिः स्वस्त्ययनचास्तु।

इसके बाद नैऋत्य कोण की मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रूद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

नैऋत्य दिशा कृत गुरुमंत्र

ॐ क्लीं क्लीं निखिलेश्वरनंदाय क्लीं क्लीं नमः ॥

इसके बाद साधक उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा उत्तर दिशा वरूण साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृत मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शान्तिः स्वस्त्ययनचास्तु।

५- इसके बाद उत्तर दिशा की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी रुद्राक्ष माला से निम्न गुरु मंत्र की एक माला मन्त्र जप करे।

उत्तर दिशाकृत गुरु मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं निखिलेश्वर्यै श्रीं श्रीं श्रीं नमः॥

इसके बाद वायव्य दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा वायव्य यक्षराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु।

६- इसके बाद वायव्य कोण की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र जप करे।

वायव्य दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निखिलेश्वर्यायै श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥

इसके बाद साधक पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू चित्र स्थापित करे, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लगावे, इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वंगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा पश्चिम सोम विप्रराज साक्षी भूतंनिखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरू शांतिः स्वस्त्ययनंचास्तु।

७- इसके बाद पश्चिम दिशा की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला से मंत्र जप करे।

पश्चिम दिशा कृत गुरु मंत्र

॥ॐ क्रीं निखिलेश्वरानंदाय क्रीं ॐ॥

इसके बाद साधक ईशान दिशा की और मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा ईशान पृथुरत्न साक्षी भूत निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं मैं प्रयच्छतु कृत मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु।

८- इसके बाद ईशान कोण की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रूद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप करे-

ईशान दिशा कृत गुरु मंत्र

ॐ ह्रीं निखिलेश्वर्यै ह्रीं नमः॥

९- इसके बाद ऊपर आकाश (अनन्त) दिशा की ओर मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरु का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक लावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे-

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अनन्त ब्रह्मा सष्टिराज साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशायु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरुं शांतिः स्वस्त्ययनंचास्तु।

९- इसके बाद साधक ऊपर आकाश की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र की एक माला से मंत्र जप करे-

अनन्त (आकाश) दिशा कृत गुरु मंत्र

॥ ॐ "निं" निखिलेश्वरौ "निं" नमः ॥

१०- इसके बाद भूमि की ओर नीचा मुंह कर सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर गुरू का चित्र स्थापित करे, उनकी संक्षिप्त पूजा करे और घी का दीपक जलावे इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

ॐ योमे पूर्व गत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अधः नागराजो साक्षी भूतं निखिलेश्वरानंदम् मम समस्त दोष पाप भंजयतु भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करे) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनंचास्तु।

इसके बाद साधक भूमि की ओर मुंह किये किये ही अपने गले में पहनी रुद्राक्ष माला से निम्न गुरू मंत्र जप करे-

अधः (भूमि) दिशाकृत गुरु मन्त्र

ॐ निखिलं निखिलेश्वर्यै निखिलं नमः

इसके बाद साधक इस प्रकार दसों दिशाओं से संबंधित प्रयोग सम्पन्न कर पुनः मूल गुरू मंत्र की एक माला मंत्र जप पूर्व दिशा की ओर मुंह कर करे।

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः

इस प्रकार एक गुरूवार का प्रयोग सम्पन्न होता है। इस प्रकार साधक आठ गुरुवार इसी प्रकार से प्रयोग सम्पन्न कर लें तो यह दुर्लभ और अद्वितीय प्रयोगसंपन्न हो जाता है और इसके बाद साधक पूर्णतः पवित्र, दिव्य, तेजस्वी, प्राणश्चेतना युक्त एवं सिद्धाश्रम का अधिकारी होता हुआ, गुरू का अत्यन्त प्रिय शिष्य हो जाता है, और साथ ही साथ उसके पिछले जीवन और इस जीवन के सभी प्रकार के पाप दोष समाप्त हो जाते है।

यह दुर्लभ प्रयोग प्रत्येक साधक के लिए अपने आप में अद्वितीय है औह साधकों को इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए।

तांत्रोक्त गुरू साधना

यह एक ऐसी साधना है, जिसकी तुलना अन्य उच्च कोटि की साधनाओं से भी नहीं की जा सकती। इस साधना के माध्यम से समस्त दसों महाविद्याओं को सिद्ध किया जा सकता हैं और जो इस साधना को सम्पन्न कर लेता है, उसके लिए जीवन में अन्य कोई साधना बाकी नहीं रहती।

समस्त साधनाओं का प्रारम्भ और समापन गुरु से हो होता है, तंत्र में गुरु को समस्त महाविद्या साधनाओं एवं अन्य देव-साधनाओं में सर्वोच्यता प्रदान की है, उन्हें भगवान शिव का साक्षात स्वरूप माना गया है।

ॐ संविद्रुपाय शान्ताय शंभवे सर्वसाक्षिणे।
सोमनाथाय महसे शिवाय गुरवै नमः॥

गुरुरेकः शिवः प्रोक्तः, सोऽहं देवि न संशयः। गुरुस्त्वमपि देवेशि! मन्त्रे गुरौ देवे, न हि भेदः प्रजायते॥

मन्त्रे वा गुरु-देवे वा न भेदं यस्तु कल्पते।
तस्य तुष्टा जगद्धात्रो, किन्न दद्याद् दिने-दिने॥

भगवान शिव ने स्वयं कहा है - हे देवी, गुरु ही एक मात्र शिव कहे गये है और वह मैं ही हूं, इसमें कोई सन्देह नहीं। तुम जगत जननी अम्बिका स्वरूप हो और तुम भी गुरू मंत्र और दुर्गा हौ, अतः मंत्र गुरु और देवता में कोई भेद नहीं होता, इन तीनों की एकता भावना बुद्धि द्वारा करते रहने से ही मंत्र गुरू और देवता में कोई भेद नहीं करता, उस पर जगदम्बा प्रसन्न हो कर सब कुछ दे देती है।

"पादुका तंत्र" में गुरु को शिव और शक्ति का समन्वय स्वरुप माना है और महर्षि ने गुरु का ध्यान इस प्रकार बताया है-

"निज-शिरसि श्वेत-वर्ण सहस्त्र-दल-कमलकर्णकार्नात-चन्द्रमण्डलोपरि स्व-गुरु शुक्ल-वर्ण शुक्लालंकार-भूषित ज्ञानानन्द - मुदित मानसं सच्चिदानन्द-विग्रह चतुर्भजं ज्ञान-मुद्रा-पुस्तक-वराभय-कर त्रि-नयनं प्रसन्न-वदनेक्षणं सर्व देव-देवं वामांग वामहस्त-धृत-लीला कमलया रक्त-वसना भरणाया स्व-प्रियया दक्ष-भुजेनालिंगं परम-शिव-स्वरुपं शान्तं सुप्रसन्न ध्यात्वा तच्चरण-कमल-युगल-विगलदमृत-धारया स्वात्मानं प्लुतं विभाव्य मानसो पचारैराराध्य" ।

गुरू पूजन प्रारम्भ करते समय सबसे पहले श्री गुरू मण्डलार्चन करना चाहिए-

श्रीनाथादि गुरू-त्रयं गण-पति पीठ-त्रयं भैरव,
सिद्धौघ बटुक-त्रयं पद-युगं दूती-क्रमं मण्डलम्
वीरानष्ट-चतुष्क-षष्टी-नवकं वीरावली-पंचकं
श्रीमन्मालिनि-मन्त्रराज-सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥

उपरोक्त चार पंक्तियां सामान्य पक्तियां नहीं है, अपितु इसके प्रत्येक अक्षर का अपने आप में महत्व है जो कि तांत्रिक षोडशी क्रम में स्पष्ट रूप से बताया गया है।

गुरू ध्यान --

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवितसमुद्रं
घृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्ति
शमिततिमिरशोकं श्रीगुरू भावयामि।
हृदबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितिदिव्यमूर्तिम्।
ध्यायेगुरूं चन्द्रशिलाप्रकाशं चितुस्तकाभीष्टवरं-दधानम्॥
श्री गुरूवैनम: ध्यानं समर्पयामि॥

आवाहन --

ॐ स्वरूपनिरूपण हेतवे श्री गुरवे नम:। ॐ स्वच्छप्रकाश-विमर्श-हेतवे श्री परमगुरूवे नम:। ॐ स्वात्माराम पंजरविलीन-तेजसे श्री परमेष्टि गुरूवे नम:, आवाह्यामि पूजयामि।

आवाहन के बाद गुरूदेर को अपने शरीर के षट चक्रों में स्थापित करें।

श्री शिवानन्दनाथ परा-शक्त्यम्बा मूलाधारे स्थापयामि
श्री सदाशिवानन्दनाथ चिच्छक्त्यम्बा स्वाधिष्ठान चक्रे स्थापयामि
श्री ईश्वरानन्दनाथ आनन्द शक्त्यम्बा मणिपूर चक्रे स्थापयामि
श्री रूद्र-देवानन्दनाथ इच्छा शक्त्यम्बा अनाहत चक्रे स्थापयामि
श्री विष्णु-देवानन्दनाथ-शक्त्यम्बा बिशुद्ध चक्रे स्थापयामि
श्री ब्रह्म-देवानन्दनाथ क्रिया-शक्त्यम्बा सहस्रार चक्रे स्थापयामि

चन्दन-अक्षत

निम्न नौ "सिद्धोघ" का उच्चारण करते हुए गुरू के चरणों पर अक्षत समर्पित करें।

ॐ उन्मनाकाशानन्दनाथ-जलं समर्पयामि
श्री समनाकाशानन्दनाथ-गंगाजल स्नानं समर्पयामि
व्यापकानंदनाथ-सिद्धयोगाजलं समर्पयामि
शक्त्याकाशानंदनाथ-चन्दनं समर्पयामि
ध्वन्याकाशानंदनाथ-कुं कु मं समर्पयामि
ध्वनिमात्राकाशानंदनाथ-केशरं समर्पयामि
अनाहताकाशानंदनाथ-अष्टगन्धं समर्पयामि
विन्द्वाकाशानंदनाथ-अक्षतं समर्पयामि
द्वान्द्वाकाशानंदनाथ-सर्वोपचारार्थे समर्पयामि

पुष्प-बिल्व-पत्र

ॐ ह्रीं श्रीं हंस: सोहं-स्वरूप-निरूपण हेतवे स्व-गुरूं-पुष्पंसमर्पयामि

ॐ सोह हंस: शिव-स्वच्छ-प्रकाश-विमर्श हेतवे परमगुरू-बिल्व पत्रं समर्पयामि

ॐ हंस: शिव: सोहं हंस: स्वात्माराम-परमानंद पंजरविलिन-तेजसे परमेष्ठि-गुरूं "हृदय पुष्पं" समर्पयामि

दीप

श्री महादर्मनाम्बा सिद्ध ज्योति समर्पयामि। श्री सुन्दर्यम्बा सिद्ध प्रकाशं समर्पयामि। श्री करालाम्बिका सिद्ध दीप समर्पयामि। श्री त्रिबाणाम्बा सिद्ध ज्ञान दीप समर्पयामि। श्री भीमाम्बा सिद्ध हृदय दीप समर्पयामि। श्री कराल्याम्बा सिद्ध सिद्ध दीप समर्पयामि । श्री खराननाम्बा सिद्ध तिमर नाश दीप समर्पयामि । श्री विधीशालीनाम्बा पूर्ण दीप समर्पयामि

नीराजन

इसके बाद ताम्र पात्र में जल, कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प लेकर गुरू चरणों में समर्पित करें-

श्री सोममण्डल नीराजनं समर्पयामि। श्री सूर्यमण्डल नीराजनं समर्पयामि । श्री अग्नि मण्डल नीराजनं समर्पयामि । श्री ज्ञान मण्डल नीराजनं समर्पयामि। श्री ब्रह्म मण्डल नीराजनं समर्पयामि।

तत्पश्चात् अपनें दोनों हाथों में पुष्प लेकर निम्न "पंच पचिका" उच्चारण करते हुए इन दिव्य महाविद्याओं की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें-

१- पंच लक्ष्म्यै:- (१) श्री विद्या-लक्ष्म्यम्बा, (२) श्री एकाक्षर-लक्ष्म्यम्बा, (३) श्री महालक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा, (४) श्री त्रिशक्ति-लक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा, (५) श्री सर्व-साम्राज्य-लक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा।

२- पंच-कोश- (१) श्री विद्या-कोशाम्बा, (२) श्री पर-ज्योति:- कोशाम्बा, (३) श्रीपरि-निष्कल-शाम्भवी-कोशाम्बा, (४) श्री अजपा-कोशाम्बा, (५) श्री मातृका-कोशाम्बा।

३- पंच कल्पलता - (१) श्री विद्या-कल्पलताम्बा (२) श्रीत्वरिता-कल्पलताम्बा (३) श्रीपरि-जातेश्वरी कल्पलताम्बा (४) श्री त्रिपुटा-कल्पलताम्बा (५) श्रीपंच-बागेश्वेरी-कल्पलताम्बा।

४- पंच-कामदुघा- (१) श्री विद्या-कामदुघाम्बा (२) श्री अमृतपीठैश्वरी-कामदु-घाम्बा (३) श्री सुधासू कामदुघाम्बा, (४) श्री अमृतेश्वरि-कामदुघाम्बा (५) श्री अन्नपूर्णा-कामदुघाम्बा।

५- पंच-रत्नविद्या- (१) श्री विद्या-रत्नाम्बा (२) श्री सिद्धलक्ष्मी-रत्नाम्बा (३) श्रीमातंगेश्वरी-रत्नाम्बा (४) श्री भुवनेश्वरी-रत्नाम्बा (५) श्री वाराही-रत्नाम्बा।

उपरोक्त "पंच-पचिका" विश्व की श्रेष्ठ साधनाएं है और इन साधनाओं की प्राप्ति के लिए ही गुरूदेव से प्रार्थना की जाती है, इसमें प्रत्येक साधना का उच्चारण कर "प्राप्तिं प्रार्थयेत्" बोंलना चाहिए, उदाहरण के लिए "पंच लक्ष्म्यै" में पहली साधना "श्री विद्या लक्ष्म्यम्बा प्राप्तिं प्रार्थयेत्" उच्चारण करना चहिए, इसी प्रकार से अन्य स्थान पर भी उच्चारण करना चाहिए।

श्री मन्मालिनी

अंत में तीन बार श्रीमन्मालिनी का उच्चारण करना चाहिए जिससे कि गुरूदेव की शक्ति, तेज और सम्पूर्ण साधनाएं पूर्णता के साथ प्राप्त हो सके।

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अ: कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंस: सो ऽ हं गुरूदेवायै नम:।

अन्त में हाथ जोड़ कर गुरूदेव की प्रार्थना स्तुति करें।

लोक-वीरं महान्पूज्यं, सर्व-रक्षा-करं विभुम्
शिष्य-हृदयानन्दं, शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥१॥

प्रि-पूज्यं विश्व-वन्द्यं विष्णु-शम्भौ: प्रियं सुतम्।
क्षिप्र-प्रसाद-निरतं, शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥२॥

मत्त-मात्तंग-गमनं कारूण्यामृत-पूरितम्।
सर्व-विघ्न-हरं देवं शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥३॥

अस्मत्-कुलेश्वरं देवं अस्मच्छत्रु-विनाशनम्।
अस्मादिष्ट-प्रदातारं शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥४॥

यस्य धन्वन्तरिर्माता, पिता रूद्रौ भिषक-तम:
तं शास्तामहं वन्दे, महा-वैद्य दया-निधिम्॥५॥

समर्पण

देवनाथ गुरौस्वामिन् देशिकस्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो पूजा पूर्णतरां कुरू॥
अनया पूजया श्री गुरू: प्रीयन्ताम्। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु॥

योग की सिद्धियां

ब्रह्मवैवर्त पुराण में निम्नलिखित अठारह सिद्धियों के नाम बताते हुए स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ये सिद्धियां तांत्रोक्त रुप से गुरु पूजन कर गुरु साधना करने से ही प्राप्त हो सकती हैं।

अणिमा - शरीर को अणु से समान सूक्ष्म बनाने की शक्ति। **महिमा** - शरीर को बहुत बड़ा बनाने की शक्ति । **लघिमा** - शरीर को बहुत हलका बनाने की शक्ति प्राप्ति - सब कुछ प्राप्त करने की शक्ति। **प्राकाम्य** - इस सिद्धि से सारे मनोरथ पूरे हो जाते है। **ईशित्व** - सर्वव्यापकता प्राप्त करने की शक्ति। **वशित्व** - सबको वश में करने की शक्ति। **कामावसायिता** - जहां जाना हो वहां तुरन्त पहुँच जाने की शक्ति। **सर्वज्ञ** - संसार के सारे पदार्थों को और सारी घटनाओं को सुनने की शक्ति। **परकाय प्रवेश** - किसी जीवित या मृत प्राणी के शरीर में प्रवेश करने की शक्ति। **वाकसिद्धि** - वरदान, आशिर्वाद , शाप आदि देने की शक्ति। **श्रीष्टी** - पदार्थों की रचना करने की शक्ति। **संहार** - प्राणियों अथवा वस्तुओं को नष्ट करने की शक्ति। **ईश्वर** - सर्व शक्तिमान होना। **अमरत्व** -

अमर होना अर्थात मृत्यु पर विजय पाना। **सर्वांग सिद्धि** - सारी सिद्धियां प्राप्त करना। **कल्पवृक्षत्व** - कल्पवृक्ष की भांती किसी को भी उसकी मनचाही वसतु उपलब्ध कराने की शक्ति



शक्ति चक्र

॥ नमः निखिलेश्वर्यायै ॥

ॐ नमः निखिलेश्वर्यायै कल्याण्यै ते नमो नमः।
नमस्ते रुद्र रूपिण्यै ब्रह्म मूर्त्यै नमो नमः॥१॥

नमस्ते क्लेश हारिण्यै मंगलायै नमो नमः।
हरति सर्व व्याधिनां श्रेष्ठ ऋध्यै नमो नमः॥२॥

शिष्यत्व विष नाशिन्यै पूर्णतायै नमोस्तुते।
त्रिविध ताप संहर्त्यै ज्ञान दात्र्यै नमो नमः॥३॥

शांति सौभाग्य कारिण्यै शुद्ध मूर्त्यै नमोस्तुते।
क्षमावर्त्यै सुधावर्त्यै तेज वर्त्यै नमो नमः॥४॥

नमस्ते मंत्र रूपिण्यै तंत्र रूपे नमोस्तुते।
ज्योतिषं ज्ञान वैराग्यं पूर्ण दिव्यै नमो नमः॥५॥

य इदं पठतं स्तोत्रं श्रृणुया श्रद्धयान्वितं।
सर्व पाप विमुच्यन्ते सिद्धयोगिश्च संभवे॥१॥

रोगस्थो रोगं तुं मुच्येत् विपदा त्राणया दपि।
सर्व सिद्धि भवेतस्य दिव्य देह श्च संभवे॥२॥

निखिलेश्वर्य पंचकं य नित्य यो पठते नरः।
सर्वान् कामान् मवाप्नोति सिद्धाश्रमो च वाप्नुयात्॥३॥

संसार की सर्वश्रेष्ठ गोपनीय और दुर्लभ साधना सिद्धि

तांत्रोक्त

गुरू रहस्य सिद्धि

जीवन की इच्छाएं अनन्त है और प्रत्येक इच्छा की पुर्ति के लिए यदि साधना का क्रम अपनाया जाय तो जीवन में वे सारी साधनाएं सम्पन्न नहीं हो सकती, इसके लिए योगियोने अत्यन्त गोपनीय और सूक्ष्म रहस्य तन्त्र स्पष्ट किया है, जिसे 'गुरु रहस्य सिद्धि' कहा गया है।

इस साधना रहस्य को सिद्ध करने पर गुरु के पास जितनी भी साधनाए और सिद्धियां होती है, वे स्वतः ही शिष्य को अनायास प्राप्त हो जाती है और वह उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है। इस साधना रहस्यको सिद्ध करने पर साधक को बावन सिद्धियां प्राप्त हो जाती है, जिनके नाम है—

(१) देव सिद्धि (२) अप्सरा सिद्धि (३) देवांगना सिद्धि (४) सौन्दर्य सिद्धि (५) अनंग सिद्धि (६) ब्रह्माण्ड सिद्धि (७) पितृ सिद्धि (८) भूत-प्रेत पिशाच सिद्धि (९) गन्धर्व सिद्धि (१०) किन्नरी सिद्धि (११) स्वप्न रहस्य सिद्धि (१२) ब्रह्माण्ड भेदन सिद्धि (१३) अदृश्य को देखने की सिद्धि (१४) वायु सिद्धि (१५) गति सिद्धि (१६) कालजय सिद्धि (१७) इच्छा मृत्यु सिद्धि (१८) पौरुष सिद्धि (१९) कुण्डलिनी जागरण सिद्धि (२०) ब्रह्म सिद्धि (२१) सहस्रार भेदन सिद्धि (२२) मनोवांछित कार्य सम्पन्न सिद्धि (२३) अप्सरा वशीकरण सिद्धि (२४) श्राप सिद्धि (२५) वरफलदायक सिद्धि (२६) धन्वन्तरी सिद्धि (२७) अष्ट महालक्ष्मी सिद्धि (२८) बावन भैरव सिद्धि (२९) महाविद्या सिद्धि (३०) गुरू सिद्धि (३१) गुरू आत्म सिद्धि (३२) गुरू प्राणश्चेतना सिद्धि (३३) जन्म जन्मान्तर सिद्धि (३४) भूतकाल सिद्धि (३५) भविष्य दर्शन सिद्धि (३६) शून्य पदार्थ प्राप्ति सिद्धि (३७) पदार्थ परिवर्तन सिद्धि (३८) स्वर्ण सिद्धि (३९) पारस सिद्धि (४०) मोक्षप्रदायक सिद्धि (४१) निर्जल निराहार सिद्धि (४२) सौन्दर्य सिद्ध (४३) पूर्वजन्म सिद्धि (४४) भावी पुनर्जन्म सिद्धि (४५) अखण्ड लक्ष्मी सिद्धि (४६) ज्ञान चेतना सिद्धि (४७) अणिमा-सिद्धि (४८) लघु सिद्धि (४९) दीर्घत्व सिद्धि (५०) पूर्ण प्रकाण्ड सिद्धि (५१) मनोवांछित सिद्धि (५२) सूर्य रहस्य सिद्धि।

इस प्रकार इस एक साधना के माध्यम से उच्चकोटि का योगी और पूर्ण

गृहस्थ बन कर अपने जीवन में उन सभी तथ्यों, रहस्यों, सुविधाओं को प्राप्त कर सकता है जिसके माध्यम से उसके जीवन में पूर्णता आती है।

इस साधना को सम्पन्न करने के ६ नियम है—

१— साधक निरन्तर गुरू सेवा में रहें, और उनके चरणों का ध्यान करते हुए पूर्णतः उसमें अपने आपको विसर्जित कर दें।

२— गुरू जो भी आज्ञा दे, उस आज्ञा का पूर्णता के साथ बिना किसी अहंकार या विलम्ब किये पालन करे।

३— गुरू जो भी आज्ञा दे उसे अपने प्राणों की शक्ति लगाकर के पूर्ण करे।

४— गुरू की उस हर इच्छा को पूर्ण करने का प्रयत्न करे जो वे कहें।

५— निरन्तर गुरू मन्त्र जाप मुंह से चलता ही रहे, उठते बैठते, खाते पीते, सोते जागते गुरू मन्त्र का जाप निरन्तर बना रहना चाहिए।

६— अपने आपको पूर्ण रूप से गुरू के चरणों में समर्पित कर दें और वे जिस प्रकार से भी शिष्य का उपयोग करे उसी में शिष्य अपना सौभाग्य समझे।

ऐसी स्थिति को ही "तुरीयावस्था" कहते है और यह स्थिति गुरू साधना के लिए उपयुक्त है।

गुरू रहस्य प्रयोग

इस साधना में दो उपकरणों की नितान्त आवश्यक होती है जिसमें "गुरु रहस्य तन्त्र" और "गुरू सिद्ध माला" होती है, यह माला विशेष रूप से मन्त्र सिद्ध होती है जो कि अपने आप में परम दुर्लभ कही गई है।

साधक को चाहिए कि वह अपने गुरू से इस प्रकार की दुर्लभ माला को प्राप्त करे जो रहस्य तन्त्र से सिद्ध और प्राण संजीवन क्रिया से अनुप्राणित हो, इस प्रकार की माला अत्यन्त ही दुर्लभ होती है, जिसे शिष्य को चाहिए कि वह उसे गले में धारण किये रहे, यह माला गुरू स्वयं अपने हाथों से संजीवनी क्रिया सिद्ध कर सांख्यायन तन्त्र में बताई हुई विधि के अनुसार संजीवन सिद्ध करें।

साधक को चाहिए कि वह अपने गुरू से इस प्रकार की दुर्लभ माला को प्राप्त करे जो रहस्य तन्त्र से सिद्ध और प्राण संजीवन क्रिया से अनुप्राणित हो, इस प्रकार की माला अत्यन्त ही दुर्लभ होती है, जिसे शिष्य को चाहिए कि वह उसे गले में धारण किये रहे, यह माला गुरू स्वयं अपने हाथों से संजीवनी क्रिया सिद्ध कर सांख्यायन तन्त्र में बताई हुई विधि के अनुसार संजीवन सिद्ध करें।

गुरू मन्त्र

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

इसके बाद गुरूस्तोत्र का पाठ करें और अन्त में आरती करें।

—: गुरु वंदना :—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु। न्यून सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ध्यानमूलं गुरुर्मूर्ति पूजा मूलं गुरु—पदं। मंत्र—मूलं, गुरुर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु—कृपा॥

यो गुरु:स शिवः प्रोक्तः, य. शिवः स गुरुः स्मृतः। तस्माद हि गुरो:भक्ति मुक्तिच दायिनी॥

ब्रम्हा विष्णुश्च रुद्रश्च सर्वाश्च पितृ देवता। तिष्ठन्ति श्री गुरो:पाद पदमार्चित जले शुभे॥

हेतवे जगतामेव संसारार्णवसेतवे। प्रभवे सर्वविद्यानां गुरवे नम॥

त्वं पिता च मे माता त्वं बंधुस्त्वं च देवता। संसारप्रतिबोधार्थं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन माती तत। यदानन्देन नन्दान्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

यदङ घ्रिकमलव्द व्दं व्दं व्दं तापनिवारकम्। तारक सर्वदा ऽ ऽ पम्दयः श्रीगुरु प्रणमाम्यहम॥

वन्दे गुरुपदव्द व्द वाग्मनश्चित्तगोचरम। श्वेतरक्ताप्रभाभित्र, शिवशक्त्यात्मक परम॥

गुकारं च गुणातीत रुकारं रुपवर्जितम। गूणातीतस्रुष दद्यात्स गुरु स्मृतः॥

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपति पीठत्रयं भैरव सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुग दूतीक्रम मण्डलम।

वीरानष्ट-चतुष्क-षष्टि-नवकं वीरावली-पचकं श्रीमन्मालिनि-मंन्त्रराज-सहित वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥

सर्वश्रुतिशिरोरत्न विराजितपदांबुः। वेदान्तुम्बुजसूर्या यस्तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

यस्य स्मरणमात्रेण ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम। य एवं सर्वसंप्राप्तिस्तस्मै श्री गुरवे

नमः॥

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीत निरंजनम। नादाबिंदुकलातती तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

स्थावरं जंगम चैव चराचरम। व्याप्त येन जगत्सर्व तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

ज्ञानशक्तिसमारुस्तत्वमालाविभूषितः। भुक्तिमुक्तिप्रदाता यस्तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

अनेकजन्मसंप्राप्त सर्वकर्मविदाहिने। स्वात्मज्ञानप्रभावेण तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः। तत्त्वं ज्ञानत्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

मन्नाथ श्रीजगन्नाथो मदगूरुस्त्रिजगदगुरु। ममात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

गुरुरादिरनादिश्च गुरु परमदैवतम। गुरो परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

श्री सद्गुरू स्तोत्रम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।१।

अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्-पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।२।

अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया।
चक्षु रुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः।३।

स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं येन कृत्स्नं चराचरम्।
तत्-पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।४।

चिद्-रूपेण परि-व्याप्तं त्रैल्यौक्यं स-चराचरं।
तत्-पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।५।

सर्व-श्रुति-शिरो-रत्न-समुद्भासित-मूर्तये।
वेदान्ताम्बुज-सूर्याय तस्मै श्रीगुरवे नमः।६।

चैतन्य : शाश्वतः शान्तो व्योमातीतो निरंजनः।
बिन्दु - नाद-कलातीतस्तस्मै श्री गुरवे नमः।७।

ज्ञान-शक्ति-समारूढस्तत्व-माला-विभूषितः।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः।८।

अनेक-जन्म सम्प्राप्त कर्मबंधन - विदाहिने।
आत्म-ज्ञानाग्नि-दानेन तस्मे श्रीगुरवे नमः।६।

शोषणं भव-सिन्धोश्च प्रापणं सार-सम्पदः।
यस्य पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवे नमः।१०।

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः।
तत्व-ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः।११।

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्-गुरुः श्रीजगद्गुरुः।
मदात्मा सर्व-भूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः।१२।

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परम - दैवतम्।
गुरोःपर-तरं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः।१३।

ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञान-मूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्वमस्यादि-लक्ष्यम्॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्व-धी-साक्षि-भूतम्।
भावातीतं त्रिगुण-रहितं सद्गुरुं तं नमामि।१४।

॥श्री विश्वसार-तन्त्रे श्री सद्-गुरु-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीगुरुगीता

हम अत्यन्त प्रसन्नता के साथ इस अंक में गुरू गीता दे रहे है, यह गुरु गीता अत्यन्त गोपनीय रही है, पर उच्चकोटि के साधकों के लिए यह महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ कही गई है जो साधक या शिष्य नित्य एक बार इसका पाठ करते है, उसे प्रत्येक साधना में सिद्धि प्राप्त होती है, और साथ ही साथ इसकी वजह से गुरु की आत्मा से शिष्य की आत्मा का पूर्ण तादात्म्य स्थापित हो जाता है, फलस्वरुप गुरु की साधना का अंश गुरु की तपस्या का अंश और गुरु के ज्ञान का अंश स्वतः साधक को प्राप्त होने लगता है और वह शीघ्र ही साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करता हुआ, उच्चकोटि का साधक बन जाता है।

सिद्धाश्रम के समस्त साधकों के लिए प्रातःकाल उठ कर गुरु गीता का पाठ करना अनिवार्य हैं।

ॐ अस्य श्रीगुरुगीतास्तोत्रमंत्रस्य भगवान् सदा शिव ऋषिः। नानाविधानि छंदांसि। श्रीगुरुपरमात्मा देवता। हं बीजं। सः शक्तिः। क्रों कीलकं। श्रीगुरुप्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्।

हंसाभ्यां परिवृत्तपत्रकमलैर्दिव्यैर्जगत्कारणै।
विश्वोत्कीर्णमनेकदेहनिलयैः स्वच्छन्दमात्मेच्छया।
तद्द्योतं पदशांभवं तु चरणं दीपांकुरग्राहिणं।
प्रत्यक्षाक्षरविग्रह गुरुपदं ध्यायेद्विभुं शाश्वतम।
मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

सूत उवाच

कैलास शिखरे रम्ये भक्ति संधान नायकम्।
प्रणम्य पार्वती भक्त्या शंकरं पर्यपृच्छत॥१॥

श्री देव्युवाच

ॐ नमो देव देवेश परात्पर जगद्गुरो।
सदाशिव महादेव गुरुदीक्षां प्रदेहि मे॥२॥

केन मार्गेण भो स्वामिन् देहि ब्रह्ममयो भवेत्।
त्वं कृपां कुरु मे स्वामिन् नमामि चरणौ तव॥३॥

ईश्वर उचाव

ममरुपासि देवी त्वं त्वत्प्रीत्यर्थं वदाम्यहम्।
लोकोपकारक:प्रश्नो न केनापि कृत: पुरा॥४॥

दुर्लभं त्रिषु लोकेषु तच्छृणुष्व वदाम्यहम्।
गुरुं बिना ब्रह्म नान्यत् सत्य सत्यं वरानने॥५॥

वेदशास्त्रपुराणानि इतिहासादिकानि च।
मत्रयंत्रादिविद्याश्च स्मृतिरुच्चाटनादिकम्॥६॥

शैवशाक्तागमादीनि अन्यानि विविधानि च।
अपभ्रंशकराणीह जीवानां भ्रांतचेतसाम्॥७॥

यज्ञो व्रतं तपो दान जपस्तीर्थं तथैव च।
गुरुत्त्वमविज्ञाय मूढास्ते चरते जना:॥८॥

गुरुर्बुद्ध्यात्मनो नान्यत् सत्य सत्य न संशय:।
तल्लाभार्थं प्रयत्नेस्तु कर्त्तव्यो हि मनीषिभि:॥९॥

गूढविद्या जगन्माया देहे चाज्ञानसंभवा।
उदय:स्वप्रकाशेन गुरुशब्देन कथ्यते॥१०॥

सर्वपापविशुद्धात्मा श्रीगुरो: पादसेवनात्।
देहि ब्रह्म भवेद्यस्मात् तत्कृपार्थं वदामि ते॥११॥

गुरुपादांबुजं स्मृत्वा जलं शिरसि धारयेत्।
सर्वतीर्थावगाहस्य संप्राप्नोति फलं नर:॥१२॥

शोषणं पापपङ्कस्य दीपवं ज्ञानतेजसाम।
गुरुपादोदकं सम्यक् संसारार्णवतारकम्॥१३॥

अज्ञानमूलहरणं जन्मकर्मनिवारणम्।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं गुरुपादोदकं पिवेत्॥१४॥

गुरो: पादोदकं पीत्वा गुरोरुच्छिष्टभोजनम्।
गुरुमूर्ते: सदा ध्यानं गुरुमंत्रं सदा जपेत्॥१५॥

काशीक्षेत्रं तन्निवासो जाह्नवी चरणोदकम्।
गुरुविश्वेश्वर: साक्षात् तारकं ब्रह्म निश्चितम्॥१६॥

गुरो: पादोदकं युक्त्वाऽसौ सौऽक्षयो वट:।
तीर्थराज: प्रयागश्च गुरुमूर्त्यै नमो नम:॥१७॥

गुरुमूर्ति स्मरेन्नित्यं गुरुनाम सदा जपेत्।
गुरोराज्ञां प्रकुर्वीत गुरोरन्यत्र भावयेत्॥१८॥

गुरुवक्त्रस्थितं ब्रह्म प्राप्यते तत्प्रसादत:।
गुरुर्ध्यानं सदा कुर्यात् कुलस्त्री स्वपतेर्यथा।१९॥

स्वाश्रमं च स्वजातिं च स्वकीर्तिपुष्टिवर्धनम्।
एतत्सर्व परित्यज्य गुरोरन्यत्र भावयेत्॥२०॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां सुलभं परमं पदम्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गुरोराराधनं कुरु॥२१॥

त्रैलोक्ये स्फुटवक्तारो देवाद्यसुरपन्नगा:।
गुरुवक्त्रस्थिता विद्या गुरुभक्त्या तु लभ्यते॥२२॥

गुकारस्त्वन्धकारश्च रुकारस्तेज उच्यते।
अज्ञानग्रासकं ब्रह्म गुरुरेव न संशय॥२३॥

गुकार: प्रथमो वर्णो मायादिगुणभासक:।
रुकारो द्वितीयो ब्रह्म मायाभ्रान्तिविनाशनम्॥२४॥

एवं गुरुपदं श्रेष्ठ देवानामपि दुर्लभम्।
हाहाहूहूगणैश्चैव गन्धर्वैश्च प्रपूज्यते॥२५॥

ध्रु वं तेषा च सर्वेषां नास्ति तत्त्वं गुरो: परम्।
आसनं शयनं वस्त्रं भूषणं वाहनादिकम्॥२६॥

साधकेन प्रदातव्यं गुरुसंतोषकारकम्।
गुरोराराधनं कार्यं स्वजीवित्वं निवेदयेत्॥२७॥

कर्मणा मनसा वाचा नित्यमाराधयेद् गुरुम्।
दीर्घदण्डं नमस्कृत्य निर्लज्जो गुरुसन्निधौ॥२८॥

शरीरमिन्द्रियं प्राणं सद्गुरुभ्यो निवेदयेत्।
आत्मदारादिकं सर्व सद्गुरुभ्यो निवेदयेत्॥२९॥

कृमिकीटभस्मविष्ठा - दुर्गन्धिमलमूत्रकम्।
श्लेष्मरक्त त्वचा मासं वचयेन्न वरानने॥३०॥

संसारवृक्षमारूढाः पतन्तो नरकार्णवे।
येन चैवोद्धृताः सर्वे तस्मै श्रीगुरवे नमः॥३१॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु - गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुदेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥३२॥

हेतवे जगतामेव संसारार्णवसेतवे।
प्रभवे सर्व विद्यानां शंभवे गुरवे नमः॥३३॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥३४॥

त्वं पिता च मे माता त्वं बंधुस्त्वं च देवता।
संसारप्रतिबोधार्थं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥३५॥

यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भाति तत्।
यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः॥३६॥

यस्य स्थित्या सत्यमिदं यद्भाति भानुरुपतः।
प्रियं पुत्राजि यत्प्रीत्या तस्मै श्रीगुरवे नमः॥३७॥

येन चेतयते हीदं चित्तं चेतयते न यम्।
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादि तस्मै श्रीगुरवे नमः॥३८॥

यस्य ज्ञानादिदं विश्वं न दृश्यं भिन्नभेदतः।
सदेकरुपरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः॥३९॥

यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः।
अनन्यभावभावाय तस्मै श्रीगुरवे नमः॥४०॥

यस्य कारणरुपस्य कार्यरुपेण भाति यत्।
कार्यकारणरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः॥४१॥

नानारुपमिदं सर्व न केनाप्यस्ति भिन्नता।
कार्यकारणता चैव तस्मै श्रीगुरवे नमः॥४२॥

यदङ्घ्रिकमलद्वं द्वं द्वंद्वं तापनिवारकम्।
तारकं सर्वदाऽऽपद्भ्यः श्रीगुरुं प्रणमाम्यहम्॥४३॥

शिवे क्रुद्धे गुरुस्त्राता गुरो क्रुद्धे शिवो नहि।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रीगुरू शरणं व्रजेत्॥४४॥

वन्दे गुरुपदद्वंद्व वाग्मनश्चित्तगोचरम्।
श्वेतरक्ताप्रभाभिन्न शिवशक्त्यात्मकं परम्॥४५॥

गुकारं च गुणातीतं रुकारं रुपवर्जितम्।
गुणातीतस्वरूपं च यो दद्यात्स गुरुः स्मृतः॥४६॥

अ - त्रिनेत्रः सर्वसाक्षी अ - चतुर्बाहुरच्युतः।
अ - चतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरुः कथितः प्रिये॥४७॥

अयं मयांजलिर्बद्धो दयासागरवृद्धये।
यदनुग्रहतो जन्तु - श्चित्रसंसारमुक्तिभाक्॥४८॥

श्रीगुरोः परमं रूपं विवेकचक्षुषोऽमृतम्।
मन्दभाग्या न पश्यन्ति अन्धःसूर्योदयं यथा॥४९॥

श्रीनाथचरणद्वंद्वं यस्यां दिशि विराजते।
तस्यै दिशे नमस्कुर्याद् भक्त्या प्रतिदिनं प्रिये॥५०॥

तस्यै दिशे सततमंजलिरेष आर्ये। प्रक्षिप्यते मुखरितो मधुपैर्बुधैश्च। जागर्ति यत्र भगवान् गुरुचक्रवर्ती। विश्वोपयप्रलयनाटकनित्य-साक्षी॥५१॥

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरान् द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपंचकम्
श्रीमन्मालिनिमंत्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥५२॥

अभ्यस्तैः सकलैः सुदीर्घमनिलै-र्व्याधिप्रदैर्दुष्करैः।
प्राणायामशतैरनेककरणैर्दुःखात्मकेर्दुर्जयैः।
यस्मिन्नभ्युदिते विनश्यति बली वायुः स्वयं तत्क्षणात्।
प्राप्तुं तत्सहजं स्वभावमनिशं सेवध्वमेकं गुरुं॥५३॥

स्वदेशिकस्यैव शरीरचिन्तनं भवेदनन्तस्य शिवस्य चिन्तनम्।
स्वदेशिकस्यैव च नामकीर्तनं भवेदनन्तस्य शिवस्य कीर्तनम्॥५४॥

यत्पादरेणुकणिका कापि संसारवारिधेः।
सेतुबंधायते नाथं देशिकं तमुपास्महे॥५५॥

यस्मादनुग्रहं लब्ध्वा महदज्ञानमुत्सृजेत्।
तस्मै श्रीदेशिकेंद्राय नामश्चाभीष्टसिद्धये॥५६॥

पादाब्जं सर्व संसार - दावानलविलाशकम्।
ब्रह्मारंध्रे सिताम्भोज - मध्यस्थं चन्द्रमण्डले॥५७॥

अकथादित्रिरेखाब्जे सहस्त्रदलमण्डले।
हंसपार्श्वत्रिकोणे च स्मरेत्तन्मध्यगं गुरुम्॥५८॥

सकलभुवनसृष्टिः कल्पिताशेषपुष्टिर्निखिलनिगमदृष्टिः
संपदां व्यर्थदृष्टिः।
अवगुणपरिमार्ष्टिस्तत्पदार्थैकदृष्टिर्भवगुणपरमेष्टिर्मोक्षमार्गै
कदृष्टिः॥५९॥

सकलभुवनरंगस्थापनास्तंभयष्टिः सकरुणरसवृष्टिस्तत्त्वमालासमष्टिः।
सकलमयसृष्टिः सच्चिदानन्ददृष्टिर्निवसतु मयि नित्यं श्रीगुरोर्दिव्य-
दृष्टिः॥६०॥

अग्निशुद्धसमं तात ज्वालापरिचकाधियां।
मंत्रराजमिमं मन्येऽहर्निशं पातु मृत्युतः॥६१॥

तदेजति तन्नै जति तद्दूरे तत्समीपके।
तदन्तरस्य सर्वस्व तदु सर्वस्य बाह्यतः॥६२॥

अजोऽहमजरोंऽहं च अनादिनिधिनः स्वयम्।
अविकारश्चिदानन्द अणीयान्महतो महान्॥६३॥

अपूर्वाणां परं नित्यं स्वयंज्योतिर्निरामयम्।
विरजं परमाकाशं ध्रु वमानन्दमव्ययम्॥६४॥

श्रुतिः प्रत्यक्षमैतिह्यमनुमानश्चतुष्टमय्।
यस्य चात्मतपो वेद देशिकं च सदा स्मरेत्॥६५॥

मननं यद्भवं कार्यं तद्वदामि महामते।
साधुत्वं च मया दृष्टवा त्वयि तिष्ठति सांप्रतम्॥६६॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्त येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥६७॥

सर्वश्रुतिशिरोरत्न - विराजितपदांबुजः।
वेदान्ताम्बुजसूर्यो यस्तस्मै श्रीगुरवे नमः॥६८॥

यस्य स्मरणमात्रेण ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम्।
य एव सर्वसंप्राप्तिस्तस्मै श्रीगुरवे तमः॥६९॥

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम्।
नादबिंदुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥७०॥

स्थावरं जंगमं चैव तथा चैव चराचरम्।
व्याप्तं येन जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥७१॥

ज्ञानशक्तिसमारूढस्तत्त्वमालाविभूषितः।
भुक्तिमुक्तिप्रदाता यस्तस्मै श्रीगुरवे नमः॥७२॥

अनेकजन्मसंप्राप्त सर्वकर्म विदाहिने।
स्वात्मज्ञानप्रभावेण तस्मै श्रीगुरवे नमः॥७३॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तप:।
तत्त्वं ज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नम:॥७४॥

मन्नाथ: श्रीजगन्नाथो मद्गुरुस्त्रिजगद्गुरु:।
मामात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नम:॥७५॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति: पूजामूलं गुरो: पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरो:कृपा॥७६॥

गुरुरादिरनादिश्च गुरु: परम दैवतम्।
गुरो:परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नम:॥७७॥

सप्तसागरपर्यन्त - तीर्थस्नादिकं फलम्।
गुरोरड्घ्रिपयोबिंदु - सहस्रांशेन दुर्लभम्॥७८॥

हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रीगुरुं शरणं व्रजेत्॥७९॥

गुरुरेव जगत्सर्व ब्रह्माविष्णुशिवात्मकम्।
गुरो: परतरं नास्ति तस्मात्संपूजयेद् गुरुम्॥८०॥

ज्ञानंविज्ञानसहितं लभ्यते गुरुभक्तित:
गुरो: परतरं नास्ति ध्येयोऽसौ गुरुमार्गिभि:॥८१॥

यस्मात्परतरं नास्ति नेति नेतीति वै श्रुति:।
मनसा वचसा चैव नित्यमाराधयेद् गुरुम्॥८२॥

गुरो: कृपाप्रसादेन बह्मविष्णुसदाशिवा:
समर्था: प्रभवादौ च केवलं गुरुसेवया॥८३॥

देवकिन्नरगंधर्वा: पितरो यक्षचारण:।
मुनयोऽपि न जानन्ति गुरुशुश्रूषणे विधिम्॥८४॥

महाहंकारगर्वेण तपोविद्याबलान्विता:।
संसारकुहरावर्ते घट्यंत्रे यथा घटा:॥८५॥

न मुक्ता देवगंधर्वा: पितरो यक्षकिन्नरा:।
ऋषय: सर्वसिद्धाश्च गुरुसेवापरांमुखा॥८६॥

ध्यान श्रृणु महादेवी सर्वानन्दप्रदायकम्।
सर्वसौख्यकरं नित्यं भुक्तिमुक्ति विधायकम्॥८७॥

श्रीमत्परब्रह्म गुरु स्मरामि श्रीमत्परब्रह्म गुरुं वदामि।
श्रीमत्परब्रह्म गुरुं नमामि श्रीमत्परब्रह्म गुरु भजामि॥८८॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
द्वंद्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरु तं नमामि॥८९॥

नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम्।
नित्यबोधम् चिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्॥९०॥

हृदंबुजे कर्णिकमध्यसंस्थे। सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्।
ध्यायेद्गुरुं चंद्रकलाप्रकाशं चित्पुस्तकाभीष्टवरं दधानम्॥९१॥

श्वेताम्बरं श्वेतविलेपपुष्पं मुक्ताविभूषं मुदितं द्विनेत्रम्।
वामांकपीठस्थितदिव्यशक्तिं मन्दस्मितं सांद्रकृपानिधानम॥९२॥

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधयुक्तम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि॥९३॥

यस्मिन्सृष्टिस्थितिध्वंस - निग्रहानुग्रहात्मकम्।
कृत्यं पंचविधं शश्व - द्भासते तं नमाम्यहम्॥९४॥

प्रात: शिरसि शुक्लाब्जे द्विनेत्र द्विभुजं गुरुम्।
बराभययुतं शातं स्मरेत्तं नामपूर्वकम्॥९५॥

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।
शिवशासनत: शिवशासनत: शिवशासनत:॥९६॥

इदमेव शिवं त्विदमेव शिवं त्विदमेव शिवं त्विदमेव शिवम्।
मम शासनतो मम शासनतो मम शासनतो मम शासनत:॥९७॥

एवंविधं गुरुं ध्यात्वा ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम्।
तत्सद्गुरुप्रसादेन मुक्तोऽहमिति भावयेत्॥९८॥

गुरुदर्शितमार्गेण मनःशुद्धिं तु कारयेत्।
अनित्यं खण्डयेत्सर्वं यत्किंचिदात्मगोचरम्॥९९॥

ज्ञेय सर्वस्वरूपं च ज्ञानम् च मन उच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयसमं कुर्यान् नान्यः पन्था द्वितीयकः॥१००॥

एवम् श्रुत्वा महादेवि गुरुनिन्दां करोति यः।
स याति नरकं घोरं यावच्चंद्रदिवाकरौ॥१०१॥

यावत्कल्पांतको देह - स्तावदेव गुरुं स्मरेत्।
गुरुलोपो न कर्तव्यः स्वच्छंदो यदि वा भवेत्॥१०२॥

हुंकारेण न वक्तव्यम् प्राज्ञैः शिष्यैः कथंचन।
गुरोरग्रे न वक्तव्यमसत्यम् च कदाचन॥१०३॥

गुरु त्वकृत्य हुंकृत्य गुरुं निर्जित्य वादतः।
अरण्ये निर्जले देशे स भवद् ब्रह्मराक्षसः॥१०४॥

मुनिभिः पन्नगैर्वाऽपि सुरैर्वा शापितो यदि।
कालमृत्युभयाद्वापि गुरु रक्षति पार्वति॥१०५॥

अशक्ता हि सुराद्याश्च अशक्ता मुनयस्तथा।
गुरुशापेन ते शीघ्रं क्षय यान्ति न संशयः॥१०६॥

मंत्रराजमिदं देवि गुरुरित्यक्षरद्वयम्।
स्मृतिवेदार्थवाक्येन गुरुः साक्षात्परं पदम्॥१०७॥

श्रुतिस्मृती अविज्ञाय केवलं गुरुसेवकाः।
ते वै सन्यासिनः प्रोक्ता इतरे वेषधारिणः।१०८।

नित्यं ब्रह्म निराकारं निर्गुणं बोधयेत् परम्।
सर्वं ब्रह्म निराभासं दीपो दीपान्तरं यथा।१०९।

गुरोः कृपाप्रसादेन आत्मारामं निरीक्षयेत्।
अनेन गुरुमार्गेण स्वात्मज्ञानं प्रवर्तते।११०।

आब्रह्मस्तंवपर्यन्तम् परमात्मस्वरूपकम्।
स्थावरम् जंगमं चैव प्रणमामि जगन्मयम्।१११।

वन्देऽहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं सदा गुरुम्।
नित्यम् पूर्णं निराकारं निर्गुणं स्वात्मस् स्थितम्।११२।

परात्परतरं ध्येयं नित्यमानन्दकारम्।
हृदयाकाशमध्यस्थ शुद्धस्फटिकसन्निभम्।११३।

स्फटिकप्रतिमारूपं दृश्यते दर्पणे यथा।
तथात्मानि चिदाकारं आनन्दं सोऽहमित्युत।११४।

अंगुष्टमात्रपुरूषं ध्यायतश्चिमयं हृदि।
तत्र स्फुरति भावो यः श्रृणु तं कथयाम्यहम्।११५।

अगोचरं तथाऽगम्यं नामरूपविवर्जितम्।
निःशब्दं तद्विजानीयात् स्वभावं ब्रह्म पार्वति।११६।

यथा गन्धः स्वभावेन कर्पूरकुसुमादिपु।
शीतोष्णादिस्वभावेन तथा ब्रह्म च शाश्वतम्।११७।

स्वयं तथाविधी भूत्वा स्थातव्यं यत्रकुत्रचित्।
कीट्भ्रमरवत्तत्र ध्यानं भवति तादृशम्।११८।

गुरूध्यानं तथा कृत्वा स्वयं ब्रह्ममयो भवेत्।
पिण्डे पदे तथा रूपे मुक्तोऽसौ नात्र संशयः।११९।

श्री पार्वत्युवाच

पिण्डं किं तु महादेव पदं कि सामुदाहृतन्।
रुपातीतं च रूपं किं एतदाख्याहि शंकर।१२०।

श्री महादेव उवाच

पिण्डं कुण्डलिनीशक्तिः पदं हंसमुदाहृतम्।
रूपं बिन्दुरिति ज्ञेय रूपातीतं निरंजनम्।१२१।

पिण्डे मुक्ता पदे मुक्ता रूपे मुक्ता वरानने।
रूपातीते तु ये मुक्ता-स्ते मुक्ता नात्र संशयः।१२२।

स्वयं सर्वमयो भूत्वा परं तत्वं विलोकयेत्।
परात्परतरं नान्यत् सर्वमेतन्निरालयम्।१२३।

तस्यावलोकनं प्राप्य सर्वसंगविवर्जितम्।
एकाकी निःस्पृह शान्त-स्तिष्ठासेत् तत्प्रसादतः।१२४।

लब्धं वाऽथ न लब्धं वा स्वल्पं वा बहुलं तथा।
नष्कामेनैव भोक्तव्यं सदा संतुष्टचेतसा।१२५।

सर्वज्ञपदमित्याहु-र्देही सर्वमयो बुधाः
सदानन्दः सदा शान्तो रमतो यत्रकुत्रचित्।१२६।

यत्रैव तिष्ठते सोऽपि स देशः पुण्यभाजनम्।
मुक्तस्य लक्षणं देवी तवाग्रे कथितं मया।१२७।

उपदेशस्तथा देवि गुरूमार्गेण मुक्तिदः।
गुरुभक्तिस्तथा ध्यानं सकलं तवं कीर्तितम्।१२८।

अनेन यद्भवेत्कार्यं तद्वदामि महामते।
लोकोपकारकं देवि लौकिकं तु न भवायेत्।१२९।

लोकिकात्कर्मणो यान्ति ज्ञानहीना भवार्णवम्।
ज्ञानी तु भावयेत्सर्व कर्म निष्कर्म यत्कृतम्।१३०।

इदं तु भक्तिभावेन पठते श्रृणुते यदि।
लिखित्वा तत्प्रदातव्यं तत्सर्वं सफलं भवेत्।१३१।

गुरुगीतात्मकं देवि शुद्धतत्वं मयोदितम्।
भवव्याधिविनाशार्थं स्वयमेव जपेत्सदा।१३२।

गुरूगीताक्षरैकं तु मंत्रराजमिमं जपेत्।
अन्ये च विविधा मंत्राः कलां नार्हन्ति षोडशीम्।१३३।

अनंतफलमाप्नोति गुरुगीताजपेन तु।
सर्वपापप्रशमनं सर्वदारिद्रयनाशनम्।१३४।

कालमृत्युभयहरं सर्वसंकटनाशनम्।
यक्षराक्षसभूतानां चोरव्याघ्रभयापहम्।१३५।

महाव्याधिहरं सर्वविभूतिसिद्धिदं भवेत्।
अथवा मोहनं वश्यं स्वयमेव जपेत्सदा।१३६।

वस्त्रासने च दारिद्रयं पाषाणे रोगसंभव।
मेदिन्यां दुःखमाप्नोति काष्टे भवति निष्फलम्।१३७।

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि-र्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि।
कुशासने ज्ञानसिद्धिः सर्वसिद्धिस्तु कम्बले।१३८

कुशैर्वा दूर्वया देवि आसने शुभ्रकम्बले।
उपविश्य ततो देवि जपेदेकाग्रमानसः।१३९

ध्येयं शुक्लं च शांत्यर्थं वश्वे रक्तासनं प्रिये।
अभिचारे कृष्णवर्णं पीतवर्णं धनागमे।१४०।

उत्तरे शांतिकामस्तु वश्ये पूर्वमुखो जपेत्।
दक्षिणे मारणं प्रोक्त पश्चिमे च धनागमः।१४१।

मोहनं सर्वभूतानां बंधमोक्षकरं भवेत्।
देवराजप्रियकरं सर्वलोकवशं भवेत्।१४२।

सर्वेषां स्तम्भनकरं गुणानां च विवर्धनम्।
दुष्कर्मनाशनं चंव सुकर्मसिद्धिदं भवेत्।१४३।

असिद्ध साधयेत्कार्यं नवग्रहभयापहम्।
दुःस्वप्ननाशनं चैव सुस्वप्नफलदायकम्।१४४।

सर्वशान्तिकरं नित्यं तथा वंद्य सुपुत्रदम्।
अवैधव्यकरं स्त्रीणां सौभाग्यदायकं सदा।१४५।

आयुरारोग्यऐश्वर्य-पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्।
अकामतः स्त्री विधवा जपान्मोक्षमवाप्नुयात्।१४६।

अवैधव्यं सकामा तु लभते चान्यजन्मनि।
सर्वदुःखमयं विघ्नं नाशयेच्छापहारकम्।१४७।

सर्वबाधाप्रशमनम् धर्मार्थकाममोक्षदम्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।१४८।

कामितस्य कामधेनुः कल्पनाकल्पपादपः।
चिन्तामणिश्चिंतितस्य सर्वमंगलकारकम्।१४९।

मोक्षहेतुर्जपेन्नित्यं मोक्षश्रियमवाप्नुयात्।
भोगकामो जपेद्यो वै तस्य कामफलप्रदम्।१५०।

जपेच्छाक्तश्च सौरश्च गाणपत्यश्च वैष्णवः।
शैवश्च सिद्धिदं देवि सत्यं न संशयः।१५१।

अथ काम्यजपे स्थानं कथयामि वरानने।
सागरे वा सरित्तीरेऽथवा हरिहरालये।१५२।

शक्तितेवालये गोष्ठे सर्वदेवालये शुभे।
वटे च धात्रीमूले वा मठे वृंदावने तथा। १५३।

पवित्रे निर्मल स्थाने नित्यानुष्ठानतोऽपि वा।
निर्वेदनेन मौनेन जपमेत समाचरेत्।१५४।

श्मशाने भयभूमौ तु वटमूलान्तिके तथा।
सिध्यन्ति धौत्तरे मूले चूतवृक्षस्य सन्निधौ।१५५।

गुरुपुत्रो वरं मूर्ख स्तस्य सिध्यन्ति नान्यथा।
शुभकर्माणि सर्वाणि दीक्षाव्रततपांसि च ।१५६।

गुरुपुत्रो वरं मूर्ख स्तस्य सिध्यन्ति नान्यथा।
शुभकर्माणि सर्वाणि दीक्षाव्रततपांसि च ।१५६।

संसारमलनाशार्थं भवपाशनिवृत्तये।
गुरुगीताम्भसि स्नानं तत्त्वज्ञः कुरुते सदा।१५७।

स एव च गुरुः साक्षात् सदा सद्ब्रह्मवित्तमः।
तस्य स्थानानि सर्वाणि पवित्राणि न संशयः ।१५८।

सर्वशुद्धः पवित्रोऽसो स्वभावाद्यत्र तिष्ठति।
तत्र देवगणाः सर्वे क्षेत्रे पीठे वसन्ति हि।१५९।

आसनस्थः शयानो व गच्छंस्तिष्ठिन् वदन्नपि।
अश्वारूढो गजारुढः सुप्तो वा जागृतोऽपि वा।१६०।

शुचिष्मांश्च सदा ज्ञानी गुरुगीताजपेन तु।
तस्य दर्शनमात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते।१६१।

तथैव ज्ञानी जीवात्मा परमात्मनि लोयते।
ऐक्येन रमते ज्ञानी यत्र तत्र दिवानिशम्।१६३।

एवंविधो महामुक्ताः सर्वदा वर्तते बुधः।
तस्य सर्वप्रयत्नेन भावभक्ति करोति यः।१६४।

सर्वसंदेहरहितो मुक्तो भवति पार्वति।
भुक्तिमुक्तिद्वयं तस्य जिह्वाग्रे च सरस्वती । १६५।

अनेन प्राणिनः सर्वे गुरुगीताजपेन तु।
सर्वसिद्धिं प्राप्नुवन्ति भुक्तिं मुक्तिं न संशयः।१६६।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यम् धर्म्य सांख्य मयोदितम्।
गुरुगीतासमं नास्ति सत्यम् सत्यम् वरानने।१६७।

एको देव एकधर्म एकनिष्ठा परं तपः।
गुरोः परतरं नान्यन्नास्ति तत्वं गुरोः परम्।१६८।

माता धन्या पिता धन्यो धन्यो वंश कुलम् तथा।
धन्या च वसुधा देहि गुरुभक्तिः सुदुर्लभा।१६९।

शरीरमिन्द्रियं प्राण-श्चार्थः स्वजनबांधवाः।
माता पिता कुलम् देवि गुरुरेव न संशयः।१७०।

आकल्पजन्मना कोट्या जपव्रततपः क्रिया।
तत्सर्व सफलं देवि गुरुतोषमात्रतः।१७१।

विद्यातपोंबलेनैव मंदभाग्यश्च ये नराः।
गुरुसेवां न कुर्वन्ति सत्यम् सत्यम् वरानन।१७२।

ब्रह्मविष्णुमहेशाश्च देवर्षिपितृकिन्नराः।
सिद्धचारणयक्षाश्च अन्येऽपि मुनयो जनाः।१७३।

गुरुभावः परम् तीर्थमन्यतीर्थं निरर्थकम्।
सर्वतीर्थाश्रयं देवि पादांगुष्ठ च वर्तते।१७४।

जपेन जयमाप्नोति चानंतफलमाप्नुयात्।
हीनकर्म त्यजन्सर्व स्थानानि चाधमानिच।१७५।

जपं हीनासनं कुर्वन् हीनकर्मफलप्रदम्।
गुरुगीतां प्रयाणे वा संग्रामे रिपुसंकटे।१७६।

जपंजयमवाप्नोति मरणे मुक्तिदायकम्।
सर्वकर्म च सर्वत्र गुरुपुत्रस्य सिध्यति।१७७।

इदं रहस्यं नो वाच्यं तवाग्रे कथितं मया।
सुगोप्यं च प्रयत्नेन मम त्वं च प्रिया त्विति।१७८।

स्वामिमुख्यगणेशादि-विष्णु-वाग्देवी च पार्वति।
मनसापि न वक्तव्यं सत्यं सत्यं वदाम्यस्।१७९।

अतीवपक्वचित्ताय श्रद्धाभक्तियुताय च।
प्रवक्तव्यमिदं देवि ममात्माऽसि सदा प्रिये।१८०।

अभक्ते वचके धूर्ते पाखंडे नास्तिके नरे।
मनसापि न वक्तव्या गुरुगीता कदाचन।१८१।

इति श्रीस्कदपुराणे उत्तरखण्डे ईश्वरपार्वतीसंवादे गुरूगीता समाप्ता
।श्री गुरूदेवचरणार्पणमस्तु।

गुरू साधना से अखण्ड लक्ष्मी प्राप्ति

लक्ष्मी प्राप्ति का श्रेष्ठतम प्रयोग तो गुरू साधना के द्वारा ही संभव है। क्योंकि गुरू का ताप्तर्य केवल ज्ञान देने वाला नहीं है अपितु जीवन में पूर्णता प्रदान करने वाला है।

विश्वामित्र ने एक स्थान पर गोपनीय ढंग से स्वीकार किया है, कि गुरू अपने आप में समस्त ऐश्वर्य का अधिपति होता है, अत: गुरू साधना के द्वारा उस ऐश्वर्य को प्राप्त किया जा सकता है।

विश्वामित्र ने साधनाक्रम को समझाते हुए बताया है कि तीन प्रकार की साधनाएं होती है—१) अधम, (२) मध्यम तथा (३) उत्तम।

उत्तम साधना

उत्तम साधना या उत्तम उपासना वह कही जाती है; जिसमें अपने आपको गुरू के मन और प्राणों में विसर्जित कर देने की क्रिया होती है, साधना के प्ररम्भ में ही उसकी भावना यह होती है, कि मेरी स्थिती नगण्य है, वह अपने दिन भर के कार्य कलाप यह मान कर इस चिन्तन के साथ सम्पन्न करता है, कि यह कार्य गुरूदेव के लिए करना ही है, यह सब कुछ गुरूदेव का ही है, मैं तो इस पूरे कार्य या सम्पति का मात्र ट्रष्टी हूँ, और जो जिम्मेवारी या पारिवारिक कार्य मुझे सौप रखे है, मुझे इसलिए करने है, क्योंकि यह सब कुछ उनका है, और उनके लिए पूर्ण जिम्मेवारी के साथ यह कार्य करते रहना है, ऐसा ही विचार साधना और उपासना के लिए होना चाहिए और ऐसी साधना को 'उत्तम साधना' कहा जाता है।

साधनाक्रम

विश्वामित्र ने एक अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ लक्ष्मी साधना क्रम स्पष्ट किया जिसके माध्यम से पूर्ण लक्ष्मी सिद्धहोती ही है,

यह साधना केवल मात्र तीन घण्टे की है, जो कि दिपावली की रात्रि को किसी भी समय यह साधना सम्पन्न की जा सकती है, इसमें साधक शुद्धता के साथ स्नान करे श्वेत वस्त्र धारण कर, श्वेत आसन पर उत्तर की और मुंह कर बैठ जाय और अपने सामने गुरू चित्र को स्थापित कर दे, तत्पश्चात अपने शरीर को

ही शरीर मानात हुआ अपने आपको गुरू में लीन करता हुआ, अपने आज्ञाचक्र में अर्थात दोनों भौहों के बीच 'परम तत्व गुरू' स्थापना करें।

परम तत्व गुरू स्थापन

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः। रत्न-द्विपाय नमः। सन्तान-वाटिकायै नमः। हरिचन्दन-वाटिकायै नमः। परिजात वाटिकायै नमः। पुष्पराग-प्रकाराय नमः। गोमेद रत्न-प्राकाराय नमः। वज्र रत्न प्राकाराय नमः। मुक्ता-रत्न-प्राकाराय नमः। माणिक्य-रत्न प्राकाराय नमः। सहस्र स्तम्भ प्राकाराय नमः। आनन्द-वापिकायै नमः। बालातपोद्धाराय नमः। महाश्रृंगार-पारिखायै नमः। चिन्तामणि-गृहराजाय नमः। उत्तरद्वाराय नमः। पूर्व-द्वाराय नमः। दक्षिणद्वाराय नमः। पश्चिम द्वाराय नमः। नाना-वृक्ष-महोद्यानाय नमः। कल्प वृक्ष-वाटिकायै नमः। मन्दार वाटिकायै नमः। कदम्ब-वन वाटिकायै नमः। पद्मराग-रत्न प्राकाराय नमः। माणिक्य-मण्डपाय नमः। अमृत-वापिकायै नमः। विमर्श-वापिकायै नमः। चन्द्रिकोद्वाराय नमः। महा-पद्माटव्यै नमः। पूर्वाम्नाय नमः। दक्षिणा-म्नाय नमः। पश्चिमाम्नाय नमः। उत्तरा-म्नाय नमः। उत्तर-द्वाराय नमः। महा-सिंहासनाय नमः। विष्णुमयैक-पंच-पादाय नमः। ईश्वर-मयैक पंच पादाय नमः। हंस-तूल-महोपधानाय नमः। महाविमानिकायै नमः। श्री परम तत्वाय गुरूभ्यो नमः।

इस प्रकार परम तत्व गुरू को अपने आज्ञाचक्र में स्थापित करने के बाद गुरू की द्वादश कलाओं को पात्र में जल अक्षत, कु कुम लेकर अर्घ्य दें "ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अं सूर्य मण्डलाय द्वादश-कलात्मने अर्घ्य-पात्राय नमः"।

इसके बाद गुरू को पुनः उनकी प्रत्येक कला का पूजन इसी प्रकार अर्घ्य अक्षत, पुष्प आदि लेकर बारह बार जल समर्पित करें।

द्वादश कला पूजन

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिन्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्रायै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं घं पं विश्वायै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं बोधिन्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं चं धं ज्वालिन्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं छं दं शोषिण्यै नमः। ऐं ह्री श्रीं जं थं वरण्योये नमः । ऐं ह्रीं श्रीं झं तं आकर्षिण्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं मायायै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं विवस्वत्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं हेम-प्रभायै नमः।

उपरोक्त कला पूजन में "ऐं ह्रीं श्रीं" लक्ष्मी के बीज मन्त्र है और इस प्रकार लक्ष्मी के सभी स्वरूप अपने शरीर में समाहित हो जाते है।

लक्ष्मी प्राप्ति के साथ सुख, सम्मान, संतोष, तुष्टि पुष्टि आदि भी प्राप्त होनी चाहिए तभी तो उस धन का महत्व हैं, तभी उस प्राप्त धन का सही उपयोग है तभी तो जीवन में पूर्ण आनन्द और ऐश्वर्य है, इसीलिए इन द्वादश कला पूजन के बाद पूर्ण ऐश्वर्य के लिये गुरू को अर्घ्य पात्र में जल, अक्षत, कुंकुम और पुष्प लेकर समर्पित करें, पहले मूल समर्पण करें फिर सौलह कलाओं में भी इसी प्रकार से अर्घ्य पात्र समर्पित करें।

ऐं ह्रीं श्रीं सौं उं सोम-मण्डलाय षोडशी कलात्मने
अर्घ्य पात्रामृतायनमः।

इस अर्घ्य को समर्पित करते समय उसका जल थोड़ा थोड़ा करके सौलह बार ग्रहण करें; इसके बाद गुरू की सौलह कलाओं का अर्घ्य पूजन करें।

सौलह कला पूजन

ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदायै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं इं तुष्टयै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ई पुष्टयै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं उं प्रीत्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रत्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ऋं श्रियै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ऋं क्रियायै नमः। ऐं ह्री श्रीं लृं सुधायै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं लृं रात्रयै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हैमवत्यै नमः ऐं ह्रीं श्रीं ओं छायायै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं औं पूर्णिमायै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं अः विद्यायै नमः। ऐ ह्रीं श्रीं वः अमावस्यायै नमः।

वास्तव में ही यह एक अद्भुत और आश्चर्यजनक गुरू लक्ष्मी पूजन हैं जिससे कि पूर्ण समृद्धता और ऐश्वर्यता प्राप्त हौती है।

इसके बाद गुरू के मूल मन्त्र का "ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः" मन्त्र की एक माला फेरे और फिर अपने शरीर में ही गुरू को समाहित मान कर सामने किसी पात्र में दीपक लगा कर बैठे बैठे ही समर्पण आमन्त्रण समाहित आरती करें।

पूर्ण सिद्ध आरती

अत्र सर्वानन्द - मये वेन्दव - चक्रे परब्रह्म - स्वरुपिणि परापर - शक्ती - श्रीमहा - गुरू देव - समस्त - चक्र - नायके - सम्वित्ति - रूप - चक्र नायकाधिष्ठिते त्रैलोक्यमोहन - सर्वाशापरि - पूरक - सर्वसंक्षोभकारक - सर्वसौ - भाग्यदायक - सर्वार्थसाधक - सर्वरक्षाकर - सर्वरोगहर - सर्वासिद्धीप्रद -

सर्वानन्दरय - चक्र - समुन्मीलित - समस्त - प्रकट - गुप्त - गुप्ततर - सम्प्रदाय - कुल - कौलिनी - निगम - रहस्यातिरहस्य - परापर रहस्य - समस्त - योगिनी - परिवृत - श्रीपुरेशी - त्रिपुरसुन्दरी - त्रिपुर - वासिनी - त्रिपुरा - श्रीत्रिपुरमालिनी - त्रिपुरसिद्धा - त्रिपुराम्बा - तत्तच्चक्रनायिका - वन्दित - चरण - कमल - श्रीमहा - गुरू - नित्यदेव - सर्वचक्रेश्वर - सर्वमन्त्रेश्वर - सर्वविद्येश्वर - सर्वपीठेश्वर - त्रैलोक्यमोहिनी - जगदुप्तत्ति - गुरू - सर्वचक्रमय तच्चक्र - नायका - सहिता: स - मुद्रा, स - सिद्धय:, सायुधा:, स - वाहना:, स - परिवारा:, सर्वो-पचारे: श्री परमतत्वाय गुरू परापरया सपर्यया पूजितास्तर्पिता: सन्तु।

इसके बाद हाथ जोड़ कर क्षमा प्रार्थना सम्पन्न करें।

श्रीनाथादि गुरू - त्रयं गण - पति पीठ त्रयं भैरवं सिद्धौच बटुक - त्रयं पद युगं दूती क्रमं मण्डलम् वीरानष्ट - चतुष्क - षष्टि - नवकं वीरावली - पंचकं, श्रीमन्मालिनी - मन्त्रराज - सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।

इस प्रकार पूर्ण गुरू लक्ष्मी साधना केवल एक बार किसी भी रात्रि को या दीपावली की रात्रि को सम्पन्न करने से पूर्ण महालक्ष्मी सिद्धी प्राप्त होती हैं।

प्रत्यक्ष सिद्धि साधना प्रयोग

साधना में सफलता, अनुभूति आहे इसके प्रत्यक्ष दर्शन हेतु

कई बार साधकों को प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल पाती, वे गुरू आज्ञा से किसी साधना में भाग तो लेते है, अपनी तरफ से पूरा प्रयत्न भी करते हैं, उनका प्रयत्न भी यही होता है कि वे जो साधना कर रहे है, उसमें उन्हें सफलता मिल जाय। परन्तु प्रयत्न करने पर भी न तो उन्हें किसी प्रकार की अनुभूति होती है और न किसी प्रकार की सफलता ही मिलती है, ऐसी स्थिति में भी साधना में दृढता रखनी चाहिए।

साधना में दृढ़ता

साधना में दृढ़ता के लिए यह आवश्यक है, कि साधक का गुरू के प्रति पूर्ण प्रेम भाव सम्मान और निष्ठा होनी चाहिए, गुरू के प्रति जो सम्मान भावना होनी चाहिए, जो अन्तरंगता और तादात्म्य होना चाहिए वह तो पूरी तरह से होता नहीं, और अनुभूति की उम्मीद करते है, यह कैसे संभव है। शास्त्रों में कहा गया है-

जिहवा दग्धं परान्नेन, हस्तो दग्धो प्रतिग्रहात्।
मनो दग्धं पर-स्त्रोभि:, कथं सिद्धि वरानने॥

शास्त्रों में कहा गया है, कि अपना कार्य करना साधक के लिए आवश्यक हे, पर साधना में सफलता के लिए जीभ निरन्तर गुरू मंत्र और मन का निरन्तर गुरू के प्रति समर्पण होना आवश्यक है, और जब ऐसा विशुद्ध भाव से हो जाता है, तो फिर अनुभूति भी हो जाती है, सफलता भी मिल जाती है और साधना में सिद्धि भी मिल जाती है।

फिर भी शास्त्रों में साधक के जीवन में न्यूनता होने पर कुछ विशेष प्रयोग दिये है, जिसे सम्पन्न करने पर सिद्धि और साधना अवश्य प्राप्त हो जाती है, नीचे मैं कुछ गोपनीय प्रत्यक्ष सिद्धि साधना प्रयोग दिए जा रहे है जिसे सम्पन्न करने पर निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

साधना प्रयोग

सर्व प्रथम साधक या साधिका मन में यह निश्चय करे कि मुझे अपने जीवन में साधना में सफलता प्राप्त करनी ही है, और इसके लिए मेरे मन से, वचन से शरीर से या वाणी से जो पाप और दोष हुए है, या जो पाप और दोष हो रहे है,

उनकी निवृत्ति के लिए तथा शीघ्र ही साधना में सिद्धि के लिए मैं यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

यह प्रयोग आठ दिन का है, किसी भी गुरूवार के प्रात: काल से प्रारम्भ करके अगले गुरूवार को यह प्रयोग सम्पन्न होता है। साधक प्रात: काल स्नान कर शुद्ध स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सफेद सूती आसन पर एक निष्ठ हो कर बैठ जाय और सामने रजत पात्र या ताम्र पात्र अर्थात् चांदी की थाली या तांबे के पात्र के कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बनावे, और इसे किसी लकडी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर स्थापित कर दें।

फिर अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण "प्रत्यक्ष सिद्धिप्रदाय महाविद गुरु यंत्र" को स्थापित कर दे। यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय, दुर्लभ महत्वपूर्ण विशेष महाविद्या मंत्र से अभिसिंचन किया हुआ होता है। यह यंत्र अपने सदगुरू से प्राप्त कर लेना चाहिए। इसे स्वस्तिक पर नीचे पुष्प बिछा कर उस पर स्थापित कर देना चाहिए, और पीछे पूज्य गुरूदेव का चित्र यदि साधक के पास हो, तो उसे मढ़वा कर स्थापित करना चाहिए, इसके बाद साधक अपनी मूल साधना प्रारम्भ करे।

साधना सिद्धि

सर्व प्रथम साधक अपने बांये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से शरीर पर जल छिड़कता हुआ अपने शरीर को पवित्र करे-

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:।

इसके बाद साधक अपने दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार आच न करे-

१- ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा। २- ॐ विद्या-तत्वं शोधयामि स्वाहा। ३- ॐ गुरु-तत्वं शोधयामि स्वाहा।

तीन बार आचमन करने के बाद अपने हाथ धो कर पवित्र कर दे, और फिर दाहिने हाथ में जल ले कर संकल्प करे-

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणो द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेतवाराह कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशे अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलियुगे कलि-प्रथम चरणे अमुक-सम्वत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथी अमुक-वासरे अमुक-गौत्रोत्पन्नो अमुक-नाम-शर्मा सर्वत्र यशो-विजयादि लाभार्थं सर्वारिष्ट निवृत्तिपूर्वक-सफल-

मनोकामना-सिद्धयर्थ च श्री गुरुदेव प्रीत्यर्थ सर्वसिद्धि साफल्य हेतु प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग महं करिस्यै।

इस प्रकार संकल्प पढ़ कर दाहिने हाथ में लिया हुआ जल अपने सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें।

रक्षा विधान

इसके बाद बांये हाथ में थोडे से चावल लेकर दाहिने हाथ से उन चावलों को अपने चारों ओर छिड़कते हुए निम्न प्रकार से रक्षा विधान करे-

ॐ गुरु वै महाशान्तिकं भूतप्रेतपिशाचराक्षसानां सर्वदृष्टिभयविनाशाय स्-वाहा।

ॐ नमो भगवते रूद्राय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ सिंह शार्दूल गजेन्द्र-ग्राह-वक्र सर्पव्याघ्रादिमृगान् बन्धामि। ॐ श्रोत्रं बन्धामि। ॐ वाचं बन्धयामि। ॐ गतिं बन्धामि। ॐ आशां बन्धामि। ॐ दिशां बन्धामि। ॐ सवंबन्धं बन्धामि। ॐ सर्वमायां वन्धामि। ॐ सर्वजनान् बन्धामि। ॐ बन्धं बन्धामि कुरू स्वाहा। ॐ पंचयोजनविस्तीर्णे रुद्रो वदति मण्डलं कुरु स्वाहा।

ॐ नमो भगवते सद्गुरु रात्रिज्वर-सायंज्वर-प्रातर्ज्वर-अग्निज्वर-शीतज्वर-द्वन्द्वज्वर-राक्षसज्वर-भूतज्वर-माण्डज्वर-पापिज्वर-मति-प्रयोगादि ज्वरविनाशाय स्वाहा।

अक्षिशूल - कक्षिशूल - कर्ण-शूल - प्राणशूल - दन्तशूल - गँडशूल - शिर : शूल - शिरोर्द्धशूल - पादशूल - पदार्द्धशूल - सर्वांगशूल विनाशाय स्वाहा।

ॐ सर्वव्याधिविनाशाय स्वाहा। ॐ सर्वशत्रुविनाशाय स्वाहा। ॐ अपहृ-तशोकादिविनाशाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षे प्राणरक्षे अग्निरक्षे प्रथम अग्निरक्षे ते शावकं बन्धामि ॐ ह्रां ह्रीं देहि स्वाहा। ॐ इन्द्राय देहि स्वाहा। ॐ स्वर स्वर ब्रह्मदं इति विजाते विष्णुदण्ड ॐ ज्वर ज्वर ईश्वरदण्ड ॐ जं तं नं भंजनिरिति दण्ड ॐ प्रहर ३ ह्रीं लीं ह्रीं लीं यमदण्ड ॐ नित्य-नित्य दण्डविषये विश्वाश्ववाहिर्नि हंसिनि शूलिनि गारुडि रक्षे आयु: पुत्रं प्रवक्ष्यामि।

इसके बाद साधक इस पात्र में रखे हुए दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण यंत्र

का मानस पूजन सम्पन्न करे।

मानस पूजन

१-ॐ "लं" पृथ्वी तत्वात्मक गन्धं श्री गुरुदेव प्रीतये समर्पयामि नमः। २-ॐ "हं" आकाश-तत्वात्मकं पुष्पं श्री गुरुदेव प्रीतये समर्पयामि नमः। ३-ॐ "यं" वायु तत्वात्मकं धूपं श्री गुरुदेव प्रीतये आघ्रापयामि नमः। ४-ॐ "रं" अग्नि-तत्वात्मकं दीपं श्री गुरुदेव प्रीतये दर्शयामि नमः।५-ॐ "वं" जल तत्वात्मकं नैवेद्यं श्री गुरुदेव प्रीतये समर्पयामि नमः। ६-ॐ "सं" सर्व-तत्वात्मकं ताम्बूलं श्री गुरुदेव प्रीतये समर्पयामि नमः।

इसके बाद साधक १०१ माला (रूद्राक्ष या शुद्ध स्फटिक माला से मंत्र जप सम्पन्न करे)

जप समर्पण

गुह्यातिं-गुह्य-गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धि भवतु देव त्वत् प्रासादान्महेश्वर।

क्षमा प्रार्थना

मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं - भक्ति हीनं सुरेश्वर।
यत् पठितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु में॥

पुरश्चरण (मन्त्र-सिद्धि)

नित्य १०१ माला जप करते हुए, आठवें दिन अर्थात् अगले गुरूवार के दिन १०१ माला मंत्र जप हो जाने पर मंत्र जप का दशांश होम शुद्ध धृत से करे और उसी दिन आठ छोटे बालकों को भोजन करावे तथा उन्हें यथोचित वस्त्र दक्षिणा आदि दे, यदि यह संभव न हो तो आठ ब्राह्मणों को भोजन करावे।

वास्तव में ही यह अत्यन्त गोपनीय महत्वपूर्ण और दुर्लभ प्रयोग है, जो प्रत्येक साधक को सम्पन्न कर जीवन में इष्ट के प्रत्यक्ष दर्शन और किसी भी साधना में सिद्धि प्राप्त कर अपने गुरू का प्रिय पात्र एवं अत्यन्त प्रिय शिष्य बनता हुआ समस्त संसार में अपना तथा अपने कुल का नाम रोशन करता है।

मंत्र

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गुरु - पादुका - पूजन - प्रयोग

शास्त्रों के अनुसार मार्गशीर्ष शुक्ल २ को "गुरूत्व दिवस" या "गुरु पादुका दिवस" मनाया जाता है।

एक साधक या शिष्य के जीवन में 'गुरू पादुका दिवस' का सर्वाधिक महत्व है, और वह पूर्ण श्रद्धा, भावना, एवं चिन्तन के साथ "गुरू पादुका दिवस" को सपरिवार सम्पन्न करता है।

गुरू पादुका

गुरू की पादुका साक्षात् गुरूमय होती है, क्योंकि —

पृथिव्या यानि तीर्थानि तानि तीर्थानि सागरे।
सागरे सर्व तीर्थानां गुरूस्य दक्षिणे पदे॥

गुरू चरण जल से स्नान कर समस्त तीर्थो के स्नान का फल प्राप्त होता है, इसलिए गुरू के चरणों में धारण की हुई खड़ाऊ या पादुका स्वयं गुरू का साक्षात स्वरूप बन जाती है। गुरू पादुका की उपस्थिति साक्षात् गुरू की उपस्थिति ही मानी गई है। गुरू पादुका स्तवन मूल रूप में गुरू स्तवन ही है, इसीलिए पूरे भारत वर्ष में जितना महत्व गुरू पूर्णिमा का है, उससे भी ज्यादा महत्व "गुरू पादुका दिवस" का है।

भगवान शिव ने पार्वती को समझाते हुए कहा है, कि मात्र गुरू पादुका पूजन करने से साधक की सोलह कलाएं स्वतः विकसित होने लग जाती है, ये सोलह कलाएं निम्न प्रकार से कही गयी है - १- मूलाधार, २- स्वाधिष्ठान, ३- मणिपुर, ४- अनाहत, ५- विशुद्ध, ६- आज्ञा, ७- बिन्दु, ८- कला पद, ९- निर्वाधिका, १०- अर्धचन्द्र, ११- नाद, १२- नादान्त , १३- शक्ति, १४- व्यापिका, १५- समना, १६- उन्मना।

इन सोलह कलाओं का विकास और कुण्ड़लिनी जागरण हो कर जब कुण्ड़लिनी उर्ध्वगामी होती है, तब स्वतः साधक की 'खेचरी मुद्रा' प्रारम्भ हो जाती है और ऐसा होने पर वह शिवात्मक गुरू शिष्य से संबोधित हो जाती है।

शिष्य को ' गुरू पादुका' प्राप्त कर अपने पूजा स्थान में सम्मान पूर्वक स्थापित कर देना चाहिए, और यह अहसास करना चाहिए कि यह खड़ाऊ या ये पादुकाएं साक्षात ब्रह्ममय गुरू ही सशरीर उपस्थित है।

साधक "गुरू पादुका दिवस" के दिन पूर्ण श्रद्धा के स्थान स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करे, और उत्तर दिशा की ओर आसन बिछा कर अपनी पत्नी के साथ या स्वयं बैठें, सामने श्रेष्ठ लकड़ी की तख्ते पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर गुरू पादुका स्थापित करें, और फिर अपने सामने पूजन सामग्री रख कर गुरू पादुका पूजन कार्य सम्पन्न करें।

पादुका चिन्तन

साधक या शिष्य अपने दोनों हाथ खड़ाउओं पर रखता हुआ निम्न प्रकार से चिन्तन-उच्चारणा करे-

ॐ गुरूभ्यो नमः ॐ परम गुरूभ्यो नमः ॐ परात्पर गुरूभ्यो नमः ॐ परमेष्ठि गुरूभ्यो नमः ॐ गणपतये नमः ॐ मूल प्रकृत्यै नमः ॐ मण्डूकाय नमः ॐ मूलाधारयै नमः ॐ कालाग्नि रुद्राय नमः ॐ कूर्माय नमः ॐ आधार शक्तये नमः ॐ आनन्दाय नमः ॐ अनन्ताय नमः ॐ पृथ्विव्यै नमः ॐ सुधार्णवाय नमः ॐ मणिद्विपाय नमः ॐ कल्पवृक्षाय नमः ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः ॐ हेमपीठाय नमः

इसके बाद बाई तरफ चावल की ढ़ेरी बना कर उस पर एक गोल सुपारी रख कर उसे भैरव मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, जिससे कि किसी प्रकार का कोई विघ्न उपस्थित न हो, पूजन के बाद भैरव के सामने हाथ जोड़कर उच्चारण करें-

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्ते दहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञा दातुमर्हसि॥

इसके बाद दिशा बंधन करें, फिर आसन पूजन करें-

आसन पूजन

इसके बाद अपने आसन को हटा कर उसके नीचे कुंकुम से त्रिकोण बनावे, और उस पर पुनः आसन बिछा दें, फिर आसन पर जल छिड़कते हुए निम्न उच्चारण करें-

ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ पृथ्वीत्यासन-मन्त्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता। आसने विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्॥

इसके बाद जो आसन बिछा हुआ है, उस पर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए आसन पर केसर की पाच बिंदिया लगावे जिससे कि आसन सिद्धि हो सके।

ॐ पृथ्विव्यै नमः ॐ अनन्ताय नमः ॐ कूर्माय नमः ॐ विमलाय नमः ॐ योगपीठाय नमः

इसके बाद खड़ाऊ के सामने पांच चावल की ढ़ेरियां बनावें, और उस पर एक एक गोल सुपारी रख कर केसर की बिन्दी लगावे तथा उच्चारण करें-

ॐ गुं गुरूभ्यो नमः ॐ पं परम गुरूभ्यो नमः ॐ पं परात्पर गुरूभ्यो नमः ॐ पं परमेष्ठि गुरूभ्यो नमः ॐ पं परापर गुरूभ्यो नमः

शरीर गुरू स्थापन प्रयोग

इसके बाद दाहिने हाथ से संबंधित अंगों को स्पर्श करते हुए गुरू को अपने पूर्ण शरीर में समाहित करें-

ॐ कूर्माय नमः ॐ वैराग्याय नमः ॐ आधार शक्तये नमः ॐ अनैश्वर्याय नमः ॐ पृथिव्यै नमः ॐ अनन्ताय नमः ॐ धर्माय नमः ॐ सर्वतत्वात्मकाय नमः ॐ ज्ञानाय नमः ॐ आनन्दकन्द कन्दाय नमः ॐ सविन्नालाय नमः ॐ ऐश्वर्याय नमः ॐ विकारमयकेशरेभ्यो नमः ॐ प्रकृतमयपत्रेभ्यो नमः ॐ पंचाशर्णबीज़ाद्यकर्णिकायै नमः

इस प्रकार अपने शरीर में गुरू को स्थापित कर अपनें शरीर की संक्षिप्त पूजा करें, सिर पर जल छिड़के सिर के मध्य में केसर की बिन्दी लगावे, हृदय पर केसर का लेप करें, और प्रसन्नता अनुभव करें, कि मेरे शरीर के रोम रोम में पूज्य गुरूदेव स्थापित हुए हैं, जिससे कि मेरी कुण्डलिनी स्वतः जागृत होने लगी है।

इसके बाद खड़ाऊ के दाहिनी ओर एक दूसरे लकड़ी के बाजोट पर कलश स्थापित करें, ओर कलश के चारो ओर चारो दिशाओं की ओर केसर की बिन्दी लगाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करे।

ॐ पूर्वे ऋगवेदाय नमः ॐ उत्तरे यजुर्वेदाय नमः ॐ पश्चिमे अथर्व वेदाय

नमः ॐ दक्षिणे साम वेदाय नमः

इस प्रकार कलश में चारो वेदों की स्थापना करे और संक्षिप्त पूजर करे

कलश के पास में शंख स्थापित करे, और उसका पूजन करे, शंख के पास ही घण्टा स्थापित करे, और उसका भी पूजन करते हुए निम्न उच्चारण करे-

आगमर्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टा प्रपूजयेत॥

फिर कलश के ओगे बारह चावल ढेरियां बनावे और उस पर एक एक सुपारी रख कर निम्न देवताओं की स्थापना करें।

१- ॐ कालाग्नि रुद्राय नमः २- ॐ कूर्मायै नमः ३- ॐ पृथिव्यै नमः ४- ॐ धर्माय नमः ५- ॐ ज्ञानाय नमः ६-- ॐ वैराग्याय नमः ७- ॐ ऐश्वर्याय नमः ८- ॐ राग्याय नमः ९- ॐ अनन्ताय नमः १०- ॐ सर्वतत्वात्मकाय नमः ११- ॐआनन्दमयकन्दाय नमः १२- ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः

खड़ाऊ-विनियोग

ॐ अस्य श्री पादुका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्रीछन्दः श्री गुरू देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद खड़ाऊ में गुरू प्राण प्रतिष्ठा करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

पादुका गुरू मंत्र

ॐ ऐं ह्री श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वरूप निरूपणहेतवे श्री गुरुवे नमः

इसके बाद साधक न्यास करे-

करन्यास

ॐ ह्रां अं गुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॐ ह्रै अनामिकाभ्यां नमः ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादि न्यास

ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॐ ह्री सिरसे स्वाहा ॐ ह्रूं कवचाय हुं ॐ ह्रै नेत्रत्रायाय वौषट ॐ ह्रौं शिखायै वषट ॐ ह्रः अस्त्राय फट्

फिर गुरु ध्यान करे।

महा-रोगे महोत्पाते महा-देवी महा-मये।
महा-पदि महा-पापे स्मृता रक्षति पादुका॥

तेनाधीनं स्मृतं ज्ञानं दुष्टं पत्तं च पूजितं।
जिह् वायां वसंते यस्य श्री परा-पादुका-स्मृतिः॥

भोग भोगार्थिना ब्रह्म-विष्णवी-पद कांक्षिणाम।
भक्ति रेव गुरौ देवि "नान्यः पंथा" इति श्रुतिः

इसके बाद २ अन्य पात्रों में परम गुरु और परमेनिष्ठ गुरू की स्थापना करें, स्थापना में पात्र में चावलों की ढ़ेरी बनाकर उस पर सुपारी रख कर उन्हे परम गुरू और परमनिष्ठ गुरू मानकर उपरोक्त प्रकार से ही न्यास करे फिर उनका ध्यान करें।

परम गुरू ध्यान

गुरु भक्ति-विहीनस्य तपो विद्या कुल व्रतम्।
सर्व नश्यन्ति तत्रैव भूषण लोक रंजनम्॥

गुरु भवत्यग्निना सम्यग् दग्ध्या सर्व-गतिदंसः
श्वपचो पि परैः पूज्यो न विद्वानपि नास्तिकः॥

परमेष्ठि गुरू ध्यान

गुरूः पिता गुरूर्माता गुरूर्देवो गुरूर्गति।
शिवे रूष्टो गुरूस्त्राता गुरौ रूष्टे न कश्चन॥

पादुका लय पूजन

इसके बाद साधक पादुका लय पूजन करें, जो सामने दोनों पादुकाएं स्थापित की है, दोनों पादुकाओं पर कुंकम से त्रिकोण बनावे, और सूर्य-द्वादस कलाओं में से छः कलाओं की स्थापना वाम पादुका में तथा छः कलाओं की स्थापना दाहिनी पादुका में स्थापित करें-

वाम पादुका कला स्थापन

१- ॐ तपिन्ये नमः २- ॐ तापिन्यै नमः ३- ॐ ज्वालिन्यै नमः ४- ॐ रुच्यै तमः ५- ॐ सूक्ष्मायै नमः ६- ॐ भोगिन्यै नमः

दाहिनी पादुका कला स्थापन

१- ॐ विश्वायै नमः २- ॐ धूम्रायै नमः ३- ॐ मरीच्यै नमः ४- ॐ बोधिन्यै नमः ५- ॐ धारिण्यै नमः ६- ॐ क्षमायै नमः

इन कलाओं कीं स्थापना से दोनों पादुकाओं में पूर्ण सूर्य मण्डल स्थापित हो जाता है, इसके बाद दोनों पादुकाओं पर कलश में से जल (अमृत) छिड़कते हुए निम्न सोलह चन्द्र कलाओं की स्थापना करें, जिससे कि इन पादुकाओं में चन्द्र कलाओं के साथ साथ अमृत तत्व का प्रादुर्भाव हो सके।

१- ॐ अमृतायै नमः २- ॐ मानदायै नमः ३- ॐ पूषायै नमः ४- तुष्टयै नमः ५- ॐ पुष्टयै नमः ६- ॐ रत्यै नमः ७- ॐ धृत्यै नमः ८- ॐ शशिन्यै नमः ९- ॐ चण्डिकायै नमः १०- ॐ कान्त्यै नमः ११- ॐ ज्योत्स्नायै नमः १२- ॐ श्रियै नमः १३- ॐ प्रीत्यै नमः १४- ॐ अंगदायै नमः १५- ॐ पूर्णायै नमः १६- ॐ पूर्णामृतायै नमः

इस प्रकार करने के बाद बांये हाथ में केसर से चावल रंग कर दाहिने हाथ से थोड़े थोड़े चावल दोनों पादुकाओं पर डालते हुए निम्न उच्चारण करें-

१- मध्ये श्री कृष्ण आवाहयामि स्थापयामि २- दक्षिणे वासुदेवं आवाहयामि स्थापयामि ३- पश्चिमे अनिरूद्धाय नमः स्थापयामि ४- पूर्वे वैशंपायनाय नमः स्थापयामि ५- उत्तरे जैमिन्यै नमः स्थापयामि

इसके बाद जिस पात्र में खड़ाऊ हो वह पात्र अपने सिर पर पख कर दोनों हाथों में लेकर साधक निम्न प्रकार से उच्चारण करें-

१- ॐ श्री शङ्कराचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि २- ॐ विश्वरूपाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि ३- ॐ पद्मपादाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि ४- ॐ हस्तामलकाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि ५- ॐ त्रोटकाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि ६- ॐ दत्तात्रेयाय नमः आवाहयामि स्थापयामि ७- ॐ जीवन मुक्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि ८- ॐ नारदं वामदेवं कपिलं आवाहयामि स्थापयामि

इसके बाद खड़ाऊ पर पुष्प समर्पित करते हुए निम्न उच्चारण करे-

१- ॐ गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि २- ॐ परम गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि ३- ॐ परात्पर गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि ४- ॐ परमेष्ठि गुरवे नमः आवाहयामि स्थापयामि ५- ॐ परम गुरवे नमः आवाहायामि स्थापयामि

इसके बाद दोनों हाथों मे पुष्प, अक्षंत, कुंकुम, पुष्प माला लेकर पादुका के ऊपर समर्पित करते हुए उच्चारण करें-

१- ॐ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञं निखिलेश्वरानन्दाय आवाहयामि स्थापयामि २- ॐ परमानन्दरूपेण स्वामी सच्चिदानन्द आवाहयामि स्थापयामि ३- ॐ ब्रह्मण्य रूपेण वेद व्यासाय आवाहयामि स्थापयामि ४- ॐ पूर्णत्व प्रदाय चतुर्मखु ब्रह्मा आवाहयामि स्थापयामि

सूक्ष्म गुरुतत्व मंत्र

सर्वथा गुप्त और दुर्लभ द्वादशार्ण सरसी रुह के रूप में जो गुरू मंत्र के बारह वर्ण है, वे निम्न है जो कि ब्रह्माण्ड के गुरूओं का प्रतिनिधित्व करते है साधक को स्फटिक माला से चार माला निम्न ब्रह्माण्ड गुरू मंत्र की जपनी जाहिए।

॥ स ह फ्रें ह स क्ष म ल व र यू म् ॥

इसमें प्रथम द्वादश वर्ण है अंतिम म् "वाग्भव" बीज है, इस प्रकार यह द्वादश वर्ण युक्त मंत्र तुरन्त कुण्डलिनी जागरण में पूर्ण रूप से सहायक है। यदि साधक पादुका पूजन कर उपरोक्त गुरू मंत्र (ब्रह्माण्ड गुरू मंत्र) का जप करता है, तो निश्चिय हीं उसकी कुण्डलिनी और सहस्त्रार जाग्रता होता है, यह प्रामाणिक वचन है।

इसके बाद 'गुरु पादुका पंचक' का मधुरता के साथ पाठ करें

श्री गुरूपादुका पंचकम्

ॐ नमो गुरूभ्यो गुरूपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्यसिद्धेश्वरपादुकाभ्यो नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः।१।

ऐंकारह्रींकाररहस्ययुक्तं श्रींकारगूढार्थमहाविभूत्या।
ॐकारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।२।

होत्राग्निहौत्राग्निहविष्यहोतृ होमादिसर्वाकृतिभासमानम्।
यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां नमो नमः श्रीगुरूपादुकाभ्याम्।३।

कामादिसर्पव्रजगारुड़ाभ्यां विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्याम्।
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।४।

अनंतसंसारसमुद्रतारनौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।५।

निखिलेश्वरानंद-षट्कम्

मनोबुद्धयहंकारचित्तानि नाहं न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुनिखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।१।

न च प्राणसंज्ञो न वै पंचवायु र्न वा सप्तधातुर्न वा पंचकोशः।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायू निखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।२।

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमाहौ मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षनिखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।३।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैवं भोज्यं न भोक्ता निखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।४।

न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बंधुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यनिखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोहम्।५।

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणम्।
न चासंगतं नैव मुक्तिर्न मेयनिखिलसत्य रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।६।

सिद्ध तिथियां, रात्रियां और पर्व

कुछ तिथियां अपने आपमें ही महत्वपूर्ण एवं सिद्धिप्रद मानी गई है, जिनका ज्ञान शायद इक्के दुक्के सन्यासी, साधु या ज्योतिषी को होगा । नीचे इन्हीं महत्वपूर्ण तिथियों को स्पष्ट किया जा रहा है, जिनका प्रयोग करने से साधना में स्वतः सिद्धी प्राप्त होती है ।

दस महाविद्या जयन्ति तिथियां

१- काली भाद्रपद कृष्ण अष्टमी. २- तारा चैत्रशुक्ल नवमी. ३- ललिता माघ शुक्ल पूर्णिमा. ४- भुवनेश्वरी भाद्रपद शुक्ल द्वादसी. ५- भैरवी मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा. ६- छिन्नमस्ता वैसाख शुक्ल चतुर्दशी. ७- धूमावती ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी. ८- बगलामुखी वैसाख शुक्ल चतुर्थी. ९- मातंगी वैशाख शुक्ल चतुर्दशी. १०- कमला कार्तिक कृष्ण अमावस्या

दस सिद्ध विद्या जयन्ति तिथियां

१- कुब्जिका वैशाख कृष्ण त्रैयोदशी की मध्य रात्रि को. २- चण्डिका वैशाख शुक्ल पूर्णिमा. ३- माला मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी. ४- सिद्धलक्ष्मी वैशाख शुक्ल चतुर्दशी. ५- सरस्वती माघ शुक्ल पंचमी. ६- अन्नपूर्णा मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्दशी. ७- गायत्री श्रावण शुक्ल पूर्णिमा. ८- पार्वती आसाढ शुक्ल नवमी. ९- अपराजिता आश्विन शुक्ल नवमी. १०- विन्ध्यवासिनी भाद्रपद कृष्ण अष्टमी

दशावतार जयन्ति तिथियां

१ - मत्स्यावतार कार्तिक शुक्ल नवमी. २ - राम चैत्र शुक्ल नवमी. ३- कृष्ण भाद्रपद कृष्ण अष्टमी. ४- वामन भाद्रपद शुक्ल द्वादशी. ५- नृसिंह वैशाख शुक्ल चतुर्दशी. ६- परशुराम वैशाख शुक्ल तृतीया. ७- वाराह आश्विन शुक्ल चतुर्दशी. ८- कल्कि श्रावण शुक्ल षष्ठी. ९-बलभद्र मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा

युगारम्भ तिथियां

१ - सतयुगवैशाख शुक्ल तृतीया. २ - त्रैतायुग कार्तिक शुक्ल नवमी. ३- द्वापरयुग भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी. ४- कलियुग माघ कृष्ण अमावस्या

प्रत्येक महिने के गुरू पर्व

१- चैत्र शुक्ल तृतीया. २- वैशाख शुक्ल तृतीया. ३- ज्येष्ठ शुक्ल दशमी. ४- आसाढ़ शुक्ल पंचमी. ५- श्रावण कृष्ण पंचमी. ६- भाद्रपद कृष्ण पंचमी. ७- आश्विन कृष्ण त्रयोदशी. ८- कार्तिक शुक्ल नवमी. ९- मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया. १०- पौष शुक्ल नवमी. ११- माघ शुक्ल चतुथा. १२- फाल्गुन शुक्ल नवमी.

चार नवरात्रि

१- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक. २- आसाढ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक. ३- आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक. ४- माघ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक.

विशिष्ट रात्रि पर्व

१ - वीर रात्रिचतुदर्शी को रविवार. २- महा रात्रिआश्विन शुक्ल अष्टमी. ३- काल रात्रि कार्तिक कृष्ण चतुदर्शी को अर्द्ध रात्रि में अमावस्या का योग होने पर. ४- मोह रात्रि भाद्रपद कृष्ण अष्टमी. ५- क्रोध रात्रि चैत्र शुक्ल नवमी. ६- घोर रात्रि मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी (महाकाली वीर जयन्ती). ७ - अचला रात्रि फाल्गुन कृष्णा अष्टमी को मंगलवार या शुक्रवार हों तो ज्येष्ठ शुक्ल दशमी. ८- तारा रात्रि ज्येष्ठ शुक्ल दशमी. ९ - शिवरात्री फागुन कृष्ण त्रयोदशी. १०- मृतसंजीवनीरात्रि अमावस को शुक्रवार हो और मध्यान्ह में सूर्य ग्रहण हो. ।११- सिद्धि रात्रि चैत्र मास की अष्टमी को रविवारऔर संक्राति हो तो (काली और तारा के लिए विशेष सिद्धिप्रद). १२- दारुण रात्रि वैसाख शुक्ल तृतिया को मंगलवार हो तो. १३- सुन्दरी रात्रि किसी भी मास की पूर्णिमा को महानक्षत्र हो तो।१४- देवी रात्रि किसी भी मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मंगलवार हो तो १५- गणेश रात्रि माघ चतुर्थी को मकर संक्राति हों तो । १६- सिद्धि रात्रि किसी भी माघ की कृष्ण पक्ष की नवमी को कुल नक्षत्र हो तो १७- बाण रात्रि किसी भी मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मंगलवार हो तो १८- कृष्ण रात्रि किसी भी अमावस को मंगलवार हो तो १९- धर्म रात्रि पौष या माघ अमावस्या को सूर्य श्रवण नक्षत्र पर हो तो २०- दिव्य रात्रिअमावस्या को मंगल, शुक्र और सूर्य क्रूर नक्षत्रों पर हो तो २१- विष्णु रात्रि भाद्रपद मास की अष्टमी को बुधवार हो तो २२- काम संजीवनी रात्रि माघ शुक्ल पंचमी (बसन्त पंचम) को शुक्रवार हो तो २३- ऋद्धि सिद्धि योग रात्रि चैत्र मास की तृतीया को रेवती नक्षत्र हो तो २४- पर्वराज रात्रि पौष मास की तृतीया को शुक्रवार तथा रेवती नक्षत्र हो तो

सद्गुरु सहस्त्रनाम

ॐ नारायणाय गुरूभ्यो नमः
ॐ आत्म स्वरूपाय नमः
ॐ त्रिकाल ज्ञान संपनाय नमः
ॐ दशमहाविद्या सिद्धकराय नमः
ॐ भगवती दत्ताय नमः
ॐ विज्ञान दीपांकुराय नमः
ॐ प्रेम स्वरूपाय नमः
ॐ तन मन रंजनाय नमः
ॐ भव भय भंजनाय नमः
ॐ असुर निखंडनाय नमः
ॐ दिव्य हस्ताय नमः
ॐ गूढ स्वरूपाय नमः
ॐ सौम्य स्वरूपाय नमः
ॐ गूढ़ चरित्राय नमः
ॐ दानी चरित्राय नमः
ॐ सर्वसम्पदाय नमः
ॐ जागृति रचना सित्क प्रदाय नमः
ॐ वेद पराभ्यां नमः
ॐ करुणा कराय नमः
ॐ प्रत्यक्ष महेश्वराय नमः
ॐ सच्चिदानन्द श्रेष्ठ शिष्याय नमः
ॐ सिद्धाश्रम प्रतीकाय नमः
ॐ कैलासाचल कन्दरालयकराय नमः
ॐ सर्वविघ्न हराय नमः
ॐ नानादैत्य निहन्ताय नमः
ॐ नाना रूपाणि विभ्रांतमाय नमः
ॐ मोक्ष द्वार कपाट पाटनः कराय नमः
ॐ सर्वानन्द कराय नमः
ॐ भक्ताभीष्ट कराय नमः
ॐ कृपावलम्बनाय नमः
ॐ कल्प तरुये नमः
ॐ कोटि कोटि सदृशाय नमः
ॐ महा अभयंकराय नमः
ॐ साक्षान्मोक्षकराय नमः
ॐ रक्षा क्रन्दकराय नमः
ॐ निरामय कराय नमः
ॐ ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थाय नमः
ॐ सोमामृत सोदराये नमः
ॐ दयानुपवनों द्रविणाम्बु धाराय नमः
ॐ पुष्कर विष्टकराय नमः
ॐ त्रिविष्ट सुलभं लभाय नमः
ॐ समस्त जगतां महनीय मूर्तये नमः
ॐ आशा पूरकाय नमः
ॐ सच्चिद सुखधाम्ने नमः
ॐ पुराण पुरुषाय नमः
ॐ नाना क्रीडाकराय नमः
ॐ चिदानन्द निर्विकाराय नमः
ॐ गुणातीताय नमः
ॐ त्रिकाल दर्शनाय नमः
ओम भक्त वत्सलाय नमः
ओम कपालिने नमः
ओम शाश्वताय नमः

ॐ सर्वशक्ति मयाय नमः

ॐ सर्वरूप घरं विमुवाय नमः

ॐ सर्व विद्या प्रवक्ताय नमः

ॐ नित्य भक्तानन्द कराय नमः

ॐ सत्य ज्ञान रूपाय नमः

ॐ अनंत विभवाय नमः

ॐ अनेक कोटि ब्रह्माण्ड नायकाय नमः

ओम सर्वोपतवमाशकाय नमः

ओम आधिव्याधि हराय नमः

ओम भुक्ति मुक्ति प्रदाय नमः

ओम सर्व सिद्धि कराय नमः

ओम सर्व सौख्य प्रदायने नमः

ओम दुष्टा रिष्ट विनाशाय नमः

ओम चिदानन्द स्वरूपाय नमः

ओम प्रपत्र जनपालनाय नमः

ओम इन्दु शीतलाय नमः

ओम विभूतये नमः

ओम सुरमये नमः

ओम वाचये नमः

ओम श्रद्धायै नमः

ओम आदित्यै नमः

ओम दित्यै नमः

ओम दीपायै नमः

ओम अनुग्रह पठाय नमः

ओम अशोकाय नमः

ओम अमृताय नमः

ओम धर्मनिललाय नमः

ओम महेश्वराय नमः

ओम अजायेय नमः

ओम दिव्याय नमः

ओम कृपानिधये नमः

ओम अव्यक्ताय नमः

ओम जीवतत्व बोधकाय नमः

ओम सहस्राक्षेय नमः

ओम अनंताय नमः

ओम शिष्यवन सिंच्वितायै नमः

ओम अनुग्रहाय नमः

ओम निखिलेश्वरानंदाय नमः

ओम रूपायै गृहस्थै नमः

ओम अनाथ नाथाय नमः

ओम चित्त हराय नमः

ओम दुर्लभ गुरुवे नमः

ओम सूक्ष्म रूपाय नमः

ओम कालातीताय नमः

ओम सौम्याम्बर धाराय नमः

ओम निर्लिप्ताय नमः

ओम अखण्डनि सहस्त्रार जागृत कराय नमः

ओम कुण्डलिनी सहस्रार जाग्रनाथाय नमः

ओम योगमय स्वरूपाय नमः

ओम तपोमेयाय नमः

ओम मार्ग दर्शनीये नमः

ओम मन्त्र तन्त्र यन्त्र सिद्धकरायेय नमः

ओम ऊर्ध्वमुखी जीवनानन्द कराय नमः

ओम पतितोद्धारायै नमः

ओम भक्तवत्सल भोला शंकरायै नमः

ओम नारायणदत्त तेजस्विये नमः।

यंत्र देवता

दश दिकपाल

दिशा	देवता	वीज	अस्त्र	बीज	वाहन
पूर्व	इन्द्र	लं	वज्र	वं	ऐरावत
अग्निकोण	अग्नि	रं	शक्ति	शं	छाग (बकरा)
दक्षिण	यम	यं	दण्ड	यं	महिष
नेऋत्यकोण	नेऋति	क्षं	खंग	खं	शव
पश्चिम	वरुण	वं	पाश	पं	मकर
वायव्यकोण	वायु	यं	अंकुश	अं	मृग
उत्तर	कुबेर	कुं	गदा	गं	चर्म
ईशान	ईश (शिव)	ईं	त्रिशूल	त्रिं	वृषभ
उर्ध्व	ब्रह्मा	ह्रीं	पद्म	पं	हंस
अधः	अनन्त (विष्णु)	अं	चक्र	चं	गरुण

सभी यंत्रपूजा या साधना में दशो दिशाओ में उपरोक्त देवता के बीज और उनके शस्त्र के बीज सहित मंत्र जप करके नमस्कार करना चाहिए।

उदाहरणार्थ : पूर्वे - १) लं इन्द्राय ऐरावत सहिताय नमः २) वं वज्राय नमः

इसी प्रकार अन्य दिशाओं में भी पूजन करें।

सभी यंत्रों में आठ भैरवों और आठ शक्तियों की स्थापना होती है । साधना में सफलता के लिए उनका पूजन अनिवार्य है ।

अष्ट भैरव	अष्ट शक्तियाँ
१- असिताङ्ग भैरव ।	ब्राह्मी देवी
२- रुरु भैरव	माहेश्वरी देवी
३- चण्डभैरव	कौमारी देवी
४- क्रोध भैरव	वैष्णवी देवी
५- उन्मत्त भैरव	वाराही देवी
६- कपाल भैरव	माहेन्द्री देवी
७- भीषण भैरव	चामुण्डा देवी
८- संहार भैरव	महालक्ष्मी देवी

उपरोक्त भैरव और शक्तियाँ पूर्व दिशासें लेकर अष्ट दिशाओं में होती है।

द्वारपाल - १. गणपती, २. बटुक भैरव. ३. योगिनी, ४. क्षेत्रपाल.

महागणपति साधना

१. विनियोग--ॐ अस्य श्रीमहागणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिर्निचृद्गायत्रीच्छन्दो महागणपतिर्देवता गं बीजं स्वाहा शक्तिः ग्लौं कीलकं मम श्रीमहागणपतिप्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

२. ऋष्यादिन्यास--गणकऋषये नमः (शिरसि), निचृद्गायत्री च्छन्दसे नमः (मुखे) महागणपतिदेवतायै नमः (हृदये), गं बीजाय नमः (गुह्ये) स्वाहा शक्तये नमः (पादयोः), ग्लौं कीलकाय नमः (नाभौ) महागणपति-प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)

३. **कर-षडङ्गन्यास–**

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गां (अंगुष्ठाभ्यां नमः)	(हृदयाय नमः)
" गीं (तर्जनीभ्यां नमः)	(सिरसे स्वाहा)
" गूं (मध्यमाभ्यां नमः)	(शिखायै वषट्)
" गैं (अनामिकाभ्यां नमः)	(कवचाय हुम्)
" गौं (कनिष्ठिकाभ्यां नमः)	(नेत्रः त्रयाय वौषट्)
" गः (करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)	(अस्त्राय फट्)

४ ध्यान

बीजापूर-गदेक्षुकार्मुु करुजा-चक्राब्जपाशोत्पला
व्रीह्यग्रस्वबिषाणरत्न-कलश-प्रोद्यत्मकराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरयाश्लिष्टो ज्वलद्भूपया,
विश्वोत्पत्ति-विपत्ति-संस्तितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः॥

मंत्र –

अं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व जन में वशमानय स्वाहा।

शिव साधना

विनियोग–अस्य श्रीसाम्बसदाशिव पूजन मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्रीशिवो देवता ॐ बीजं नमः शिवाय कीलकं मम श्रीसाम्बसदाशिव प्रीत्यर्थं पूजने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास–वामदेव ऋषये नमः (शिरसि), पंक्तिश्छन्दसे नमः (मुखे), श्रीशिवदेवतायै नमः (हृदये), ॐ बीजाय नमः (गुह्ये), नमः शक्तये नमः (पादयोः), शिवाय कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

कर-हृदयादिन्यास–

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः।	ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्।	ॐ शिं अनामिकाभ्यां हुम्।
ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।

इसी प्रकार **'ॐ नं मं शिं वां यं'** अक्षरों से हृदयादि न्यास करे।

ध्यान–

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंचवक्त्रंत्रिनेत्रं,
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां प्रलयहुतवहं साङ्कुशं वामभागे,
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥

मंत्र–

ॐ नमः शिवाय।



श्री बटुक भैरव

श्री बटुक भैरव साधना

विनियोग– ॐ अस्य श्री आपदुद्धारण-बटुकभैरव-मन्त्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः, त्रिष्टुपछन्दः, श्रीबटुकभैरवो देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, भैरवः कीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थं श्रीबटुकभैरवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास–बृहदारण्यकऋषये नमः (शिरसि), त्रिष्टपछन्दसे नमः (मुखे), श्रीबटुकभैरवदेवतायै नमः (हृदये), ह्रीं बीजाय नमः (गुह्ये), स्वाहाशक्तये नमः (पादयोः), भैरवकीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वांगे)।

कर-हृदयादिन्यास– ॐ ह्रां वां (अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः), ॐ ह्रीं वीं (तर्जनीभ्यां नमः, सिरसे स्वाहा), ॐ ह्रूं वूं (मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट्), ॐ ह्रैं वैं (अनामिकाभ्यां नमः, कवचायहुम्), ॐ ह्रौं वौं (कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट्), ॐ ह्रः वः (करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्राय फट्)।

मन्त्रन्यास– ॐ ह्रीं ह्रीं (अंगुष्ठा० हृदयाय०), ॐ ह्रीं बटुकाय (तर्जनी० शिरसे०), ॐ ह्रं आपदुद्धारणाय (मध्यमा० शिखायै०), ॐ ह्रैं कुरुकुरु (अनामिका०, कवचाय०), ॐ ह्रौं बटुकाय (कनिष्ठिका० नेत्र०), ॐ ह्रः ह्रीं (करतल० अस्त्राय०)।

ध्यान–

करकलित-कपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या-विघ्नविच्छित्तिहेतुर्जयति बयुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

संक्षिप्त बलिदान— घर के बाहर दरवाजे के बायीं ओर दो लौंग तथा गुड़ की डली रखें। मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ ह्रीं वं एहयेहि देवीपुत्र आपदुद्धारक बटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर ज्वलत्पिंगलनेत्र सर्वकार्यसाधक मद्दत्तमिमं यथोपनीतं बलिं गृहण् गृहण् मम कर्माणि साधय साधय सर्वमनोरथान् पूरय पूरय सर्वशत्रून् संहारय ते नमः वं ह्रीं ॐ।

मंत्र - ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरू कुरू बटुकाय ह्रीं ॐ॥

भगवान श्रीहनुमान साधना

विनियोग - ॐ अस्य श्रीहनुमन्महामन्त्रराजस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, जगतीच्छन्दः श्रीहनुमान् देवता, ह् सौं बीजं, हस्फ्रें शक्तिः श्रीहनुमत् प्रसादसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास - श्रीरामचन्द्र ऋषये नमः (शिरसि) । जगतीच्छन्दसे नमः (मुखे)। श्रीहनुमानद्देवतायै नमः (हृदये)। ह् सौं बीजाय नमः(गुह्ये) । हस्फ्रें शक्तये नमः (पादयोः)। (इसमें कीलक नहीं है) । विनियोगाय नमः (सर्वांगे) ।

अंगन्यास औरकरन्यास - मन्त्रोक्त छः बीजों से करन्यास एवं षडंगन्यास करें । पूरे मन्त्र के एक-एक अक्षर से-१. मस्तके २. ललाटे. ३. नेत्रयोः, ४. मुखे, ५. कण्ठे, ६.वाहवोः, ७.हृदये, ८. कुक्ष्योः, ९.नाभौ, १०. लिंगे, ११. जान्वोः १२. चरणयोः' बोलते हुए द्वादशांग न्यास करें।

इसी प्रकार छः बीज और दो पदों से - '१. मस्तके, २. ललाटे , ३. मुखे, ४.हृदये, ५. नाभौ, ६.उर्वोः, ७.जङ्घयोः, ८. चरणयोः' बोलते हुए अष्टांग न्यास करें।

ध्यान

उद्यत्कोट्यर्कसङ्काशं जगत्प्रक्षोभकारकम् ।
श्रीरामांघ्रिध्याननिष्ठं, सुग्रीवप्रमुखार्चितम् ॥
महाबलसमायुक्तं भक्तभीति-निवारकम् ।
वित्रासयन्तं नादेन राक्षसान् मारुतिं भजे ॥

मंत्र

१) ह्रौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं हस्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः । यह बारह अक्षरों वाला महामन्त्रराज है ।

गायत्री

विनियोग : सव्याहृतीनां जमदग्निभरद्वाज (तन्त्रान्तरेपि भृगु इति पाठः) अत्रिगौतमकश्यपविश्वामित्रवसिष्ठा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि । अग्निवायुसुर्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वदेवा देवताः । सर्वपापक्षयार्थे जपे विनियोगः ।

सप्तव्याहृतीनामृष्यादिन्यास : ॐ जमदग्निभरद्वाजात्रिगौतमकाश्यप विश्वामित्रवसिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥१॥ गायत्र्युष्णिगनुष्ठब्जगतीछन्देभ्यो नमो मुखे ॥२॥ अग्निवायुसूर्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वदेवदेवेताभ्यो नमः हृदये ॥३॥ विनियोगाय नमः । सर्वाङ्गे ॥४ ॥ इति सप्तव्याहृतिनामृष्यादिन्यासः ।

गायत्र्याऋष्यादिन्यास : ॐ गायत्र्या : विश्वामित्र ऋषिः । गायत्री छन्द । सविता देवता । जपोपनयने विनियोगः । ॐ विश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥२॥ सवितृदेवतायै नमः हृदये ॥३॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ इति गायत्राऋष्यादिन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ भू नमः हृदये ॥१॥ ॐ भुवः नमः मुखे ॥२॥ ॐ स्व नमः दक्षांसे ॥३॥ ॐ महः नमः वामांसे ॥४॥ ॐ जनः नमः दक्षिणोरौ ॥५॥ ॐ तपः नमः । वामोरौ ॥६॥ ॐ सत्यं नमः जठरे ॥७॥ ॐ तत् नमः पादांगुलिमूलेषु ॥८॥ ॐ सं नमः गुल्फयोः ॥९॥ ॐ विं नमः जानुनो ॥१०॥ ॐ तुं नमः पादमूलयोः ॥११॥ ॐ वं नमः लिङ्गे ॥१२॥ ॐ रें नमः नाभौ ॥१३॥ॐ णिं नमः हृदये ॥१४॥ ॐ यं नमः कण्ठे ॥१५॥ ॐ भं नमः हस्तांगुलिमूलेषु ॥१६॥ ॐ गो नमः मणिबन्धयोः ॥१७॥ ॐ दें नमः कूर्परयोः ॥१८॥ ॐ वं नमः बाहुमूलयोः ॥१९॥ ॐ स्यं नमः आस्ये ॥२०॥ ॐ धीं नमः नासापुटयोः ॥२१॥ ॐ मं नमः कपोलयोः ॥२२॥ ॐ हि नमः नेत्रयोः ॥२३॥ ॐ धिं नमः कर्णयोः ॥२४॥ ॐ यों नमः भ्रूमध्ये ॥२५॥ ॐ यों नमः मस्तके ॥२६॥ ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे ॥२७॥ ॐ प्रं नमः उत्तरवक्त्रे ॥२८॥ ॐ चों नमः दक्षिणवक्त्रे ॥२९॥ ॐ दं नमः पूर्ववक्त्रे ॥३०॥ ॐ यात् नमः उर्ध्ववक्त्रे ॥३१॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

पदन्यासः ॐ तत् नमः शिरसि ॥१॥ ॐ सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये ॥२॥ ॐ

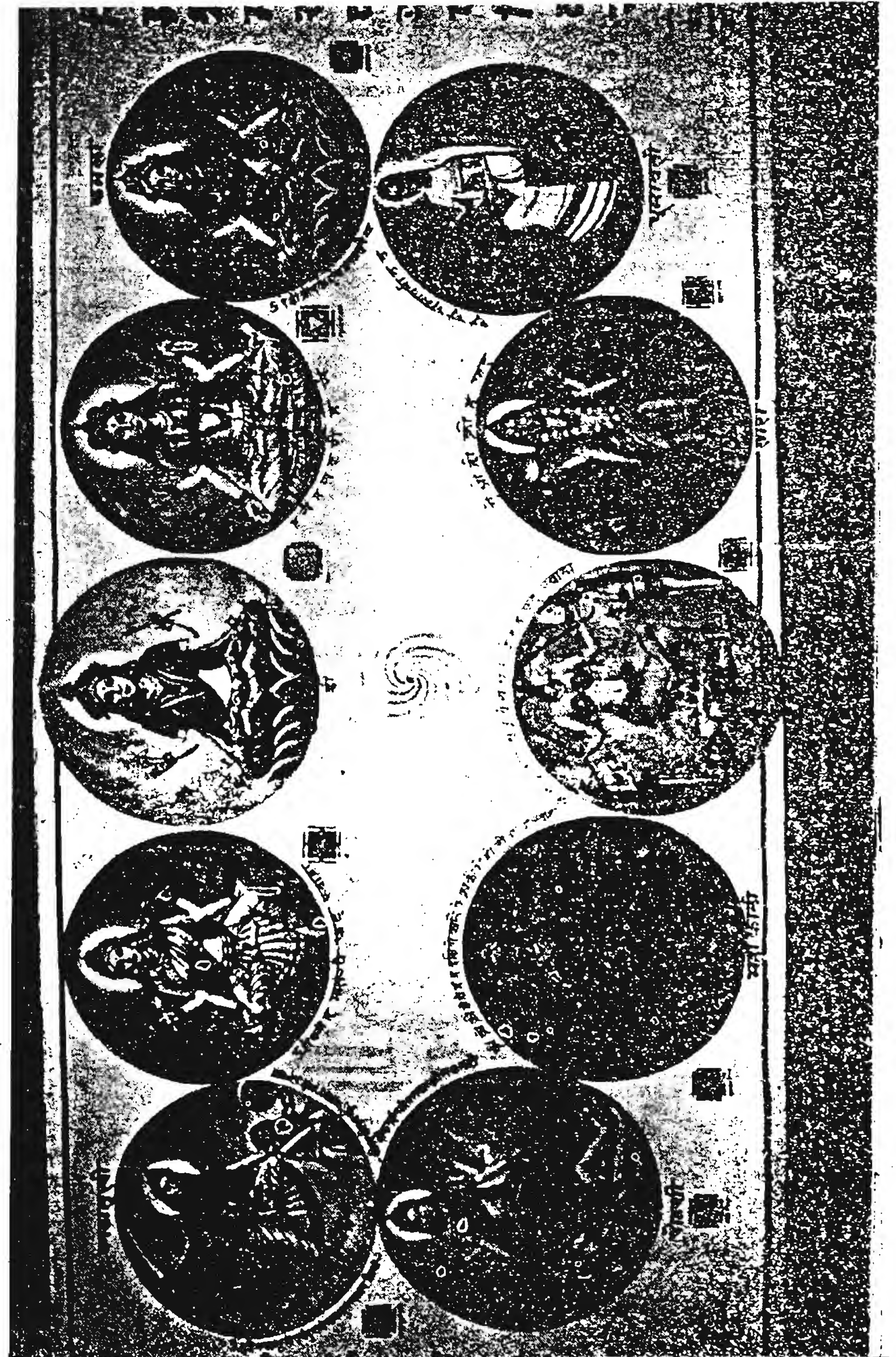
वरेण्य नमः नेत्रयो ॥३॥ ॐ भर्गो नमः मुखे ॥४॥ ॐ देवस्य नमः कण्ठे ॥५॥ ॐ धीमहि नमः हृदये ॥६॥ ॐ धियो नमः नाभौ ॥७॥ ॐ यो नमः गुह्ये ॥८॥ ॐ नः नमः जानुनो ॥९॥ ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः ॥१०॥ ॐ आपोज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भवः स्वरोमिति शिरसि ॥११॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादिपादांगुलीपर्यन्तम् ॥१२॥ भर्गो देवस्य धीमहि नमः हृदयादिनाभ्यान्तम् ॥१३॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात नमः मूर्ध्दादिहृदयान्तम् ॥१४॥ इतिपदन्यासः

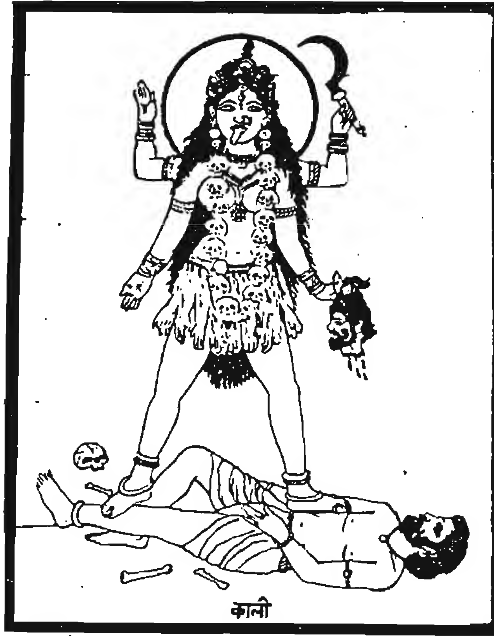
करन्यास : ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे अंगुष्ठभ्यां नमः ॥१॥ ॐ वरेण्यं विष्णवे तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ भर्गो देवस्य रुद्राय मध्यमाभ्यां नमः॥३॥ ॐ धीमहि ईश्वराय अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ धियोयो नः सदाशिवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति **करन्यासः** ॥

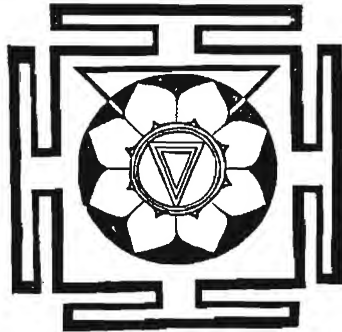
हृदयादिषड्ङ्गन्यास : ॐ तत्सावितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः ॥ १॥ ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ भर्गो देवश्य रुद्राय शिखायै वषट्॥३॥ ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ धियो यो नः सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रयोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंङ्गन्यासः । इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे ।.

ध्यान्यॐ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम् । गायत्रीं वरदाभयांकुशकशापाशं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविन्दुयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥१॥ कुमारीमृग्वेदयुतां ब्रह्मरूपां विचिन्तयेत् । हंसस्थितांकुशकरां सूर्यमण्डलसंस्थिताम् ॥२॥ मध्याह्ने विष्णुरुपाञ्च तार्क्ष्यस्थां पीतवासिनीम् । युवतीं सयजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम् ॥३॥ सायाह्ने शिवरुपाञ्च वृद्धां वृषभवाहिनीम् ।सुर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेद समायुतम् ॥४॥

ब्रह्म गायत्री मन्त्र : "ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् "॥







काली यन्त्र

श्री काली साधना

विनियोग : अस्य श्रीदक्षिणकालीमन्त्रस्य भैरव ऋषिः। उष्णिकछन्दः। दक्षिणकालिकादेवता। क्रीं वीजम्। हूं शक्तिः। क्रीं कीलकम्। ममाभीष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १। उष्णिकछन्दसे नमः मुखे २। दक्षिणकालिकादेवतायै नमः हृदि ३। क्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। हूं शक्तये नमः पादयोः ५। क्रीं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ क्रां अंगुष्ठाम्यां नमः १। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यासः ॐ क्रां हृदयास नमः १। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ क्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ क्रैं कवचाय हुं ४। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ क्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडंगन्यासः।

ध्यान :

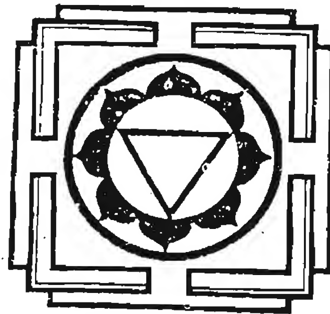
ॐ शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्। चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्॥१॥ मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्। एवं सञ्चितयेत्कालीं श्मशानालयवासिनीम्॥२॥

मन्त्र -

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।



तारा



तारा यन्त्र

श्री तारा साधना

विनियोग

अस्य तारामन्त्रस्य अक्षोभ्यऋषिः बृहतीछन्दः। तारादेवता। ह्रीं बीजं। हुं शक्तिः। ममामीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

शिरसि-अक्षोभ्य-ऋषये नमः मुखे-बृहती-छन्दसे नमः हृदि-श्रीमदेकजटायं नमः मूलाधारे-हुँ-वीजाय नमः पादयो-फट्-शक्तये नमः सर्वांगेषु-स्त्रीं-कीलकाय नमः

कर न्यास

ह्रां अखिल-वाग्-रूपिण्यं अंगुष्ठाम्या नमः ह्रीं अखण्ड-वाग्-रूपिण्यं तर्जनीभ्यां स्वाहाः हूं ब्रह्म-वाग्-रूपिण्यं मध्यमाम्यां वषट् हैं विष्णु-वाग्-रूपिण्यं अनामिकाम्यां हुँ ह्रौं रूद्र-वाग्-रूपिण्यं अनामिकाम्यां हुँ ह्रः सर्व-वाग्-रुपिण्यै करतल- करपृष्ठाम्यां फट्

षडंग न्यास

ह्रां अखिल-वाग्-रूपिण्यै हृदयाय नम्ह्रौ ह्री अखण्ड-वाग्-रूपिण्यं शिरसे स्वाहा हूं ब्रह्म-वाग्-रूपिण्यै शिखाये वषट् ह्रौ विष्णु-वाग्-रूपिण्यै कवचाय हुं ह्रौ रूद्र-वाग्-रूपिण्यै नेत्र-त्रयाय वौषट् ह्रः सर्व-वाग्-रूपिण्यै अस्त्राय फट्

ध्यान

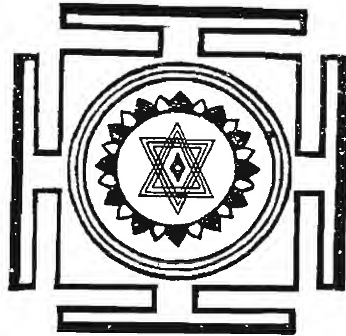
प्रत्यालीढ-पदां घोरां मुण्ड माला-विभूषिताम् सर्वा लम्बो दरी भीमां व्याघ्र-चर्मावृतां कटी नव यौवन-सम्पन्नां पंच-मुद्रा-विभूषिताम् चतुर्भुजां लील-जिह्वा महा-मीमां वर-प्रदाम खड्ग-कर्त्रि समायुक्त-सव्येतर-भुज-द्वयाम कपालोत्पल-संयुक्त-सव्य-पाणिर-युगान्विताम् पिंगोग्रेक जटां ध्यायेन्मौलावक्षेभ्य-भूषिताम् बालार्क-मण्लाकारं-लोचन-भय-भूषिताम् ज्वलच्चिता-मध्य-गतां घोर-द्रंष्ट्रा करालिनीम् स्वावेश-स्मेर-वदनां स्त्रयलंकार-विभूषितां विश्व - व्यापक - तोयान्तः श्वेत-पद्मोपरिस्थिताम्

मंत्र

ऐं ओं ह्रीं स्त्रीं हूं फट्



षोडशी त्रिपुरसुन्दरी



षोडशी यन्त्र

श्री षोडशी (त्रिपुरसुन्दरी) साधना

विनियोग : अस्य त्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः पंक्तिछन्दः श्रीमत्रिपुरसुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीमत्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमः हृदि ३। ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४। सौः शक्तये नमः पादयोः१ ५। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ: ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे१ ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करशुद्धिन्यास : ह्रीं श्रीं अं मध्यमाभ्यां नमः ३। ह्रीं श्रीं आं अनामिकाभ्यां नमः ४। ह्रीं श्रीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ह्रीं श्रीं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ह्रीं श्रीं आं तर्जनीभ्यां नमः २। ह्रीं श्रीं सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करशुद्धिन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा २। कएइलह्रीं शिखायै वषट् ३। हसकहलह्रीं कवचाय हुं ४। सकलह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सौः ऐं क्लीं ह्रां श्रीं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

ध्यानः

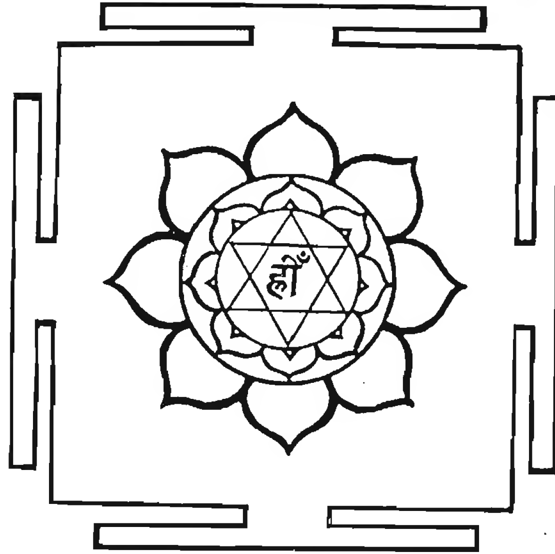
बालार्कायुततेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनी
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्शेखराम्।

हस्तैरिक्षुधनुः सृष्टि सुमशरं पाशं मुदा बिभ्रती
श्री चक्रस्थितसुन्दरी त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत।

मंत्रः

ह्रींकएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं।





भुवनेश्वरी यन्त्र

श्री भुवनेश्वरी साधना

विनियोग : अस्य श्रीभुवनेश्वरीमन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो हकारो बीजं ईकारः शक्तीरेफः कीलकं श्रीभुवनेश्वरी देवता चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास : शक्तिऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २। भुवनेश्वर्यै देवतायै नमः हृदि ३। हं बीजाय नमः गुह्ये ४। ईं शक्तये नमः पादयो ५। रं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं शिखायै वशट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौ नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६॥ इति हृदयादिषडगन्यासः।

ध्यान :

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दु किरीटान्तुङ्गकुचान्त्रयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं व्वरदाङ्कुशपाशा मीतिकराम्प्रभजे भुवनेशीम्।

मंत्र : ह्रीं





छिन्नमस्ता यन्त्र

श्री छिन्नमस्ता साधना

विनियोग : अस्य शिरच्छिन्नामन्त्रस्य भैरवऋषि: संम्राट् छन्द: छिन्नमस्ता देवता ह्रींकारद्वयं बीजं स्वाहाशक्तिरभीष्टसिद्धये जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भैरवऋषये नम: शिरसि १ संम्राट्छन्दसे नम: मुखे २। छिन्नमस्तादेवतायै नम: हृदये ३। ह्रींह्रींबीजाय नमो गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नम: पादयो: ५। विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादि न्यास:।

करन्यास : ॐ आँ खड्गाय स्वाहा अंगुष्ठयो: १। ॐ इं सुखड्गाय स्वाहा तर्जन्या: २। ॐ ऊं वज्राय स्वाहा मध्यमयो: ३। ॐ ऐं पाशाय स्वाहा अना-

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ आँ खड्गाय हृदयाय नम: स्वाहा १। ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा स्वाहा २। ॐ ऊँ वज्राय शिखायै वषट् स्वाहा ३। ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुँ स्वाहा ४। ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५। ॐ अ: सुरक्षरक्ष हूं हूं अस्त्राय फट् स्वाहा। इति १हृदयादिषडङ्गन्यास:।

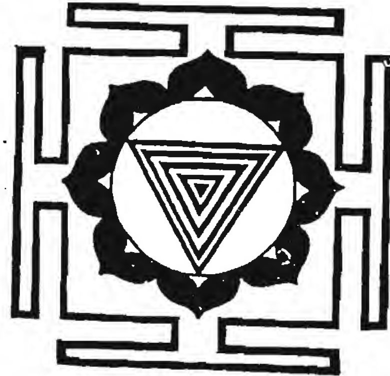
ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा मस्तकादिपादपर्यन्तम् १। ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा पादादिमस्तकान्तम् २। इससे तीन बार न्यास करे।

ध्यान : पत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिर: कर्तृकां दिग्वस्त्रां स्वकबंध-शोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा। नागाबद्धशिरोमणि त्रिनयनां हृद्युत्पलालं कृतांरत्या-सक्तमनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जवासन्निभाम्॥१॥ दक्षे चातिसिता विमुक्तचिकुरा कर्त्री तथा खर्परं हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी। देव्याश्छिन्नकबन्धत: पतदसृग्धारां पिबन्ती मुदा नागाबद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येया सदा सा सुरै:॥२॥ प्रत्यालीढपदा कबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी। शक्ति: सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ध्येया ध्यानपरै: सदा सविनयं भक्तेष्टभूतिप्रदा॥३॥

मंत्र : श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा।



त्रिपुर भैरवी



त्रिपुर भैरवी यन्त्र

श्री त्रिपुरभैरवी साधना

विनियोग : अस्य त्रिपुरभैरवीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः पंक्तिच्छन्दः त्रिपुरभैरवी देवता ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीत्रिपुरभैरव्यै देवतायै नमः हृदि ३। ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

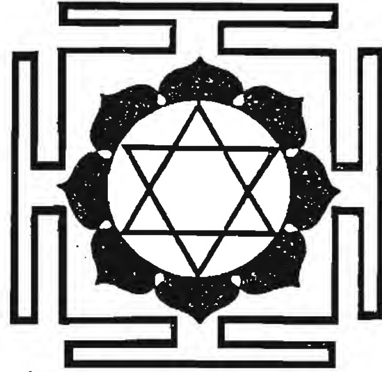
करन्यास : हसरां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। हसरीं तर्जनीभ्यां नमः २। हसरूं मध्यमाभ्यां नमः ३। हसरैं अनामिकाभ्यां नमः ४। हसरौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। हसरः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : हसरां हृदयाय नमः १। हसरीं शिरसे स्वाहा २। हसरूं शिखायै वषट् ३। हसरैं कवचाय हुं ४। हसरौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। हसरः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

ध्यान : उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तपयोधरां जपपटीं विद्यामभीतिं वरम्। हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे सुमन्दस्मिताम्॥१॥

मंत्र : हसैं हसकरीं हसैं।





श्री मातंगी साधना

विनियोगः अस्य मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिविराट् छन्दः मातङ्गी देवता ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्लीं कोलकं सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिषडङ्गन्यास : ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसी १। विराट् छन्दसे नमः मुखे २। मातङ्गी देवतायै नमो हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये। हूं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ह्रौं कनिष्ठिकांभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयन्यास : १. ॐ ह्रां हृदये नमः २. ह्रीं शिरसे स्वाहा ३. ह्रूं शिखायै वषट् ४. ह्रैं कवचाय हुं ५. ह्रौं नेत्र त्रयाय बौषट् ६. ह्रः अस्त्राय फट्

ध्यानः श्यामाङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां वेदैः करैर्बिभ्रतीं, पाशं खेटमथांकुशं दृढमसिं नाशाय भक्तद्विषाम्। रत्नालङ्करणप्रभोज्ज्वलतनुं भास्वत्किरीटां शुभां मातङ्गीं मनसा स्मरामि सदयां सर्वार्थसिद्धिप्रदाम्॥१॥

मंत्रः ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।





कमला यन्त्र

श्री कमला साधना

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्रीजगन्माता महालक्ष्मी-देवता श्रीं बीजं. सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसे १। गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीजगन्माता महालक्ष्म्यै नमः हृदि ३। श्री बीजाय नमः गुह्ये ४। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ५। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः मूल से हाथ धोकर ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रीं मध्यामाभ्यां नमः ३। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ सौ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ जगत्प्रसूत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इसके बाद 'ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह सौ जगत्प्रसूत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः" से मस्तकादिचरणान्त व्यापक न्यास करे।

ध्यानः

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यश्चतुर्भिर्गजै-

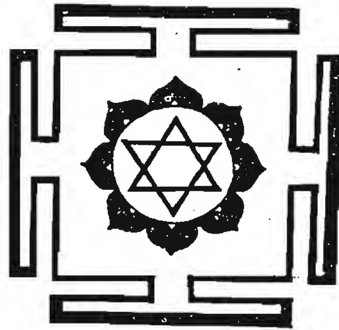
हस्तोत्क्षिप्त हिरण्यामृतघटैरासिच्यामानां श्रियम्॥

बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्वलां

क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितं वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

मंत्रः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह सौः जगत्प्रसूत्यै नमः





धूमावती मन्त्र

श्री धूमावती साधना

विनियोग : अस्य धूमावतीमन्त्रस्य पिप्पलादऋषिः निवृच्छन्दः ज्येष्ठा देवता धूंबीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं ममाभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ पिप्पलादऋषये नमः शिरसि १। निवृच्छन्दसे नमः मुखे २। ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि ३। धूं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। धूमावती कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।४

करन्यास : ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ तीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।५

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ धूं धूं हृदयाय नमः १। ॐ धूं शिरसे स्वाहा २। मां शिखायै वषट् ३। ॐ वं कवचाय हुं ४। ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडंगन्यासः।

इस प्रकार न्यास करने के पश्चात् ध्यान करे।

ध्यान—

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा॥

काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्तातिरक्ताक्षीधृतहस्ता वरान्विता॥

प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥

मंत्र—

धूं धूं धूमावती ठः ठः ।

(घ) श्रीधूमावती माला-मन्त्र—"ॐ, धूं धूमावति चतुर्दशभुवननिवासिनि सकलग्रहोच्चाटनि सकलशत्रुरक्तमांसभक्षिणि, मम शरीररक्षिणि भूतप्रेत-पिशाचब्रह्मराक्षसादि सकलग्रहसंहारिणि मम शरीर परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्रनिवारिणि आत्म-

मन्त्रयन्त्रतन्त्र प्रकाशिनि मम शरीरे परकट्टु-परवादु-परवेट्टु-परजप-परहोम- पर-शून्य-परवृष्टि-परकौतुक-परौषधादिच्छेदिनि-चिट्टेरि-काहेरि-कत्रेरि-पाट्टेरि शुनक-काट्टेरि-प्ररिटिकाट्टेरि-दर्भकाट्टेरि-पातालकाट्टेरि-सकलजातिकाट्टेरि-ग्रहच्छेदिनि मम नाभि-कमलस्थान-संचारग्रहसंहारिणि धूम्रलोचनि उग्ररूपिणि सकलविषच्छेदिनि सकलविषसंचयान् नाशय नाशय मारय मारय विषमज्वर-तापज्वर-शीतज्वर-वात-ज्वर-लूतज्वर-पयत्यज्वर-श्लेष्मज्वर-मोहज्वर-सान्निपातज्वर-पातालकाट्टेरिज्वर-प्रेतज्वर-पिशाचज्वर-कृत्रिमज्वर-नानादोषज्वर-सकलरोगनिवारिणि सकलग्रहच्छेदिनि शिरःशूलाक्षिशूल-कुक्षिशूल कर्णशूल-नाभिशूल-कटिशूल-पार्श्वशूल-गण्डशूल-गुल्मशूलांगशूल-सकलशूलान् निर्धूमय सकलग्रहान् निवारय निवारय रां रां रां रां रां, क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां, खैं खैं खैं खैं खैं, धूं धूं धूं धूं धूं, फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें, धूं धूं धूं धूं धूं धूमावति मां रक्ष रक्ष शीघ्रं शीघ्रमागच्छागच्छ क्षिप्रमेवारोग्यं कुरु कुरु हुं फट् धूं धूं धूमावति स्वाहा।"

इस मन्त्र को सूर्य-ग्रहण, चन्द्रग्रहण, अक्षयतृतीया की रात्रि और होली की रात्रि में विधिवत् पुरश्चरण करके सिद्ध कर लें और बाद में आवश्यकता पड़ने पर जल-भस्म आदि का अभिमन्त्रण तथा नीम की डाली से झाड़-फूंक करने में उपयोग करें इससे रोग एवं भूत-प्रेतादि के दोष दूर होते हैं।

प्रणाम करने का पद्य

वन्दे कालाभ्रनीलां विकलितवदनां काकनासां विकर्णां
सम्मार्जिन्युल्कशूर्पैर्युत-मुसलकरां वक्रदन्तां विवास्याम्।
ज्येष्ठां निर्वाणवेषां भ्रुकुटितनयनां मुक्तकेशामुदारां,
पीनोत्तुङ्गाद्रितुङ्गस्तनभरनमितां निष्कृपां शत्रुहन्त्रीम्॥

श्री बगलामुखी साधना

विनियोग : ॐ अस्य श्रीबगलामुखीमन्त्रस्य नारदऋषिः बृहतीच्छदः बगला-मुखी देवता ह्लीं बीजं स्वाहा शक्तिःममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः इससे जल फेंक दे।

ऋष्यादिन्यास : ॐ नारदऋषये नमः शिरसि १। बृहतीच्छंद से नमः मुखे २। बगलादेवतायै नमः हृदि ३। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्लीं अंगष्ठाभ्यां नम । बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः २।





सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः ३। वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः ४। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। बुद्धिं विनाशय ह्री ३ॐ स्वाहा करतलकर-पृष्ठाभ्यांस नमः ६। इति करन्यासः।

ऋष्यादिषडङ्गन्यास : ३ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १। बगलामुखि शिरसे स्वाहा २। सर्वदुष्टांना शिखायै वषट् ३। वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् ४। जिह्वां कीलय वौषट् ५ । बुद्धिं विनाशय ह्रीं ३ॐ स्वाहा अस्त्राय फट ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

तन्त्रान्तरेपि (न्यासेऽविशेषः)

ध्यानः ३ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभाङ्गरुचि शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्गरपाशवदरशनां संबिभ्रतीं भूषणर्व्या-प्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥१॥

मंत्रः ३ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ३ॐ स्वाहा। इति षट् त्रिंशदक्षरो मन्त्रन

श्रीपीताम्बरा—बगलामुखी—खड्गमालामन्त्रः

॥श्रीगणेशाय नमः॥

३ॐ अस्य श्रीपीताम्बरा—बगलामुखी-खड्गमालामन्त्रस्य नारायण ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ३ॐ कीलकं, ममाभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः। नारायणऋषये नमः शिरसी, त्रिष्टपछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमः हृदये, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये; स्वाहाशक्तये नमः पादयोः, ३ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ३ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः, सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, जिह् वां कीलय कनिष्ठकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्रीं ३ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि।

३ॐ ह्रीं सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं स्तम्भय स्तम्भय बुद्धिं विनाशय विनाशय अपरबुद्धिं कुरु कुरु अपस्मारं कुरु कुरु आत्मविरोधिनां शिरो-ललाट-मुख-नेत्र-कर्ण-नासिका-दन्तोष्ठजिह्वा-तालुकण्ठ-बाहूदर-कुक्षि-नाभि-पार्श्वद्वय-गुह्य-गुदाण्ड-त्रिकजानुपादसर्वाङ्गेषु पादादिकेशपर्यन्तं केशादिपादपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय परमन्त्र - परयन्त्र-परतन्त्राणि छेदय छेदय आत्ममन्त्र-यन्त्रत-

न्त्राणि रक्ष रक्ष सर्वग्रहान् निवारय निवारय सर्वम् अविघिं विनाशय विनाशय दुःखं हन हन दारिद्र्यं निवारय निवारय सर्वमन्त्रस्वरूपिणि सर्वशल्ययोगस्वरूपिणि दुष्टग्रहचण्डग्रह-भूतग्रहाऽऽकाशग्रह - चौरग्रह - पाषाणग्रह - चाण्डालग्रह - यक्षगन्धर्वकिन्नरह- ब्रह्मराक्षसग्रह-भूतोत-पिशाचादीनां शाकिनी डाकिनी-ग्रहाणां पूर्वदिशं बन्धय बन्धय वाराहि बगलामुखि मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशं बन्धय बन्धय किरातवाराहि मां रक्ष रक्ष पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय स्वप्नवाहाहि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशं बन्धय बन्धय धूम्रवाराहि मां रक्ष रक्ष सर्वदिशो बन्धय बन्धय कुक्कुट-वाराहि मां रक्ष रक्ष अधरदिशं बन्धय, बन्धय परमेश्वरि मां रक्ष रक्ष सर्वरोगान् विनाशय विनाशय सर्वशत्रुपलायनाय सर्वशत्रुकुलं मूलतो नाशय नाशय शत्रूणां राज्यवश्यं स्त्रीवश्यं जनवश्यं दह दह पच पच सकललोकस्तमभिनि शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भनमोहनाऽऽकर्षणाय सर्वरिपूणाम् उच्चाटनं कुरु कुरु ३ॐ ह्रीं क्लीं ऐं वाकप्रदानाय क्लीं जगत्त्रवशीकरणाय सौः सर्वमनः क्षोभणाय श्रीं महास-म्पत्प्रदानाय ग्लौं सकलभूमण्डलाधिपत्यप्रदानाय दां चिरंजीवने। ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लां क्लीं क्लूं सौः ३ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय राजस्तम्भिनि क्रों क्रों छ्रीं छ्रीं सर्वजनसंमोहिनि सभास्तम्भिनि स्त्रां स्त्रीं सर्वमुखरञ्जिनि मुखं बन्धय बन्धय ज्वल ज्वल हंस हंस राजहंस प्रतिलोम इहलोक परलोक परद्वार राजद्वार क्लीं क्लूं घ्रीं रूं क्रों क्लीं खाणि खाणि। जिह्वां बन्धयामि सकलजनसर्वेन्द्रियाणि बन्धयामि नागाश्व-मृग-सर्प-विहङ्गमवृश्चिकादि-महोग्रभूतजातं बन्धयामि बन्धयामि लक्ष्मीं प्रददामि प्रददामि त्वम् इह आगच्छ आगच्छ अत्रैव निवासं कुरु कुरु ३ॐ ह्रीं बगले परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा।

इति श्रीविष्णुयामले बगलाखड्गमालामन्त्रः समाप्तः।

नवार्ण साधना प्रयोग

भगवती दुर्गा की साधना में नवार्ण मंत्र का विशेष महात्म्य है। नवार्ण मंत्र के बारे में, उसकी साधना और प्रयोग के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है।

नवार्ण साधना जीवन की उन्नति के लिए अनुकूल एवं सुखदायक है, इसके नव वर्ण अर्थात नव अक्षर होने से इसका नाम "नवार्ण" पड़ा और इसका प्रत्येक अक्षर अपने आप में विराट शक्ति पुंज लिये हुए है। नवार्ण मंत्र से नव अक्षरों को सिद्ध करने पर नौ लाभ तुरन्त अनुभव किये जा सकते है।

गुप्त चामुण्डा तंत्र के अनुसार नवार्ण मंत्र के ये नौ अक्षर या नौ बीज तथा उनसे संबंधित फल प्राप्ति इस प्रकार से है।

१- ऐं

यह बीज नवार्ण मंत्र का पहला और सरस्वती बीज है, इसको सिद्ध करने पर स्मरण शक्ति तीव्र होती है, परीक्षा में सफलता प्राप्त होती है, सिर दर्द, बीमारियां इस बीज के निरन्तर उच्चारण करने से ठीक हो जाती है, यहीं बीज अच्छा वक्ता बनने में, वाणी के द्वारा लोगों को प्रभावित करने में पूर्ण रूप से समर्थ है।

२- ह्रीं

यह लक्ष्मी बीज है, जो कि सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है। इस बीज की साधना करने से दरिद्रता दूर होती है, और आर्थिक संबंधी रुके हुए काम ठीक हो जाते है। व्यापार बढ़ने लगता है, आर्थिक स्रोत मजबूत होते है और अनायास धन प्राप्ति के विशेष अवसर बन जाते है।

३- क्लीं

यह काली बीज है, शत्रुओं का संहार करने, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, और मन के विकारों, काम, क्रोध, लोभ, मोह, आदि पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण बीज है। काली को प्रसन्न करने और उसके प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए यह अपने आप में सिद्ध बीज है।

४- चा

यह सौभाग्य बीज है, सौभाग्य की रक्षा, पति या पत्नी की उन्नति, स्वास्थ्य और पूर्ण आयु के लिए अद्वितीय बीज है। इस बीज मंत्र से सिद्ध करके जल पिलाने से स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक अनुकूलता आने लगती है, गृहस्थ जीवन की

सफलता के लिए यह बीज मंत्र ज्यादा उपयोगी है।

५- मुं

यह आत्म मंत्र है, आत्मा की उन्नति, कुण्डलिनी जागरण, जीवन की पूर्णता और अन्त में ब्रह्म से पूर्ण साक्षात्कार के लिए यह मंत्र सर्वाधिक उपयुक्त एवं अद्वितीय है।

६- डा

यह सन्तान सुख बीज है, और भगवती जगदम्बा का सर्वाधिक प्रिय बीज है यदि पुत्र उत्पन्न न हो रहा हो या संतान बाधा हो, अथवा किसी प्रकार की पुत्र से संबंधित तकलीफ हो तो, इस बीज मंत्र की सिद्धि करने से अनुकूलता प्राप्त होती है।

७- यै

यह भाग्योदय बीज है, और मानव जीवन में इस बीज का सर्वाधिक महत्व है, यदि दुर्भाग्य साथ नहीं छोड़ रहा हो, पग पग पर बाधाएं आ रही हो, कोई काम भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहा हो तो इस मंत्र को विशेष महत्व दिया गया है।

८- वि

यह सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चता, श्रेष्ठता, और सफलता का बीज मंत्र है। पुरस्कार प्राप्त करने, समाज में सम्मान और यश प्राप्त करने, राज्य में उन्नति, और सफलता पाने के लिए यह बीज मंत्र है।

९- च्चे

यह सम्पूर्णता का बीज है, पूर्ण सफलता, स्वास्थ्य धन, परिवार यश, सुख, सौभाग्य, सन्तान, भाग्योदय इस बीज में सब कुछ समाहित है, इसीलिए इसको "बीजराज" कहा गया है।

नवार्ण मंत्र

ऐं ह्रीं क्लीं चा मुं डा यै वि च्चे

शास्त्रों में कहा गया है, कि नवार्ण मंत्र के प्रारम्भ में "ॐ प्रणव" नहीं लगाना चाहिए।

नवार्ण मंत्र सिद्धि नौ दिनों में सवा लाख मंत्र जप करने से सफलता मिलती है। इस साधना को किसी भी महीने की त्रयोदशी से प्रारम्भ कर अगले नौ दिनों

में यह नवार्ण मंत्र सिद्ध किया जा सकता है। साधना काल में साधक पीली धोती पहिन, उत्तर की ओर मुंह कर सामने भगवती जगदम्बा का चित्र स्थापित कर साधना कर सकता है। साधना के समय तेल का दीपक अखण्ड होना चाहिए।

शास्त्रों में कहा गया है कि-

वाक् चैव काम शक्तिश्चप्रणवः श्रीश्च कथ्यते तदार्थषु च मन्त्रेषु प्रणवं नैव योजयेत्॥ अर्थात जिन मंत्रों के प्रारम्भ में १- ऐं, २- क्लीं, ३- ह्रीं और ४- श्रीं अक्षर लगा हो, उन मन्त्रों के आदि में ॐ नहीं लगाना चाहिए।

नवार्ण मंत्र विनियोग

ॐ अस्य श्री नवार्ण-मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रूद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिअनुष्टुप्छ-न्दांसि, श्री महाकाली - महालक्ष्मी-महासरस्वत्यौ देवताः, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

ब्रह्म-विष्णु-रूद्र ऋषिभ्यो नमः-शिरसि। गायंत्र्युष्णिगनुष्टुपछन्दोभ्यो नमः मुखे। महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः-हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः-नाभौ।

कर न्यास

ऐं-अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं-तर्जनीभ्यां नमः। क्लीं-मध्यमाभ्यां नमः। चामुण्डायै-अनामिकाभ्यां नमः। विच्चे-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे-करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास

ऐं - हृदयाय नमः। ह्रीं-शिरसे स्वाहा। क्लीं - शिखायै वषट्। चामुण्डायै-कवचाय हुं। विच्चे-नेत्र-त्रयाय वौषट्। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे-अस्त्राय फट्।

अक्षर न्यास

ऐं नमः-शिखायां। ह्रीं नमः-दक्षिण नेत्रे। क्लीं नमः-वाम-नेत्रे। चां नमः-दक्षिण-कर्णे। मुं नमः-वाम कर्णे। डां नमः-दक्षिण-नासा-पुटे। यै नमः-वाम-नासा - पुटे। विं नमः - मुखे। च्चे नमः - गुह् ये।

नवार्ण मंत्र ध्यान

"वाग्" -बीजं हि दीप-समान-दीप्तम्। मायौ ति-तेजो द्वितीयार्क-बिम्बम्। "कामं"

च वैश्वानर-तुल्य-रूपम्। प्रतीयमानं तु सुखाय चिन्त्यम्। "चा" शुद्ध-जाम्बू-नद-तुल्य-कान्तिम्। "मुं" पंचमं रक्त-तर प्रकल्पम्। "डा" षष्टमुग्रार्ति-हरे सुनीलम्। "ये" सप्तमं कृष्ण-तरं रिपुघ्नम्। "वि" पाण्डुर चाष्टममादि-सिद्धिम्। "च्चे" धूम्र-वर्ण नवमं विशालम्। एतानि बीजानि नवात्वकस्य। जपात् प्रवध्यः सकलार्थ-सिद्धिम्।

नवार्ण मंत्र सिद्धि जीवन की श्रेष्ठ सिद्धि है, स्थूल रूप से नवार्ण मंत्र का अर्थ है, हे चित्त-स्वरूपिणी महालक्ष्मी ! हे आनन्दरूपिणी महाकालि ! पूर्णत्व प्रदान करने वाली हे महासरस्वती ! ब्रह्म - विद्या प्राप्त करने के लिए हम साधक तुम्हारा ध्यान करते है, है महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिके! आपको नमस्कार है ! आप मेरे अन्दर अविद्या रूपी रज्जु की दृढ गांठ को खोल कर मुझे सभी दृष्टियों से पूर्ण मुक्त कर दें।

खड्ग माला

नवार्ण मंत्र की सिद्धि खड्ग माला से ही सम्पन्न हो सकती है, 'गुप्त चामुण्डा तंत्र' में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि-

खड्गान विधिवत् सम्पूज्य हस्तेन च धृतेन वै।
अष्टादश-महा-द्वीपे साम्राज्य-भोक्ता भविष्यति।

अर्थात् खड्ग माला से विधिवत् पूजा, अर्चना कर उससे मंत्र जप कर उस खड्ग माला को जो साधक धारण करता है, वह अठारह द्वीप युक्त महा द्वीप का सम्राट होता है तथा पूर्ण रूप से साम्राज्य सुख को भोगने वाला होता है।

खड्ग माला से साधक उपरोक्त नवार्ण मंत्र का जप करे और उस दिन का मंत्र जप पूर्ण होने पर माला सुमेरू पर तिलक करते हुए निम्न उच्चारण करे -

ॐ अक्ष मालाधिपतये सु सिद्धिं देहि देहि सर्व-मन्त्रार्थ-साधिनि साधय साधय सर्व-सिद्धिं परि-कल्पय परि-कल्पय मे स्वाहा॥

जप समाप्ति के बाद उत्तर न्यास करे अर्थात् प्रारंभ में जिस प्रकार से कर न्यास आदि किया था, उसी प्रकार से सम्पन्न कर अंत में भगवती जगदम्बा को इस प्रकार प्रार्थना करे-

गुहयाति-गुहय-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्-प्रसादात् महेश्वरि।

उपरोक्त श्लोक को पढ़ कर हाथ में जल ले भगवती जगदम्बा के सामने जल गिराते हुए, पूर्ण सफलता की भावना करे

अथ श्रीसूक्तम्

॥श्री गणेशाय नमः॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम्॥३॥
कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥४॥
चन्द्राप्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्चबाह्या अलक्ष्मीः॥६॥
उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशुनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां (सुवर्णा हेम) पद्ममालिनीम्॥
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यांहिरण्मयीं, लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥१६॥

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥१॥

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥२॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कांन्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्॥३॥

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥४॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥५॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥६॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥७॥

अर्द्ध कायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥८॥

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥९॥

इति व्यासमुखोद् गीतं यः पठेत सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति॥१०॥

नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःखस्वप्ननाशनम्॥
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥११॥

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः॥
ताः सर्वाःप्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥१२॥

इति श्रीवेदव्यासविरचितं नवगृहस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अग्निपूजन

१-सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्रसे तीन पुष्पगुच्छोंद्वारा अग्निदेवको आसन प्रदान करे-

आसन-मन्त्र- त्वमादि: सर्वभूतानां संसारार्णवतारक:। परमज्योतीरूपस्त्वमासनं सफलीकुरु॥

प्रार्थना-मन्त्र- वैश्वानर नमस्तेऽस्तु नमस्ते हव्यवाहन। स्वागतं ते सुरश्रेष्ठ शान्ति कुरु नमोऽस्तु ते॥

पाद्य-मन्त्र- नमस्ते भगवन् देव आपोनारायणात्मक। सर्वलोकहितार्थाय पाद्यं च प्रतिगृह्यताम्॥

अर्घ्य-मन्त्र- नारायण परं धाम ज्योतिरूप सनातन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं विश्वरूप नमोऽस्तु ते॥

आचमनीय मन्त्र- जगदादित्यरूपेण प्रकाशयति य: सदा। तस्मै प्रकाशरूपाय नमस्ते जातवेदसे॥

स्नानीय मन्त्र- धनञ्जय नमस्तेऽस्तु सर्वपापप्रणाशन। स्नानीयं ते मया दत्तं सर्वकामार्थसिद्धये॥

अक्षप्रोक्षण एवं वस्त्र-मन्त्र- हुताशन महाबाहो देवदेव सनातन। शरणं ते प्रगच्छामि देहि में परमं पदम्॥

अलंकार-मन्त्र- ज्योतिषां ज्योतीरूपस्त्वमनादिनिधनाच्युत। मया दत्तमलंकारमलंकुरु नमोऽस्तु ते॥

गन्ध-मन्त्र- देवीदेवा मुदं यान्ति यस्य सम्यक्समागमात्। सर्वदोषोपशान्त्यर्थं गन्धोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्प-मन्त्र- विष्णुस्त्वं हि ब्रह्मा च ज्योतिषां गतिरीश्वर। गृहाण पुष्पं देवेश सानुलेपं जगद् भवेत्॥

धूप-मन्त्र- देवतानां पितृणां च सुखमेकं सनातनम्। धूपोऽयं देवदेवेश गृह्यतां मे धनञ्जय॥

दीप-मन्त्र- त्वमेक: सर्वभूतेषु स्थावरेषु चरेषु च। परमात्मा पराकर: प्रदीप: प्रतिगृह्यताम्॥

नैवेद्य-मन्त्र- नमोऽस्तु यज्ञपतये प्रभवे जातवेदसे। सर्वलोकहितार्थाय नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

॥ अथ होमप्रकरणम् ॥

हवन सामग्री-हवन के लिए सबसे अधिक तिल, तिल से आधे चावल, चावल से आधे जौ, जौ से आधी शक्कर और घी इतना होवे कि सब सामग्री उसमें मिल जावे। मेवा यथा शक्ति लीजिये।

सर्व प्रथम अग्नि प्रज्वलित करके ॐ आं अग्नये नम: से अग्नि पूजन पूर्ण प्रकार से करें फिर ॐ आं अग्नये नम: उर्ध्वमुखो भव से अग्निदेव को उर्ध्वमुखी होने की प्रार्थना करें। तदनन्तर ॐ आं अग्नये नम: चैतन्यो भव ते अग्नि चैतन्य होने की भावना करें फिर आहुती प्रदान करें।

अथ घृताहुति:।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा त्यजेत्॥

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम। इत्याघारौ।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम। इत्याज्यभागौ॥

ॐ भू: स्वाहा, इदमग्नये न मम।
ॐ भुव: स्वाहा, इदं वायवे न मम।
ॐ स्व: स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

एता महाव्याहृतय:।

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नम: स्वाहा इदं गुरुवे न मम।
ॐ विष्णवे स्वाहा। इदं विष्णवे न मम।
ॐ शंभवे स्वाहा। इदं शंभवे न मम।
ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै न मम।
ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। इदं सरस्वत्यै न मम।
ॐ भूम्यै स्वाहा। इदं भूम्यै न मम।
ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।
ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम।
ॐ भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय न मम।
ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय न मम।

ॐ बृहस्पतयेस्वाहा। इदं बृहस्पतये न मम।
ॐ शुक्राय स्वाहा। इदं शुक्राय न मम।
ॐ शनैश्चरायस्वाहा। इदं शनैश्चराय न मम।
ॐ भैरवाय नमः स्वाहा। इदं भैरवाय न मम।
ॐ राहवे स्वाहा। इदं राहवे न मम।
ॐ केतवे स्वाहा। इदं केतवे न मम।
ॐ व्युष्ट्यै स्वाहा। इदं व्युष्ट्यै न मम।
ॐ उग्राय स्वाहा। इदं उग्राय न मम।
ॐ शतक्रतवे स्वाहा। इदं शतक्रतवे न मम।
ॐ वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय न मम।
ॐ स्थान देवताभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ कुल देवताभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ दश दिक्पालेभ्यो नमः स्वाहा.

इसके साथ दश महाविद्याओं को उनके मंत्र द्वारा आहुति दें।

स्रुव (पात्र) में सुपारी, नारियल, घी इत्यादि लेकर पूर्णाहुति दें।

ॐ मूर्द्धानं देवोऽअरति पृथिव्या
वैश्वानरमृतआजातमग्निम्।
कविं संम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाःस्वाहा॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात पूर्णमुदच्यते।
पूर्णष्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते॥

तदुपरांत हवन कुंड की प्रदक्षिणा कर प्रणाम करें।

॥ आरती श्री जगदीश्वर जी॥

कर्पूर गौरं, करुणावतारं, संसारसारं, भुजगेन्द्रहारं।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितौ नमामि॥

ओम् जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट छिने में दूर करे॥ ॐ जय...

जो ध्यावै फल पावे, दुख बिनसे मन का। स्वामी...
सुख सम्पत्ति घर आवै कष्ट मिटे तन का। ॐ जय...

मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी। स्वामी...
तुम बिन और न दूजा, आस करुं जिसकी। ॐ जय....

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तरयामी। स्वामी...
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी। ॐ जय...

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता। स्वामी...
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता। ॐ जय...

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। स्वामी...
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति। ॐ जय...

दीनबन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकूर मेरे। स्वामी...
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा मै तेरे। ॐ जय...

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा। स्वामी...
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ॐ जय...
तन, मन, धन और जीवन सब कुछ है तेरा। स्वामी...
तेरा तुमको अर्पण क्या लागे मेरा। ॐ जय...

तुम हो आदि, अनादि, भक्तन हितकारी। स्वामी...
हम सब शरण तुम्हारी, काटो यमफांसी॥ ॐ जय...

आरती गाऊं, गाइ सुनाऊं नित दिन निजशक्ति। स्वामी...
कृपा दृष्टि प्रभु राखो निज चरणों में भक्ति॥ ॐ जय...

पार ब्रह्म परमेश्वर जी की आरती जो कोई नर गावै
ज्यारा मन शुद्ध होय जावे, ज्यारा पाप परा जावै

ज्यारा सुख सम्पति आवे, ज्यारां दुख दारिद्र जावै
ज्यारा घर लक्ष्मी आवे, वो तो भक्ति मुक्त पावे

भनत शिवानन्द स्वामी रटत भूलानन्द स्वामी
मन वंछित फल पावे। ॐ जय...

आरती श्री गुरु की

ॐ जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी,
जय जय मोह विनाशक भव बंधन हारी। ॐ जय जय जय गुरुदेव।

ब्रह्मा विष्णु, सदाशिव गुरु मूरत धारी,
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी। ॐ जय ....

जप, तप, संयम, तीरथ, दान विविध की जै,
बिन गुरु ज्ञान न होवै कोटियतन की जै। ॐ जय...

माया मोह नदी जल जीव बहे सारे,
नाम जहाज बिठा कर गुरु पल में तारे। ॐ जय...

काम, क्रोध, मद, मत्सर चोर बड़े भारी
ज्ञान खड्ग ले कर में गुरु सब संहारी । ॐ जय...

नाना पंथ जगत में निज निज गुन गावै
सबका सार बताकर गुरु मारग लावै। ॐ जय...

गुरु चरणामृत निर्मल सब पातकहारी,
वचन सुनत श्री गुरु के सब संशय हारी। ॐ जय...

तन, मन, धन सब अर्पण गुरु चरणन कीजै,
ब्रह्मानंद परमपद, मोक्ष गति लीजै। ॐ जय...

आडियो कैसेट

१. स्वामी सच्चिदानंद
२. पूज्य सच्चिदानन्द स्तवन
३. सिद्धाश्रम
४. सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
५. मैं सिद्धाश्रम में सशरीर विचरण कर सकता हूँ।
६. गुरू गति
७. गुरू हमारो गोत्र है
८. गुरू गति पार लगावे
९. गुरू मोरो जीवन प्रेम अधार
१०. गुरू पादुका पूजन
११. दुर्लभोपनिषद
१२. शिष्योपनिषद
१३. प्रेम धार तलवार की
१४. प्रेम न हाट बिकाय
१५. प्रेम पंथ अति कठिन है
१६. अकथ कहानी प्रीत की
१७. पिव बिन बुझे न प्यास
१८. सूली ऊपर सेज पिया की
१९. घूंघट के पट खोल री
२०. बिरहिन दियरा जोवे बाट
२१. काहि विधि करूं उपासना
२२. मैं खो गया तुम भी खो जाओ
२३. मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं
२४. मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं
२५. हिप्नोटिज्म रहस्य
२६. परा विज्ञान
२७. पारद विज्ञान
२८. पारदेश्वर शिवलिंग पूजन
२९. पारदेश्वरी लक्ष्मी प्रयोग
३०. लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग (तीन भाग)
३१. लक्ष्मी मेरी चेरी
३२. शिव सूत्र
३३. शिव सूत्र
३४. पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (३ भाग)
३५. कुण्डलिनी योग
३६. कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
३७. ध्यान योग
३८. क्रियायोग शिविर (६ भाग)
३९. साधना सूत्र
४०. साधना, सिद्धि एवं सफलता
४१. ध्यान, धारणा और समाधि
४२. समाधि के सात द्वार
४३. मृत्योर्मा अमृतं गमय
४४. समाधि रहस्य
४५. अणिमा सिद्धि
४६. लघिमा सिद्धि
४७. विशेष लामा मंत्र
४८. ॐ मणि पद्मे हुं
४९. चामुण्डा दीक्षा
५०. संतोपंथी दीक्षा
५१. तंत्र रहस्य
५२. मां भगवती जगदम्बे शत्-शत् वन्दन
५३. महासरस्वती स्वरूप साधना
५४. महालक्ष्मी स्वरूप साधना
५५. महाकाली स्वरूप साधना
५६. महालक्ष्मी साधना
५७. विशेष दीपावली साधना
५८. कुबेरपति शिवशक्ति साधना
५९. अक्षय पात्र साधना
६०. कायाकल्प साधना
६१. षोडश अप्सरा साधना
६२. स्वर्ण देहा अप्सरा साधना (२ भाग)
६३. महाकाली शिविर (६ भाग)
६४. ऋणहर्ता लक्ष्मी गणपति प्रयोग
६५. निखिलेश्वर महोत्सव (६ भाग)
६६. अमृत महोत्सव १९८९ (३ भाग)

६७. १०८ कुंडीय हनुमान लक्ष्मी महायज्ञ

६८. १०८ कुडीय गणेश गायत्री महायज्ञ शिविर (३ भाग)

६९. पद्म कुंडीय एवं शिविर (३ भाग)

७०. महाकुम्भ इलाहाबाद ८९ (४ भाग)

७१. शतअष्टोतरी शक्तिपीठ साधना

७२. गुरू पूर्णिमा ओंकारेश्वर (४ भाग)

७३. जन्म दिन १९९० (पांच भाग)

७४. चैत्र नवरात्रि १९९० (८ भाग)

७५. नवरात्रि अहोभाग महोत्सव (९ भाग)

७६. विश्व सद्भावना यज्ञ एवं शिविर

७७. गुरू पर्व १९९१ (४ भाग)

७८. आश्विन नवरात्रि

७९. संध्या आरती

८०. संगीत बहार (१ से ६ तक)

८१. दुर्लभ गुरू भजन (२ से १६ तक)

८२. महालक्ष्मी साधना शिविर (१९८७) एवं ब्रह्मदीक्षा बम्बई

८३. १११ कुंडीय गणेश, गायत्री, दशमहाविद्या यज्ञ एवं ब्राह्मी, माहेश्वरी, वैष्णवी दीक्षा (१९८८) बम्बई

८४. १००८ कुंडीय गणेश, गायत्री, रुद्र महायज्ञ (१९९०) एवं पूर्णेश्वरी दीक्षा बम्बई

८५. पूर्णेश्वरी दीक्षा, ब्रह्म दीक्षा, आरोग्य दीक्षा, दिव्य चेतना दीक्षा (बम्बई)

वीडियो कैसेट

१. सिद्धाश्रम

२. कुण्डलिनी

३. स्वर्णदेहा

४. लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग

५. पाशुपतास्त्रेय

६. शिव पूजन

७. महाकुम्भ ८९ (इलाहाबाद)

८. अक्षय पात्र साधना

९. मुजफ्फनगर शिविर

१०. मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं

११. अजानी पगडंडियों पर पूज्य गुरूदेव के साथ

१२. कुण्डलिनी जागरण की झलक

१३. तंत्र के गोपनीय रहस्य

१४. हिप्नोटिज्म रहस्य

१५. साधना, सिद्धि एवं सफलता

१६. मन मयूर नाचे

१७. विश्व शांति यज्ञ एवं शिविर

१८. लक्ष्मी मेरी चेरी

१९. पिय बिन बैरण काली रात

२०. मां भगवती जगदम्बे शत् शत्

२१. चैत्र नवरात्रि १९९० (२ भाग)

२२. अहोभाव महोत्सव नवरात्रि १९९०

२३. गुरू पर्व ओंकारेश्वर १९९०

२४. पद्म कुण्डी यज्ञ एवं शिविर

२५. निखिलेश्वर महोत्सव १९९०

२६. जीवन पग-पग साधना है

२७. आध्यात्मिक प्रवचन

२८. गुरू पूर्णिमा शिविर (बैंगलोर) १९९१

२९. आश्विन नवरात्रि १९९१

३०. महालक्ष्मी साधना शिविर (१९८७) एवं ब्रह्मदीक्षा बम्बई

३१. १११ कुंडीय गणेश, गायत्री, दशमहाविद्या यज्ञ एवं ब्राह्मी, माहेश्वरी, वैष्णवी दीक्षा (१९८८) बम्बई

३२. १००८ कुंडीय गणेश, गायत्री, रुद्र महायज्ञ (१९९०) एवं पूर्णेश्वरी दीक्षा बम्बई

३३. पूर्णेश्वरी दीक्षा, ब्रह्म दीक्षा, आरोग्य दीक्षा, दिव्य चेतना दीक्षा (बम्बई)

List Of Books

ज्योतिष रत्न

भारतीय ज्योतिष

ज्योतिष योग

फलित ज्योतिष

अंक ज्योतिष

हस्ताक्षर विज्ञान

सुबोध हस्तरेखा

प्रामाणिक ज्योतिष

अंक चंद्रिका

मुहूर्त ज्योतिष

हस्तरेखा रहस्य

लक्ष्मी साधना

बृहद् हस्तरेखा शास्त्र

ज्योतिष और रत्न

अमर भविष्यवाणी

ज्योतिष योग चंद्रिका

तांत्रिक सिद्धियां

प्रैक्टिकल पामिस्ट्री

इंडियन न्यूमेरोलोजी

श्मशान भैरवी

स्वर्ण तंत्रम

भारतीय अंक ज्योतिष

कुण्डली दर्पण

दसपाल दर्पण

वर्षफल ज्योतिष

अंकदीपिका

राशि ज्योतिष

अंक विद्या

स्वप्न ज्योतिष

जन्म पत्री रचना

मंत्र रहस्य

ज्योतिषके गुप्त रहस्य

तंत्र साधना

ज्योतिष और फिल्म व्यवसाय

जन्मपत्री रहस्य

ज्योतिष योग दर्पण

प्रैक्टिकल हिप्नोटिजम

इंडियन एस्ट्रालोजी

सीक्रेटस् ऑफ हैन्ड

मंत्र मर्मज्ञ



श्री गुरू-स्तव

नमस्तुभ्यं महा-मन्त्र-दायिने शिव-रूपिणे।
ब्रह्म-ज्ञान-प्रकाशाय संसार-दुःख तारिणे।१।
अति-सौम्याय विद्याय वीरायाज्ञान हारिणे।
नमस्ते कुल-नाथाय कुल-कौलिन्य-दायिने।२।
शिव-तत्व-प्रकाशाय ब्रह्म-तत्व-प्रकाशिने।
नमस्ते गुरवै तुभ्यं साधकाभय-दायिने।३।
अनाचाराचार-भाव-बोधाय भाव हेतवे।
भावाभाव-विनिर्मुक्त-मुक्ति-दात्रे नमो नमः।४।
नमस्ते शम्भवे तुभ्यं दिव्य-भाव-प्रकाशिने।
ज्ञानानन्द-स्वरूपाय विभवाय नमो नमः।५।

शिवाय शक्ति-नाथाय सच्चिदानन्द रूपिणे।
काम-रूपाय कामाय काम-केलि-कलात्मने।६।
कुल-पूजोपदेशाय कुलाचार-स्वरूपिणे।
आरक्त-निज-तच्छक्ति-वाम-भाग-विभूतये।७।
नमस्ते स्तु महेशाय नमस्ते स्तु नमो नमः।
इदं स्तोत्रं पठेन्नित्यं साधको गुरू-दिङ्मुखः।८।
प्रातरूत्थाय देवेशि, ततो विद्या प्रसीदति।
कुल-सम्भव-पूजायामादो यो न पठेदिदम्।९.
विफला तस्य पूजा स्यादभिचाराय कल्प्यते।
इतिकुब्जिका-तन्त्रे गुरू-स्तोत्रं समाप्तम्।









